॥ खण्ड - ख ॥

सप्रसंग व्याख्या करें

01. कितने क्रूर समाज में रहें है हम जहाँ श्रम का कोई मोल ही नहीं बल्कि निर्धनता को बरकरार रखने का षडयंत्र ही था ।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ जूठन शीर्षक दलित आत्मकथा से ली गई है। इस पाठ में लेखक ओम प्रकाश वाल्मीकि ने उच्च जातियों द्वारा छोटे जातियों पर हुए क्रूर अत्याचार का वर्णन किया गया है। वे कहते है कि इस समाज मे उचित श्रम का कोई मोल नही हैं बल्कि गरिवी को बरकरार रखने का साजिश है। लेखक के अनुसार उनके परिवार और उनकी जाति से समाज के लोग कड़ी मेहनत करवाते थे परन्तु उसके बदले में मेहनताने की जगह गालियाँ मिलती थी इस क्रूर समाज में मेहनत का कोई मूल्य नहीं था बल्कि ऐसा करके गरीबी को बनाए रखने का साजिश किया जा रहा था ।

02. यहाँ प्रत्येक मनुष्य किसी के विरोध में खड़ा है और किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के लिए प्रतिष्ठा सम्मान शक्ति व आराम के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ शिक्षा शीर्षक पाठ से ली गई है। इस पाठ के लेखक के कृष्णमूर्ति इन पंक्तियों के माध्यम से कहते है कि हमने ऐसे समाज का निर्माण किया है, जहाँ हर व्यक्ति एक दूसरे का विरोध और शोषण करता है। अपना वर्चस्व जमाने की होड़ लगी है। इस दुनिया में साधु, संयासी, सिपाही, वकील, नेता, व्यवसायी अपने स्वार्थपूति के लिए संघर्ष कर रहें है। अपनी ताकत पद, प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहें है।

03. आदमी यथार्थ को जीता ही नही, यथार्थ रचता भी है।

उत्तर: आदमी यथार्थ को जीता ही नहीं यथार्थ रचता भी है'' पस्तुत पंक्तियों हमारी पाठ्य पुस्तक हँसते हुए मेरा अकेलापन डायरी 'मलयज' द्वारा रचित पाठ से लिया गया है। इन पंक्तियों में लेखक ने अपने जीवन के अनुभव को तर्क के साथ बड़े ही सुन्दर शब्दों में बताया है। लेखक कहता है कि आदमी जीवन भर सत्य यानि यथार्थ पर जीता रहता है। जीवन में जो सुख-दु:ख है, जो व्यक्ति भोगता है, वही सत्य है। लेखक के अनुसार आदमी नहीं चाहते हुए भी जीता है, कारण इस दुनिया में उसे यदि जहर के घूँट मिलेगे तो उसे भी पीना पड़ेगा। संभव है जीवन में दुखों आ जाए, तो मनुष्य को उसे भी भोगना होगा।

04. व्यक्ति से नहीं हमे तो नीतियों से झगड़ा है, कार्यो से झगड़ा है।

उत्तर: व्यक्ति से नहीं हमें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धांतों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है। प्रस्तुत पंक्तियों महान समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण जी की संपूर्ण क्रांति शीर्षक से ली गई हैं। इन पंक्तियों में जयप्रकाश नारायण जी ने लोकतंत्र के प्रमुख दुश्मनों का वर्णन किया है। एक बार जयप्रकाश नारायण जी से पुलिस के एक उच्चाअधिकारी मिलने आए कहने लगे कि मैंने दीक्षित जी के मुँह से सुना है कि अगर जयप्रकाश जी न होते तो बिहार जल गया होता। यह सुनते ही नारायण जी प्रश्न करते हैं कि यदि ऐसा है तो फिर मेरे नेतृत्व में होने वाले प्रदर्शन और सभा में लोगों को आने से क्यों रोकते है,

क्या आप लोग जनता से घबराते हैं? जनता के प्रतिनिधि होकर उन्हीं के देश में उन पर प्रतिबंध लगाते हो और तुम्हें ऐसा करते हुए शर्म भी नहीं आती। अगर देश में कोई प्रजातंत्र का दुश्मन है तो वे लोग हैं जो जनता के शांतिपूर्ण कार्यक्रमों में बाधा डालतें है। उन पर लाठियों तथा गोलियाँ चलवातें है, और उनकी गिरफ्तारियाँ करवाते हैं।

05. जिस पुरूष में नारीत्व नहीं अपूर्ण है।

उत्तर: ''जिस पुरूष में नारीत्व नहीं अपूर्ण है'' यह पंक्ति रामधारी सिंह दिनकर के 'अर्द्धनारीश्वर' शीर्षक निबंध की है जिसमें नारीत्व के महत्व को सूत्र-शैली में व्यक्त किया गया है। पुरूष कठोर स्वभाव का होता है, किन्तु स्त्री के अशेष कोमलता होती है। यदि पुरूष में नारीत्व की कोमलता आ जाएँ तो उसके शील की पुरूषता की समाप्ति संभव है। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि नारीत्व को अंगीकार किये बिना कोई भी पुरूष पूर्ण पुरूष नहीं बन सकता।

06. बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित कहानी 'उसने कहा था' से लिया गया है। इस पंक्ति द्वारा लेखक ने लहनासिंह के लड़ाई के प्रति उत्साह को दर्शाया है। लहनासिंह जर्मनी के विरूध लड़ने के लिए गई भारतीय फौज में शामिल है जो युद्ध जल्द-से-जल्द शुरू हो और इस ऊब से मुक्ति मिल सके। अतः वह कहता है जिस तरह बिना दौड़े घोड़ा बिगड़ जाता है यानि काम का नहीं रहता, ठीक उसी तरह लड़ाई के बिना सैनिक भी बिगड़ जाता है।

07. मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनाएँ एक-एक करके सामने आती हैं।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित कहानी 'उसने कहा था' से लिया गया है। उपरोक्त पंक्ति द्वारा लेखक कहते है कि, मनुष्य की मृत्यु जब निकट होती है तो उसे पुरानी स्मृतियाँ स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं। उसके सामने सारे जीवन की घटनाएँ आने लगती हैं। ये समस्त घटनाएँ उसे बिल्कुल साफ दिखाई देती हैं। जैसे सब कुछ अभी घट रहा हो। लहनासिंह की भी यही स्थिति थी। उसे अपनें जीवन की समस्त घटनाएँ याद आने लगी थीं। अंत स्थिति में लहनासिंह वजीरा से पानी माँगता है और लहना अतीत की यादों में खो जाता है।

08. आप उस समय महत्वकांक्षी रहते हैं जब आप सहज प्रेम से कोई काम सिर्फ काम के लिए करते है।

उत्तर: प्रस्तुत पक्तियाँ जे० कृष्णमूर्ति द्वारा लिखित, शिक्षा-शास्त्र 'शिक्षा' से लिया गया है, महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति केवल अपने संबंध में सोचता है। अन्य लोगों की सोच को अपनी सोच के समक्ष फीका समझने के कारण वह क्रूर बन जाता है। महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति कोई कार्य प्रेम से नहीं कर सकता है बल्कि कार्य का निष्पादन आदत्तन कर पाता है। महत्त्वकांक्षा विकास में ह्रास उत्पन्न करनेवाली होती है।

09. हम नूतन विश्व के निर्माण करने की आवश्यकता महसूस करते हैं.......हम में से प्रत्येक व्यक्ति पूर्णत्या मानसिक और आध्यात्मिक क्रांती में होता हैं।

उत्तर: ''प्रस्तुत पंक्तियाँ जे० कृष्णमूर्ति द्वारा लिखित शिक्षा शास्त्र शिक्षा से लिया गया है'' आज संपूर्ण विश्व में महत्वाकांक्षा तथा प्रतिस्पर्धा के कारण अराजकता फैली हुई है। विश्व के सभी देश पतन की ओर अग्रसर हैं। इसे रोकना मानव समाज के लिए एक चुनौती है। इस चुनौती का प्रत्युत्तर पूर्णता से तभी दिया जा सकता है जब हम अभय हो हम एक हिंदू या साम्यवादी या एक पूँजीपति की भाँति न सोचे, अपितु एक समग्र मानव की भाँति इस समस्या का हल खोजने का प्रयत्न करें।

हम इस समस्या का हल तब तक नहीं खोज सकते हैं जब तक कि हम स्वयं संपूर्ण समाज के खिलाफ क्रांति नहीं करते, इस महत्वाकांक्षा के खिलाफ विद्रोह नहीं करते, जिस पर संपूर्ण मानव समाज आधारित है।

10. प्रत्येक पत्नी अपने पति को बहुत कुछ उसी दृष्टि से देखती है जिस दृष्टि से लता अपने वृक्ष को देखती है।

उत्तर: यह पंक्ति रामधारी सिंह दिनकर के 'अर्द्धनारीश्वर शीर्षक निबंध से लिय गया है।

प्रस्तुत पंक्ति में लता और वृक्ष के द्वारा पुरूष पर नारी की निर्भरता अथवा पराधीनता को व्यक्त किया गया है।

पशु-पक्षियों में भी नर और मादा दोनों पाये जाते है, किन्तु इन दोनों में कोई एक-दूसरे पर निर्भर नहीं है, न मादा नर पर और न नर मादा पर। मगर सभ्यता के विकास में स्त्री पुरूष दोनों पशु-पक्षियों से भी पिछड़ गयें हैं। जिस प्रकार लता अपने विकास के लिए वृक्ष का अवलम्ब ढूँढती है और बिना वृक्ष का अवलम्ब पाये वह विकसित नहीं हो पाती, आज ठीक यही स्थति स्त्री और पुरूष की है। आज स्त्री भी पुरूष का अवलम्ब चाहती है। वह बिना पुरूष के अवलम्ब के अपने विकास को असम्भव ही मानती है, इसीलिए वह पुरूष को उसी दृष्टि से देखती है, जिस दृष्टि से लता वृक्ष को देखती है।

11. बसुंधरा योगी मानव और धर्मांद्य मानव एक ही सिक्के के दो पहलू है?

उत्तर: यह पंक्ति जगदीश चन्द्रमाथुर के ओ सादानीरा शीर्षक से ली गयी है। इन पंक्तियों में वे मनुष्य की दृष्टिमान सिकता का वर्णन किया गया हैं। मनुष्य बड़ी निर्ममता से धरती के उपर अत्याचार कर रहा हैं। हरे-भरें जंगलों को काट रहा हो जिससे यह धरती निर्वस्त्र हो रही है। बातावरण प्रदूषित हो रहें है मनुष्य अपने सभ्यता भी एवं संस्कृतियों पर प्रहार किया है उसे क्षति पहुँचाई है इस प्रकार वसुंधरा योगी मानव दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है।

12. पंचायती राज में जैसे खो गए पंच परमेश्वर बिजली बती आ गयी कब की।

उत्तर: पस्तुत पंक्तियाँ कवि ज्ञानेन्द्रपति द्वारा रचित ''गाँव का घर'' कविता से लिया गया है।

कवि गाँव की बदलती हुई परिवेश से चिंतित है। गाँव का घर ने अपना असली रूप खो दिया है अतीत् की स्मृति बन कर रह गई है। पंचायती राज के आते ही पंच परमेश्वर लुप्त हो गए हैं। उचित न्याय देने वाला कर्णधार, अराजकता तथा अंन्याय की बलि चढ गए। दीपो तथा लालटेनों का स्थान बिजली के प्रकाश ने ले लिया है।

13. आशाओं से भरे हृदय भी भिन्न हुए हैं अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित '' जालियाँवाला बाग में वसंत'' शीर्षक कविता से लिया गया है।

प्रस्तुत संदर्भ उस समय का है जब अंग्रेजों के विरूद्ध जालियावाला बाग में आम सभा हो रही थी और अंग्रेजों ने गोलियों की बौछार कर भारतीय सपूतों को मौत के घाट उतार दिया था। कवयित्री का मन व्यथित है। वसन्त की मादकता उसे अच्छी नहीं लगती है। चारों तरफ उदासी, विवशता आदि दिखती है। अबोध बच्चें भी गोलियों के शिकार हुए थे। वसन्त के आगमन और बच्चों को दी जाने वाली श्रद्धांजलि में कवयित्री वसन्त को मौन रहने की बात कहती है। आशा के प्रतिबिम्ब वे बच्चे आज अपनी प्रकृति, परिवार आदि से दूर हो गये हैं, उनकी स्मृति शेष है।

14. जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'शमशेर बहादुर सिंह' द्वारा रचित कविता 'उषा' से लिया गया है।

यहाँ कवि प्रात: कालीन दृश्य का वर्णन किया है, प्रात:काल आकाश में जादू होता सा प्रतीत होता है, जो पूर्ण सूर्योदय के पश्चात टूट जाता है। उषा का जादू यह है कि वह अनेक रहस्यपूर्ण एवं विचित्र स्थितियाँ उत्पन्न करता है। कभी पुती प्लेट कभी पीला चौका, कभी शंख के समान आकाश तो कभी नीले जल में झिलमिलाती देह-ये सभी दृश्य जादू के समान प्रतीत होते हैं।

इस प्रकार कवि के अनुसार सूर्योदय होते ही आकाश धवल एवं स्पष्ट हो जाता है और 'उषा' का जादू समाप्त हो जाता है।

15. भाई-बहिन भूल सकतें है पिता भले ही तुम्हे भुलावे, किंतु रात-दिन की साथिन माँ, कैसे अपना मन समझावे ।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित है, सुभद्रा कुमारी चौहान के पुत्र का अचानक निधन हो जाती है, वह पुत्र-वियोग में बहुत दुखी होती हैं। वह इस कविता में कहती हैं कि इस दु:ख को कोई भला कैसे भुला सकता है। भाई-बहन भूल सकते हैं, पिता भी तुम्हें भुला सकते हैं, लेकिन रात-दिन की साथिन बनकर मैंने प्राय: सर्दी-गर्मी में तुम्हारा ख्याल रखा था, आज भला मैं तुम्हें कैसे भूल सकती हूँ। ऐसी दु:खमय स्थिति में मैं अपने आपकों कैसे यह समझाऊँ कि अब तुम कभी लौटकर नहीं आ सकोगें। इस कविता में कवयित्री ने माता की हृदयगत वेदना को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया हैं।

16. बोलने से मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है।

अथवा

सच है, जब मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित निबंध 'बातचीत' शीर्षक से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से निबंधकार ने मनुष्य के भीतर छिपी हुई प्रतिभा को रेखांकित करने का सार्थक प्रयास किया है। लेखक के अनुसार वाणी व्यक्ति के मर्म को प्रकट करती है। बोलने के बाद ही किसी व्यक्ति के गुण-दोष सामने आते हैं। मौन व्यक्ति का चीत प्रसन्न रहता है, किन्तु वक्तव्य देनेवाले आदमी का व्यक्तित्व उजागर हो जाता है। वाणी भीतरी तत्त्व को प्रकट करती है, किन्तु चुप्पी रहस्य लोक की सृष्टि करती है।

17. फौजी वहाँ लड़ने के लिए हैं, वे नहीं भाग सकते जो फौज छोड़कर भागता है, उसे गोली मार दी जाती है।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश द्वारा लिखित ''सिपाही की माँ'' शीर्षक से ली गयी हैं।

बर्मा की रिफ्यूजी लड़कियों के यह बताने पर कि वह किस प्रकार भागकर जंगल के रास्ते हिन्दुस्तान में आयी है। यह सुनकर मुन्नी के भीतर भी उत्सुकता जगती है और वह सोचती है कि उसका भाई मानक फौज से भागकर घर क्यों नहीं आ सकता। मुन्नी की इस बात पर लड़की का यह उत्तर कि फौजी वहाँ लड़ने के लिए गये हैं, वे नहीं भाग सकते। जो फौज छोड़कर भागता है, उसे गोली मार दी जाती है।

18. ॥ धनि सो पुरुख जस कीरति जासू।

फूल मरे ----पै मरे न वासू ॥

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'कड़बक' पाठ से ली गई है। कवि इस पंक्ति के माध्यम से राजा रत्नसेन और रानी पद्मावती के निधन हो जाने पर उनके यश की सराहना की है। उनका कहना है कि फूल के झड़ जाने पर भी उसकी सुगन्ध नही मरती, इसी प्रकार वही पुरूष द्यन्य हैं जिसके यश की कीर्ति विद्यमान रहती है। इस संसार में यश न तो बेचा जा सकता है और न ही खरीदा जा सकता है। महान् कार्य करने से यश अपने आप मिल जाता है और वह यश हमेशा जिंदा रहता है।

19. '' शीत न लग जाए इस भय से ''

नही गोद से जिसे उतारा

छोड़ काम-दौड़कर आई

माँ कहकर जिस समय पुकारा

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'पुत्र-वियोग' शीर्षक कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित है। इन पंक्तियों में कवयित्री अपने पुत्र की असामयिक मृत्यु से शोक संतप्त भावों को प्रकट करते हुये कहती है कि मैने अपने पुत्र को सर्दी गर्मी वरसात तथा हर दुख से बचाने का प्रयास किया था मेरे प्रिय पुत्र को सर्दी न लगे, वह बीमार न पड़े इसलिए मैने उसे गोद से जमीन पर नही उतरने दिया। उसने जब भी माँ कहते हुए मुझे आवाज लगाई, मै सारा काम-काज छोड़कर उसके पास दौड़कर आ जाती थी, ताकि उसकी हर इच्छा पूरी कर सकूँ ।

20. ''जहाँ मरूँ ज्वाला दहकती

चातको कन को तरसती

उन्ही जीवन घाटियो की

मैं सरस बरसात रे मन''

उत्तर: प्रस्तुत पक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता ''तुमुल कोलाहल कलह में '' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जहाँ मरूभूमि की ज्वाला चहकती है और चातकी जल के कण को तरसती है उन्ही जीवन की घाटियों में मै सरस बरसात वन जाती हूँ अर्थात जिनका जीवन मठस्थल की सूखी घाटी के समान दुर्गम, विषम और ज्वालामय हो गया है वहाँ चित चातकी को एक कण भी सुख का जल नही मिला तो उन्हे आशा की एक किरण मात्र मिल जाने से जीवन मे रस की वर्षा होने लगती है।

21. ''राष्ट्रगीत में भला कौन वह
भारत भाग्य विद्याता है,
फटा सुथन्ना पहने
जिसका गुन हर चरना गाता है''

उत्तरः प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'रघुवीर सहाय द्वारा रचित कविता अधिनायक से लिया गया है।

कवि इस पंक्ति के माध्यम से यह कहना चाहता है कि देश को आजादी मिले लम्बा समय बीत गया है, परन्तु आम आदमी की स्थिति ज्यों की त्यों है। कवि जब आम आदमी के प्रतिनिधि हरचरना को किसी अधिनायक का गुणगान करते हुए देखता है, तो उसे आश्चर्य होता है। वह सोचता है कि यह अधिनायक आखिर है कौन?

22. पावन की प्राचीर में रूक जला जीवन जा रहा झुक, इस झुलसते विश्व-वन की मैं कुसुम ऋतु रात रे मन!

उत्तरः प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता से लिया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जिन्हें इस अभागा मानव-जीवन ने झुलसा डाला है और जिन्हे सांसारिक अग्नि से भागने का भी कोई उपाय नहीं है ऐसे दुःख दग्ध लोगों को मैं आशारूपी वसंत की रात के समान सुख को आँचल हूँ। उनके झूलसे मन को हरा-भरा बना कर फूल सा खिला देती हूँ।

23. विकल होकर नित्य चंचल खोजती जब नींद के पल चेतना थक सी रही तब मैं मलय की बात रे मन !

उत्तरः प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता से लिया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जब दिन भर के भाग-दौड़ से मन की चंचलता के कारण का शरीर थक जाता है तो वह व्याकुल होकर आराम करना चाहता है, नींद के आगोश में जाना चाहता है, एक पल सो लेना चाहता है। जब उसकी चेतना थक जाती है, शुष्क हो जाती है ऐसी स्थिति में ह्रदय, मलय पर्वत से चलने वाली सुगंधित हवा की तरह शान्ति और विश्राम देती है। कवि का आशय है कि मन बड़ा चंचल है, वह कभी थकता नहीं है लेकिन मन से जुड़ा शरीर थक जाता है। मन की चंचलता के कारण शरीर में बेचैनी होती है, वह आराम खोजता है, ऐसी स्थिति में व्यक्ति को ह्रदय से काम लेना चाहिए।

24. बड़ा कठिन है बेटा खोकर, माँ को अपना मन समझाना !

उत्तरः प्रस्तुत पंक्तियाँ 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित है। वह पुत्र वियोग में अपना मानसिक संतुलन कुछ इस प्रकार खो देती है कि अपने बेटे को अब कभी भी उसका साथ नहीं छोड़ने को कहती है। वह कहती है कि अब अपनी माँ को इस प्रकार छोड़कर कभी मत जाना! अपने बेटे को खोकर अपने मन को समझाना बहुत कठिन काम है। इस प्रकार कवयित्री भावावेश में अपने बेटे को अपने निकट बैठा हुआ अनुभव करती है। उसके ह्रदय की संवेदना पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है जब वह कहती है।

25. आज दिशाएँ भी हँसती है, उल्लास विश्व पर छाया मेरा खोया हुआ खिलौना अब तक मेरे पास न आया।

उत्तरः प्रस्तुत पंक्तियाँ 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित है। पुत्र की असामयिक मृत्यु से शोक विह्वल माँ अपने शोक संतप्त भावों को प्रकट करते हुए कहती है कि आज जब चारों ओर खुशी का वातावरण है और सारे संसार में खुशियाँ छाई हैं, ऐसे में एक दुखी माँ के लिए ये सारी खुशियाँ बेकार हैं। मेरा पुत्र असमय मृत्यु को प्राप्त कर चुका है। मैं उसके इंतजार में दुखी बैठी हूँ। मेरा खोया पुत्र मेरे पास नहीं है।

26. भाई-बहिन भूल सकते हैं
पिता भले ही तुम्हें भुलावे
किन्तु रात-दिन की साथिन माँ
कैसे अपना मन समझावे !

उत्तरः इन पंक्तियों का अर्थ यह है कि किसी भी बच्चे के साथ उसके भाई-बहन या पिता का रिश्ता उतना गहरा नहीं होता है, जितना माँ के साथ होता है। माँ अपने बच्चे को नौ महीने तक अपने गर्भ में रखती है। गर्भ में वह बच्चे का पोषण अपने खून से करती है और प्रसोवपरांत वह अमृत-तुल्य दूध से उसको पालती है। उसकी हर आवश्यकता का ध्यान रखते हुए उसके हर दुःख को अपने ऊपर लेने का प्रयास करती है। ऐसे में अपने पुत्र से बिछड़कर वह कैसे रह सकती है। किस संबल पर वह अपने मन को सांत्वना देगी ?
अपने पुत्रशोक में वह भूल जाती है कि उसके बेटे की मृत्यु हो चुकी है तथा अब वह इससे काफी दूर जा रहा है, वह कभी नही आएगा। किन्तु पुत्रमोह में वह उसे अपने निकट पाती है तथा कभी भी उसका साथ नहीं छोड़ने का आग्रह करती है

27. शोषण का खड्ग अति घोर एक दुनिया के हिस्सों में चारों ओर जन-जन का युद्ध एक

उत्तरः प्रस्तुत पंक्तियाँ 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता गजानन माधव मुक्तिबोध द्वारा रचित है प्रस्तुत पंक्तियाँ में कवि कहना चाहता है, आज संपूर्ण विश्व के लोगों द्वारा शोषण तथा अधिकारों से वंचना के खिलाफ संघर्ष छिड़ गया है। ऐसा लगता है कि जैसे इन दो वर्गों के बीच एक युद्ध का वातावरण बन गया है। लोग अपने अधिकारों तथा शोषण के प्रति सजग तथा सचेष्ट हो उठे।

28. जो रस नंद-जसोदा बिलसत सो नहि तिहुँ भुवनियाँ।
भोजन करि नंद अचमन लीन्हौ, माँगत सूर जूठनियाँ।।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के पद से लिया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कृष्ण के बालरूप का वर्णन किया है। कवि कहता है कि बालक श्याम नन्द की गोद में बैठे भोजन कर रहे हैं। वे कुछ खाते है कुछ भूमि पर गिराते हैं। इस छवि को नंदरानी यशोदा देखकर प्रसन्न होती है। यहाँ कवि माता का पुत्र-प्रेम दिखलाते हैं कि पुत्र कुछ भी गलत करे माता को बुरा नहीं लगता बल्कि ने खुश होती हैं। बालक के क्रिया-कलाप उसे खुशी ही प्रदान करते हैं।

29. मखमल टमटम बल्लम तुरही पगड़ी छत्र चँवर के साथ तोप छड़ाकर ढोल बजाकर जय-जय कौन करता है।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ रघुवीर सहाय की कविता अधिनायक से ली गई हैं। कवि भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था पर व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष करते हुए कहतें हैं कि मखमल के वस्त्र धारण किए, टमटम पर सवार, बल्लम-तुरही आदि राजसी प्रतीकों के साथ पगड़ी धारण किए हुए सिर के ऊपर छत्र, जिसके आगे-पीछे लोग चँवर डुला रहे हैं, जो वह अपने स्वागतार्थ तोप की सलामी देते हुए, ढोल-नगाड़े बजवाकर अपनी जयकार करवा रहा है, ऐसी शानो-शौकत वाला आखिर कौन है।

30. नील नदी, आमेजन मिसौरी में वेदना से गाती हुई। बहती-बहाती हुई जिन्दगी की धारा एक, प्यार का इशारा एक क्रोध का दुधारा एक।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ ''जन जन का चेहरा एक'' र्शीषक कविता से उदधृतत है। इसके रचयिता कविवर गजानन माधव मुक्तिबोध है। कवि ने इस कविता में संसार की वर्तमान स्थिति तथा उसमें वास करने वाले लोगों की मानसिकता का अर्थात् चित्रण किया है।

31. दुनिया के हिस्सों में चारों ओर
जन-जन का युद्ध एक

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ जन जन का चेहरा एक शिर्षक कविता से उद्धित है। इसके कविवर गजानन माद्यव मुक्ति बोध है। कवि ने इस पंक्तियों के माध्यम से कहते है। की अपने अधि कारों के लिए संघर्षरत दुनिया के विभिन्न देशों के लोग एक से है। चाहे वे किसी भी स्थान के रहनेवाले हो सभी के चेहरे एक जैसे है। कवि कहता है कि विश्व के विस्तृत भूभाग में बहनेवाली गंगा, इरावती, मिनाम नदियों की धारा से निकलने तथा सुनाई देने वाला वेदनामय गीत एक जैसा है। अर्थात् इन नदियों के अंचल में रहने वाले लोगों की वेदना एक जैसी है।

असीमित लम्बी नदियों-नील, आमेजन और मिसौरी में जो प्रचंड धारा प्रवाहित हो रही है उसे देखकर लगता है कि जैसे लोगों की जिन्दगी की वेदना प्रवाहित हो रही है।

32. मिस्री दधि, माखन मिश्रित करि, मुख नावत छबि धनियाँ। आपुन खात, नंद-मुख नावत, सो छबि कहत न बनियाँ।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति सूरदास द्वारा रचित पद से ली गई है।

सूरदास कहते है कि श्रीकृष्ण नंद की गोदी में बैठकर भोजन कर रहे हैं। वे कुछ खाते हैं, कुछ धरती पर गिराते है। उनकी छवि को देखकर माँ यशोदा निहाल हो जाती हैं।

माखन, मिश्री, दही को मिलाकर मुख में डालते हैं। वे आप भी खाते हैं और नंद के मुख में भी डालते हैं। इस प्रकार जो खुशी नंद और यशोदा पा रहे है। वह तीनों लोकों में नहीं हैं।

33. इस संसार से संपृक्ति एक रचनात्मक कर्म है। इस कर्म के बिना मानवीयता अधूरी है।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ मलजय द्वारा लिखित हँसतें हुए मेंरा अकेलापन 'शोषक पाठ से ली गई है। इन पंक्तियों में लेखक ने अपने जीवन के अनुभव को तर्क के साथ बड़े ही सुन्दर शब्दों में बाँधा है।

मनुष्य का संसार से जुड़ाव एक रचनात्मक कार्य है। इसी जुड़ाव के कारण मनुष्य नई-नई रचनाएँ करता है। इस कर्म के बिना मानवीयता अधूरी है। अर्थात् मनुष्य संसार से जुड़ाव के कारण रचनात्मक कार्य करता है और जिससे उसमें मानवीयता का भाव जागृत होता है।

34. फटा सुथन्ना पहले जिसका गुनगान हरचरना गाता है।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियों रघुवीर सहाय द्वारा लिखित अधिनामक शीर्षक कविता से ली गई है। इन पंक्तियों में कवि आम आदमी का प्रतिनधि (हरचरना) के बारे में कहा है अत्यन्त गरीव तथा फटा हुआ सुथन्ना पहने हुये हरचरना के द्वारा जो राष्ट्रगान गाया जा रहा है, उस मे अधिनायक कौन है जिसे भारत देश की किस्मत को वनाने वाला कहा जा रहा है।

35. चिर विषाद विलीन मन को इस व्यथा के तिमिर वन की मैं उषा सी ज्योति रेखा, कुसुम विकसित प्रात रे मन ।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित तुमुल कालाहल कलह में शीर्षक कविता से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जब मनुष्य चिर-विषाद में विलीन होकर घुटन महसूस करने लगता है, व्यथा रूपी अन्धकार में भटकने लगता है, उस समय मैं श्रद्ध अर्थात् आशा उसके लिए सूर्य की ज्योतिपुंज के समान पथ प्रदर्शक तथा प्रस्फुटित पुष्प के समान जीवन को आनन्दित करती हूँ।

36. कि जैसे गिर गया हो गजदंतों को गँवाकर कोई हाथी ।

उत्तर: हाथी के जीवन की सबसे सुन्दर वस्तु, उसका सौन्दर्य उसके दाँत होते हैं। यदि वह दाँत उसके मुँह से अलग कर दिया जाए तो वह सौन्दर्य धूमिल पड़ जाता है। उसी प्रकार गाँव का सौन्दर्य उसकी संस्कृति, उसकी परंपरा होती है। गाँवों में लोकगीतों की जो शैली होती है उसकी जगत आर्केस्ट्रा ने ले ली है। वह गाँव की परंपरा एवं संस्कृति को नीचे ले जाती,

उसे मार देती है। जिस प्रकार हाथी के दाँत तोड़कर उसे दंतविहीन बनाकर उसका सौन्दर्य छिन लेता है तो वह सौन्दर्य विहीन बनकर कोई काम का नहीं रह जाता है, उसी तरह यदि गाँव की जो परंपरा है, संस्कृति है, उसे मार देने पर गाँव दन्तहीन हाथी की तरह ही लगता है।

37. हम तो केवल अपने समय की आवश्यकता की उपज हैं।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति भगत सिंह द्वारा लिखित एक लेख एक पत्र से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा भगत सिंह कहना चाहते है कि मैं मनुष्य विचार को जन्म देने वाला नहीं होता, अपितु परिस्थितियाँ विशेष विचारों वाले व्यक्तियों को पैदा करती हैं। अर्थात् हम तो केवल अपने समय की आवश्यकता की उपज हैं। समय ही बलवान होता है। भारत गुलाम है, आजाद हो जायगा अत: अपने रास्ते पर भारतीयों को चलकर देश को आजाद बनाना होगा। जेल की सजा या मृत्युदंड से डरना नहीं होगा।

38. कौन-कौन है जन-गण-मन-अधिनायक वह महाबली डरा हुआ मन बेमन जिसका बाजा रोज बजाता है।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'अधिनायक' कविता के कवि रघुवीर सहाय द्वारा लिखित है। कवि उन सारे अधिनायकों को ढूंढने को प्रयास करता है जिनकी स्तुति में आम आदमी अपना समय बर्बाद किया करता है। आम आदमी के लिए तो सारे महाबली राजनेता ही अधिनायक होते हैं। आम आदमी यह अच्छी तरह जानता है कि वे महाबली अपना-अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए राजनीति में आए हैं, उनसे उसका स्वार्थ सिद्ध नहीं होगा, फिर भी वह डर से उनका गुणगान किया करता है।

39. जागिए, ब्रजराज, कुँवर, कँवल-कुसुम फूले।
कुमुद-वृंद संकुचित भए, भृंग लता भलें।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सूरदास के पद से ली गई है। ये पंक्तियाँ 'सूरदास' काव्य कृति से संकलित की गई हैं। बालक कृष्ण को जगाने के लिए माँ यशोदा सुबह होने के बहुत से प्रमाण देती है। वह बहुत ही दुलार से उसे कहती है, हे ब्रजराज कुँवर, अर्थात् ब्रज के छोटे राजकुमार ! जाग जाओ, उठ जाओ । उठकर देखों-कितने सुन्दर कमल के फुल खिल गए है।

40. पूरब-पश्चिम से आते हैं
नंगे बूचे नर-कंकाल,
सिंहासन पर बैठा, उनके
तमगे कौन लगाता है।

उत्तर: कवि भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था तथा इसके कथित परिवेश भारतीय समाज में फैली अव्यवस्था, ऊँच-नीच, समानता-असमानता पर कुठाराघात और पूँजीवादी जनतंत्र की आड़ में किए जा रहे शोषण दमन और अन्यास के खिलाफ चोट करते हुए कहता है कि इस व्यवस्था में चारों दिशाओं में नंगें-बूचे नर-कंकाल फैले हुए हैं। अर्थात् चारों दिशाओं से भूख की चीत्कार सुनाई दे रही है। उनके बदन पर चीथड़े भी नहीं हैं, तो दूसरी ओर सत्ता का सुख लूटने वाले लोग शोषण का चक्र चला रहे हैं। कवि प्रश्न करता है कि ऐसे लोगों को विशिष्ट व्यक्तियों के आसन पर बैठाकर बड़े-बड़े मेडल या तमगे पहनाकर सम्मानित कौन करता है या इन्हें किसके दबाव में सम्मानित किया जाता है?

41. "चेतना थक सी रही, तब
में मलय की वात रे मना "

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित "तुमुल कोलाहल कलम में" कविता से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यय से कवि कहना चाहता है कि व्याकुल होकर मन जब थककर चंचल चेतना शून्य में पहुँचकर नींद की आगोश में जाना चाहता है, ऐसे विषादपूर्ण समय में मैं चन्दन के सुगन्ध से सुवासित हवा बनकर चंचलमन को सांत्वना तथा आनंद प्रदान करता हूँ ।

42. एक कलाकार के लिए यह निहायत जरूरी है कि उसमें 'आग' हो और वह खुद 'ठंडा' हो ।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति मलयज लिखित 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' शीर्षक डायरी से ली गयी है । प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक का कहना है कि एक कलाकार के लिए बहुत जरूरी है कि उसमें 'आग' हो अर्थात् वह अपने कर्म के प्रति संवेदनशील ही चाहे उसका व्यक्तित्व ठंडा ही क्यों न हो ।

43. जैसे जब मेरी फीस की बात आई थी, उस समय हमारे पास का आखिरी गिलास भी गुम हो गया था और सब लोग लोटे में पानी पीते थे ।

उत्तर– प्रस्तुत पंक्ति उदय प्रकाश लिखित तिरिछ शीर्षक कहानाी से ली गई है । यह पंक्ति लेखक की आर्थिक समस्याओं को उठाता है, जै की हमारे समाज में होता है कि घर की सारी समस्याओं को उठाता है । जैसा कि घर की सारी समस्याओं का निपटारा घर के मुखिया पिताजी द्वारा ही होता है । आर्थिक कमी को ही व्यंजित करती है साथ ही गिलास के गुम होने पर लोटे में पानी पीना आर्थिक तंगी का ही बयान करता है ।

44. कैसी है चंपारण की यह भूमि ? मानो विस्मृति के हाथों अपनी बड़ी से बड़ी निधियों को सौपने के लिए प्रस्तुत करती हैं ।

उत्तर–प्रस्तुत पंक्तियाँ जगदीश चन्द्र माथुर रचित 'ओ सदानीरा' शीर्षक यात्रा-संस्मरण से ली गयी है । इन पंक्तियों के माध्यम से चम्पारण की गौरवशाली भूमि का गुणगान किया गया है चम्पारण की यह भूमि महान है । यहाँ अनेक आक्रमणकारी तथा बाहरी व्यक्ति आए उन्होंने या तो इस पावन भूमि को क्षति पहुँचाई या आकर बस गए किन्तु धन्य है उसकी सहनशीलता एवं उदारता । उसने इन सबको भुला दिया, क्षमा कर दिया ।

45. आश्चर्य था कि इतने लंबे अर्से से उसके अड्डे को इतनी अच्छी तरह से जानने के बावजूद कभी दिन में आकर मैने उसे मारने की कोई कोशिश नहीं की थी ।

उत्तर–प्रस्तुत पंक्ति उदय प्रकाश लिखित तिरिछ शीर्षक कहानी से ली गयी है । यह पंक्ति लेखक अपने साथ घटित घटनाओं द्वारा उत्पन्न डर पर आश्चर्य करता है । लेखक को सपने में तिरिछ को ढूँढने इस जगह पर पहुँचता है । जहाँ वह रहता था, तो उसे याद आता है कि

यह वही जगह है जिसे वह कई दिनों से अपने सपनों में देखते आया है।

46. फिर भी कोई कुछ न कर सका
छिन ही गया खिलौना मेरा
मैं असहाय विवश बैठी ही
रही उठ गया छौना मेरा।

उत्तर– प्रस्तुत पंक्तियों सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता से ली गयी है।

इन पंक्तियों में कवियित्री के अंदर की पीड़ा मुखरित हुई है। कवयित्री का कहना है कि पूरी सावधानी के बावजूद उसका खिलौना छिन गया। वह असहाय हो गयी, कुछ न कर सकी। उसकी सलामती के लिए पूजा-अर्चना करते हमें देवताओं के सम्मुख सिर झुककर दुआएँ भी माँगी, पर मृत्यु के आगे कोई कुछ वही कर सका है।

47. पत्नी याद दिलाएगी
जैसे समझाएगी विटिया को
'बाल्टी सामने कुएँ मे लगी
लोहे की घिर्री ....

उत्तर– प्रस्तुत पंक्तियाँ विनोद कुमार शुक्ल द्वारा रचित कविता 'प्यारे नन्हें बेटे को' से लिया गया है। उस पंक्ति में माध्यम से कवि ये बताना चाहते है कि नन्ही बिटिया की माँ उसे समझाती हुई कहेगी कि पानी लाने की बाल्टी, सामने कुएँ पर लगी घिरनी, छाते की काड़ी-डंडी और घमेला घर में काम आने वाला हँसिया, चाकू सभी में लोहा ही है। इसके आलावा भिलाई ओर बलडिला में जगह-जेगह लोहे के टीले देखे जा सकते है।

48. भगति विमुख जे धर्म सो सत अधर्म करि गाए।

उत्तर– कबीर दास जी कहते है कि भक्ति के विमुख जितने भी धर्म है उन सबको अधर्म कहा जाना चाहिए अर्थात् भगवद् भक्ति ही श्रेष्ठ है इसके अलावा सब व्यर्थ है।

49. फिर भी रोता ही रहता है
नहीं मानता है मन मेरा
बड़ा जटिल नीरस लगता है
सूना सूना जीवन मेरा।

उत्तर– प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित पुत्र वियोग शीर्षक कविता से ली गयी है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री ने अपने पुत्र की आकस्मिक मृत्यु उपरांत पुत्र विछोह की ज्वाला से दग्ध अपने मन की मर्मस्पर्शी पीड़ा को व्यक्त किया है। कवयित्री का मन रोता ही रहता है। उसमें शान्ति नहीं है। उसे अपना जीवन नीरस और सूना-सूना सा लगता है।

पत्रलेखन

01. प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए अपने प्रद्यानाचार्य को एक प्रार्थना पत्र लिखें।

सेवा में,
प्राचार्य महोदय
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
XYZ

विषय : महाविद्यालय परित्याग प्रमाण-पत्र हेतु।

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं इंटर कक्षा में उत्तीर्ण हो गया हूँ बी० ए० की पढ़ाई हेतु मैं मगध विश्वविद्यालय बोधगया जाना चाहता हूँ।

अत: आपसे अनुरोध है कि मुझे महाविद्यालय परित्याग प्रमाण पत्र प्रदान करने की कृपा की जाए। इसके लिए में आपका सदा आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र
XYZ

तिथि : 20.02.2019 आई०एस-सी०

02. परीक्षा की तैयारी के वारे में बतलाते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखें।

राजेन्द्र नगर, 8000020
14 मार्च, 2019

प्रिय मित्र XYZ

नमस्कार।

तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि घर पर सभी आनंद हैं। मैं सकुशल हूँ और बोर्ड परीक्षा की तैयारी में जी-जान से जुटा हूँ।

प्रिय मित्र प्राक् परीक्षा में मुझे अंग्रेजी को छोड़ सभी विषयों में बहुत अच्छे अंक प्राप्त हुए है। फिर भी मैं और अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए परिश्रम कर रहा हूँ। अंग्रेजी सुधरने में शिक्षक मेरी खूब मदद कर रहें है। वे संध्या के समय मुझे बुलाकर अंग्रेजी सुधारने में लगे हुए है। वे व्याकरण की बारीकियाँ समझातें है। इस अवधि में मेरी भाषा में सुधार हुआ है और आशा करता हूँ कि मैं अंग्रेजी में भी अबकी सबसे बाजी मार लूँगा। इस प्रकार आशा है कि बोर्ड परीक्षा में 96% अंक कम से कम प्राप्त होगा। मैं चाहता हूँ कि मैं सबकी अपेक्षाओं के अनुरूप अपने को साबित करूँ।

चाचाजी एवं चाची जी को मेरा सादर प्रणाम और बच्चों को बहुत-बहुत प्यार।

तुम्हारा मित्र
XYZ

03. अपनी बहन के वैवाहिक कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए अपने मित्र को पत्र लिखें ।

प्रिय मित्र

सप्रेम नमस्कार

आशा है तुम सकुशल होगे। तुम्हारा परिवार भी कुशलतापूर्वक जीवनयापान कर रहा होगा। विशेष समाचार यह है कि मेरी बड़ी बहन का विवाह सुनिश्चित हो गया है। आशा है कि तुम मेरी बहन के वैवाहिक कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए अवश्य आकर यहाँ की शोभा बढ़ाओगें। साथ ही वैवाहिक कार्यक्रम में अपनी भागीदारी निभाकर मुझे कृतार्थ करोगें।

तुम्हारे आगमन की आशा में।

तुम्हारा मित्र

XYZ

04. जुर्माना माफ कराने के लिए अपने महाविद्यालय के प्रद्यानाचार्य को आवेदन पत्र लिखें ।

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीयकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

XYZ

विषय : शिक्षण-शुल्क माफ, हेतु।

महाशय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आशुतोष कुमार आपके विद्यालय का एक निर्धन छात्र हूँ। मेरी पारिवारिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। पिताजी एक साधारण किसान है। वे किसी तरह परिवार का भरण पोषण करते हैं। अल्प आय में भरण-पोषण के साथ शिक्षा का भार भी उन्हें वहन करना पड़ता है। इस स्थिति में विद्यालय का शिक्षण शुल्क देने में असमर्थ हूँ। मेरा शैक्षणिक स्तर हमेशा उत्तर रहा है। मैं विद्यालय स्तर पर आयोजित परीक्षाओं में हमेशा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होता हूँ।

अत: आपसे अनुरोध है कि मेरा शिक्षण शुल्क माफ करने की कृपा प्रदान करें ताकि मेरा अध्ययन नियमित रूप से जारी रह सकें। इसके लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र

XYZ

06. अपने प्रधानाचार्य को आवेदन लिखते हुए यह निवेदन करें कि पुस्तकालय में हिन्दी की पत्रिकाएँ मँगवायी जाएँ

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय XYZ,

विषय : पुस्तकालय में हिन्दी की पत्रिकाएँ मँगवाने हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि पुस्तकालय में हिन्दी की पत्रिकाएँ नहीं आती हैं। इसलिए हिन्दी भाषी पत्रों को असुविधा महसूस हो रही है।

अत: आग्राह है कि हिन्दी की पत्रिकाएँ भी मँगवाने का आदेश प्रदान करें।

आपका विश्वासी छात्र

रोहित कुमार

07. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य से बीमारी के कारण अवकाश प्रदान करने हेतु प्रार्थना पत्र लिखिए।

प्रति,

प्रधानाचार्य,

केंद्रीय विद्यालय,

XYZ।

विषय- बीमारी के कारण अवकाश हेतु।

मान्यवर,

सविनय निवेदन यह है कि मुझे कल अकस्मात ज्वर हो गया था और अभी तक मुझे राहत नहीं मिली है। डॉक्टर ने मुझे पूर्ण विश्राम लेने की सलाह दी है। इसलिए मै दो दिन स्कूल में नहीं आ सकती। कृपया मुझे दो दिन का अवकाश देने की कृपा करें।

धन्यवाद,

आपकी आज्ञाकारी शिष्या,

XYZ

कक्षा XYZ दिनांक:...................

निम्नांकित प्रश्न में से किन्हीं पाँच के उत्तर दें :

01. मानक स्वंय को वहशी और जानवर से भी बढकर क्यों कहता है?

उत्तर: सिपाही की माँ शीर्षक एकांकी में मानक एक फौजी है। वह युद्ध की त्रासदी को झेलते-झेलते मानवीयता जैसे भावों को भूल चुका है और दुश्मन सिपाही को सिर्फ मारता ही नहीं अपितु उसके टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहता है। इस तरह की भावना एक वहशी और जानवर ही रख सकता है।

02. 'उसने कहाँ था' कहानी का केन्द्रीय भाव क्या है ?

उत्तर: उसने कहा था कहानी का केंद्रीय भाव प्रेम की अनुभूति और उसकी पवित्र रूप का वर्णन किया गया है जिसे सहजता से प्राप्त नही किया जा सकता इसमें गुलेरी जी ने लहना सिंह और सूबेदारनी के माध्यम से मानवीय प्रेम का नया रूप प्रस्तुत किया है।

03. तुलसी सीता से कैसी सहायता चाहते हैं?

उत्तर: तुलसी सीता से कहते है कि आप उचित अवसर पाकर मेरी याद श्री राम को दिलाने की कृपा करें यदि ऐसा हो जाए तो मेरी नैया भवसागर से पार उतर जाएगी।

04. हरचरना कौन है ? उसकी क्या पहचान है ?

उत्तर: हरचरना अधिनायक शीर्षक कविता में आम आदमी का प्रतिनिधि है। वह ढीला-ढाला पाजामा पहने राष्ट्रीय त्योहारके दिन झंण्डा फहराए जाने के जलसे में सम्मिलित होकर अधि नायक का गुणगान करता है इसकी पहचान फटे सुथन्ने पहने एक आम आदमी के रूप में है।

05. बातचीत के संबंध में बेन जानसन और एडीसन के क्या विचार है?

उत्तर: बेन जानसन के अनुसार बोलने से मनुष्य के रूप का साक्षात्कार जबकि एडीसन के अनुसार जब दो व्यक्ति होते है तभी अपने दिल एक-दूसरे के सामने खोलते है।

06. विद्यार्थियों से भगत सिंह की उपेक्षा क्या थी ?

उत्तर: भगत सिंह विद्यार्थियों से चाहते थे कि विद्यार्थी राजनीति तथा देश की परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करें और उनके सुधार के उपाय सोचने की योग्यता पैदा करे। और देश की सेवा में तन-मन-धन से जुट जाएँ और अपने प्राण न्योछावर करने से भी पीछे न हटें।

07. थारूओं की कला का परिचय पठित पाठ के आधार पर दे।

उत्तर: थारूओं के उद्‌भव के विषय में अनेक राय हैं। ये लोग अपने को आदिवासी नहीं मानतें। थारू शब्द का अर्थ-थार (राजस्थान) से आए लोग के रूप में मानते हैं। ये अत्यन्त कलाप्रेमी होते है। चित्रकारी का आदर्श नमूना इसकी प्रत्येक वस्तुओं में देखा जा सकता है।

08. बिशनी और मुन्नी को किसकी प्रतीक्षा है, वे डाकिए की राह क्यों देखती हैं?

उत्तर: बिशनी और मुन्नी को अपने घर के इकलौते बेटे मानक की प्रतीक्षा है। वे उसकी चिट्ठी आने के इंतजार में डाँकिए की राह देखती है।

09. बिशनी मानक को लड़ाई में क्यों भेजती है ?

उत्तर: बिशनी के घर की हालत बहुत खराब है। उसे अपनी बेटी का ब्याह भी करना है। इसलिए वह मानक को लड़ाई में भेजती है।

10. स्त्री को अहेरिन नागिन और जादूगरनी कहने के पीछे क्या मंश होती है ?

उत्तर: स्त्रियों की उपेक्षा करते हुए बनईशॉ ने नारी को अहेरिन और नर को अहेरा माना है। अर्थात नारी शिकार करना जानती है और उसका शिकार पुरुष है। उनका मानना है कि अहेर (पुरुष) को अहेरिन (महिला) से बचा कर रहना चाहिए। इतना ही नहीं नागिन या जादूगरनी मानने का बात है, ये सब झूठ वाते है। समाज में उनका भी बराबर का स्थान है।

11. दुसरे पद में तुलसी ने दीनता और दरिद्रता का प्रयोग क्यो किया है?

उत्तर: दूसरे पद में तुलसी ने अपना परिचय गिड़गिड़ाकर भीख माँगते भिखारी के रूप में दिया है। वे राम से कह रहे हैं कि हे श्रीराम! मैं सुबह से आपके द्वार पर बैठा भीख माँग रहा हूँ। मैं भीख में बहुत कुछ पाने की हठ नहीं कर रहा हूँ, अपितु आपकी अनुकम्पा का एक टुकड़ा ही पाना चाहता हूँ।

12. छत्रसाल की तलवार कैसी है ?

उत्तर: महराजा छत्रसाल की तलवार सूर्य की किरणों के समान प्रखर और प्रचण्ड है। उनकी तलवार की भयंकरता से शत्रु दल थर्रा उठता है। छत्रसाल की तलवार ऐसी नागिन की तरह है जो शत्रओं के गले में लिपट जाती है और मुण्डों की भीड़ लगा देती है, लगता है कि रूद्रदेव को रिझाने के लिए ऐसा कर रही है।

13. कवयित्री का खिलौना क्या है ?

उत्तर: कवयित्री का 'खिलौना' उसका खोया हुआ पुत्र है, जो अकाल ही काल-कवलित हो गया था। कवयित्री का खिलौना उसका बेटा है। बच्चों को खिलौना जिस प्रकार प्रिय होता है, उसी प्रकार से ठीक माँ के लिए उसका बेटा उसके जीवन का सर्वोतम उपहार होता है। इसलिए वह कवयित्री का खिलौना है।

14. उषा कविता में आकाश के बदलते रंगों का वर्णन करें।

उत्तर: प्रात: काल का नभ पवित्र, निर्मल और उज्ज्वल था। उसका रंग अत्यधिक नीला था और वह शंख जैसा प्रतीत हो रहा था। उस समय नभ देखने में ऐसा लग रहा था जैसे लीपा हुआ चौका हो। पूरब में बिखरी सूर्योदय के पहले की लालिमा के कारण नभ ऐसा लग रहा था मानो किसी ने काली सिल को लाल केसर से धो दिया हो।

15. लहना सिंह ने बोधा के प्रति किस त्याग का परिचय दिया था ?

उत्तर: लहना सिंह बोधा के प्रति सहानुभूति तथा दयालुपन का परिचय दिया है। इसीलिए वह भीषण सर्दी में भी अपने कंबल और जर्सी बीमार बोधासिंह को दे देता है। और उसके प्रति विशुद्ध प्रेम त्याग एव बलिदान का परिचय देता है।

16. जयप्रकाश नारायण किस प्रकार का नेतृत्व देना चाहते थे ?

उत्तर: आंदोलन के नेतृत्व के संबंध में जयप्रकाश नारायण के विचार थे कि मुझे नाम के लिए नेता नहीं बनना है। यदि मुझे सामने खड़ा करके कोई पीछे से बताए कि मुझे क्या करना है तो मै इस नेतृत्व को तभी छोड़ देना चाहूँगा।

17. भगत सिंह के अनुसार देश को कैसे युवकों की आवश्यकता है ?

उत्तर: भगत सिंह के अनुसार देश को कर्मठ और बलिदानी युवकों की आवश्यकता है जो देश के लिए अपने-आप को न्योछावर कर दे।

18. नामवर सिंह किन कविताओं को श्रेष्ठ मानते हैं ?

उत्तर: नामवर सिंह जीवन जगत और प्रकृति के रूप रंगों से युक्त कविताओं को श्रेष्ठ मानते है।

19. तुलसी ने 'अम्ब' कहकर किसकी संबोधित किया है और क्यों ?

उत्तर: तुलसी ने 'अम्ब' कहकर माँ सीता को संबोधित किया है। अम्ब शब्द सीता जी के लिए तुलसी दास द्वारा सम्मान प्रदर्शित करने के लिए किया गया है।

20. नागादास ने छप्पय में कबीर की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

***अथवा,* कबीर विषयक छप्पय में नाभादास ने कबीर के बारे में क्या कहा है ?**

उत्तर: नाभादास ने कबीर के बारे में निम्नलिखित विशेष बातें कही है।

(1) कबीर की मति अति गंभीर और अंत:करण भक्ति रस से सरस था।

(2) वे जाति-पाँति एवं वर्णाश्रम का खंडन करते थे।

(3) कबीर ने केवल भगवद्भक्ति को ही श्रेष्ठ माना है।

(4) भगवद्भक्ति के अतिरिक्त जितने धर्म हैं, उन सबको कबीर ने अधर्म कहा है।

(5) सच्चे हृद्य से सप्रेम भजन के बिना तप, योग, यज्ञ, दान, व्रत सभी को कबीर ने तुच्छ बताया।

(6) कबीर ने हिन्दू, मुसलमान दोनों को प्रमाण तथा सिद्धान्त की बातें सुनाई है।

21. हरिचरण को हरिचरना क्यों कहा गया हैं ?

उत्तर: 'हरिचरण' के स्थान पर 'हरचरना' कवि ने जानबूझकर के किया है। 'हरचरना' के प्रयोग में उपचार वक्रता है जो एक विशिष्ट अर्थ देता है। आजादी प्राप्त होने के दो दशक बीत जाने के बाद भी आम आदमी की दशा में कोई सुधार नहीं हुई है। हरिचरण' के बिगड़ते हुए रूप (तद्भव रूप) हरचरना' का प्रयोग किया है। 'हरचरना' में सत्ताधारी वर्ग की उपेक्षा की भी व्यंजना है। 'हरिचरण' से सामान्य तद्भव रूप 'हरचरन' होता है, लेकिन कवि ने 'हरचरना' का प्रयोग किया है। यह शब्द सत्ताधारी वर्ग द्वारा आम जनता की उपेक्षा का सूचक है।

22. जीवन क्या है? इसका परिचय लेखक ने किस रूप में दिया है?

उत्तर: जीवन बड़ा अद्भुत है, असीम और अगाध है। यह अनन्त रहस्यों से युक्त एक विशाल साम्राज्य है जिसमें मानव कर्म करते हैं। दलविहीन लोकतंत्र और साम्यवाद के बीच के संबंध के वारे में लेखक कहते है कि दलविहीन लोकतंत्र मार्क्सवाद तथा लेनिनवाद के मूल उद्देश्यों में से है, यद्यपि यह उद्देश्य काफी दूर है। मार्क्सवाद के अनुसार समाज जैस-जैसे साम्यवाद की ओर बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे राज्य-स्टेट का क्षय होता जाएगा और अंत में एक स्टेटलेस सोसाइटी कायम होगी। वह समाज अवश्य ही लोकतांत्रिक होगा, बल्कि उसी समाज में लोकतंत्र का सच्चा स्वरूप प्रकट होगा और वह लोकतंत्र निश्चय ही दलविहीन होगा।

23. रामधारी सिंह दिनकर का निधन कहाँ और किन परिस्थितियों में हुआ ?

उत्तर: रामधारी सिंह दिनकर का निधन 24 अप्रैल, 1974 को हुआ था। उनकी मृत्यु 65 वर्ष की उम्र में हुई थी। अपने अंतिम दिनों में वे अवसाद से पीड़ित थे। वे तिरूपति बालाजी गये थे और वहाँ उन्होने मृत्यु की कामना की थी और अपनी कविता 'रश्मिरथी' का पाठ ईश्वर के समुख कर अपनी मृत्यु की कामना की थी। उन्होंने मद्रास में आखिरी साँस ली थी।

24. मालती के घर का वातावरण आपकों कैसा लगा ? अपने शब्दों में लिखे।

उत्तर: मालती के घर का वातावरण उदासी की कहानी बताती है। जहाँ घर में रहने वाले लोग एक निश्चित दर्रे पर आधारित जीवन जी रहें थे। उनके जीवन में परिवर्तन नाम की कोई चीज नहीं थी। इसी कारण उनमें प्रेम, सहानुभूति कर्त्तव्यबोध जैसे भाव न थे। मालती तो काम करते हुए तथा हर घंटे समय देखते-देखते अपना दिन काट देती थी।

25. चंपारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता बढ़ने के क्या कारण है ?

उत्तर: चंपारण क्षेत्र में बाढ़ का प्रमुख कारण जंगलों का काटना है। वन के वृक्ष जलराशि को अपनी जड़ों में थामे रहते हैं। नदियों को उन्मुक्त नवयौवना बनने से बचाते हैं। उत्ताल वृक्ष नदी की धाराओं की गति को भी संतुलित करने का काम करते हैं। यदि जलराशि नदी की सीमाओं से ज्यादा हो जाती है, तब बाढ़ आती ही है, लेकिन जब बीच में उनकी शक्तियों को ललकारने वाले ये गगनचुम्बी वन न हों तब नदियाँ कालिका रूप धारण कर लेती हैं। वृक्ष उस प्रचंडिका को रोकने वाले हैं। आज चंपारण में वृक्ष को काट कर कृषियुक्त समतल भूमि बना दी गई है। अब उन्मुक्त नवयौवना को रोकने वाला कोई न रहा, इसलिए अपनी ताकत का अहसास कराती हैं। लगता है मानव के कर्मों पर अट्टाहास करने के लिए, उसे दंड देने के लिए नदी में भयानक बाढ़ आते हैं।

26. बँधी हुई मुट्ठियों का क्या लक्ष्य है ?

उत्तर: बँधी मुट्ठियों के लक्ष्य के माध्यम से कवि जनता की ताकत का एहसास कराना चाहता है। इन में इतनी शक्ति है कि वे जन-शोषक की सत्ता के लिए काल बन सकती है। यह ताकत जब अपना रौद्र रूप धारण करती है तो अपनी ज्वाला में सब कुछ जला देती है। बंद मुट्ठियों की इस ताकत से जन-शोषक को टकराने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए।

27. शिवाजी की तुलना भूषण ने मृगराज से क्यो की है ?

उत्तर: शिवाजी की तुलना भूषण ने इन्द्र, समुद्राग्नि, भगवान राम, वायु, शिवाजी, परशुराम, दावग्नि, चीता, बाघ (सिह), तेज (प्रकाश) तथा कृष्ण से की है।

शिवाजी की तुलना भूषण ने मृगराज से इसलिए की है क्योंकि पशुओं के राजा शेर पूरे जंगल का राजा होता है। सभी पशु उसकी एक दहाड़ से कॉप उठते हैं। वह बहुत बलशाली होता है। ऐसे ही शिवाजी शेर की भाँति बलशाली और पराक्रमी हैं।

28. कबीर ने भक्ति को कितना महत्व दिया है ?

उत्तर: कबीर जाति-पाँति के भेदभाव से ऊपर उठकर केवल शुद्ध अन्त: करण से की गई भक्ति को ही श्रेष्ठ माने है कबीर जाति-पाँति वणश्रिम आदि साधारण धर्मो का आदर नहीं किये है।

29. कबहुँह अब अवसर पाई। यहाँ अब सम्बोधन किसके लिए है ?

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति तुलसीदास के 'पद' से लिया गया है प्रस्तुत पंक्ति में 'अंब' का संबोधन माँ सीता के लिए किया गया है।

30. आर्ट ऑफ कनवरसेशन क्या है ?

उत्तर: आर्ट ऑफ कनवरसेशन का अर्थ है वोलने की कला इसकी पूर्ण शोभा काव्य कला प्रवीण बुद्धिमता का उजागर करती है।

31. दो हमजोली सहेलियों की बातचीत मे क्या स्थिति होती है ?

उत्तर: दो हमजोली सहेलियों की बातचीत में गहरें अपनापन झलकती है। दोनों अपने अपने मन की बातों को खुलकर बिना संकोच के एक दूसरे से कह डालती है ?

32. फिरंगी मेम की बाग में क्या-क्या था ?

उत्तर: फिरंगी मेम के बाग में मखमल जैसी हरी-हरी घास थी ।

33. रोज कहानी की मालती ने किताव का क्या किया था ?

उत्तर: रोज कहानी में मालती किताब का पढा नहीं था केवल रोज दो दस पन्ने बीस पनों फाड़कर फेक दिया था।

34. लपटन साहब (उसने कहा था' कहानी का पात्र) की जेव से क्या बरामद हुआ था ?

उत्तर: लपटन साहेब की जेब से वेल के बराबर तीन गोले बरामद हआ था।

35. जय प्रकाश नारायण की पत्नी का क्या नाम था ? वे किसकी पुत्री थी ?

उत्तर: जय प्रकाश नारायण की पत्नी का नाम प्रभावती था, वे व्रजकिशोर प्रसाद की पुत्री थी।

36. जायसी की दो रचनाओं के नाम लिखे।

उत्तर: जायसी की दो प्रमुख रचनाएँ निम्न है।

(1) पद्मावत (2) अखरावट

37. ब्रजभाषा के प्रारंभिक कवि कौन हैं ?

उत्तर: ब्रजभाषा के प्रारंभिक कवि सूरदास और तुलसीदास है।

38. हिन्दी का श्रेष्ठतम महाकाव्य कौन सा है ?

उत्तर: जयशंकर प्रसाद रचित 'कामायनी' हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है ।

39. जयशंकर प्रसाद किस काव्य-धारा के कवि माने जाते है?

उत्तर: जयशंकर प्रसाद छायावाद काव्य-धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते है।

40. राष्ट्रीय पर्व पर किसका गुणगाण गाया जाता है ?

उत्तर: राष्ट्रीय पर्व पर भारतमान यानि राष्ट्र का गुणगाण गाया जाता है।

41. अशोक वाजपेयी रचित हारजीत कविता का केन्द्रीय भाव क्या है ?

उत्तर: हारजीत कविता में कवि ने देश की समस्याओं का उजागर किया है। वह इसके माध्यय से शासक वर्ग और राजनीति के मुखौटे का पर्दाफाश करते हुये कहा है की विजय किसकी हुई है सेना की शासक की या नागरिकों की भारत की जनता अंधविश्वासों और अफवाहों में जी रही है। वास्तव में लोकतंत्र की संस्थापक सता-जनता की हार हुई है।

42. प्रगीत क्या है ?

उत्तर: प्रगीत का अर्थ एकांत संगीत जिसे अकेले बैठकर गाया जाता है।

43. डायरी क्या हैं ? लेखक को अनुसार सुरक्षा कहाँ है ?

उत्तर: डायरी किसी व्यक्ति द्वारा लिखित असके महत्वपूर्ण दैनिक अनुभवों का ब्यौरा है जैसे वह बड़ी सच्चाई के साथ लिखता है लेखक के अनुसार सुरक्षा डायरी में नही बल्कि सूरज के पूर्ण प्रकाश में है। भागने में कही बल्कि संघर्ष में है।

44. प्रातः काल का नभ कैसा था ?

उत्तर: प्रातः काल का नभ श्यामलता श्वेतिमा तथा लालिमा का सुन्दर मिश्रण था ?

45. उषा का जादू कैसा है ?

उत्तर: उषा का जादू बड़ा ही मनमोहक है जो अपनी जादुई शक्ति से अपने वश में कर लिया है।

46. वोद्या सिंह कौन है ?

उत्तर: वोद्या सिंह हजारा सिंह का पुत्र था जो अपने पिता की तरहही फौज में भर्ती था ।

47. गंगा पर पुल बनाने में अंग्रेज ने क्यों दिलचस्पी नही ली ?

उत्तर: गंगा पर पुल बनाने में अंग्रेजों ने इसलिए दिलचस्पी नहीं ली ताकि दक्षिण बिहार के बागी विचारों का असर चम्पारण में देर से पहुँचे। इस तरह चंपारण पर बरसों तक ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया वाला शासन चलता रहा।

48. उत्सव कौन और क्यों माना रहें हैं ?

उत्तर: उत्सव शहर के नागरिक मना रहें हैं क्योकि उन्हें बताया गया है कि शासक की सेना और रथ विजय प्राप्त करके लौट रहे है।

49. डायरी का लिखा जाना क्यों मुश्किल है ?

उत्तर: डायरी लिखना एक मुश्किल कार्य है क्योकि इसमें सभी वातों को सच्चाई के साथ लिखना पड़ता है। इसमें सभी घटनाओं को सही-सही वर्णन करना पड़ता है।

50. उत्सव का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर: उत्सव का तात्पर्य है, 'खुशी' इसमें लोग नये वस्त्र और अच्छे भोजन ग्रहण करते है।

51. सड़कों को क्यों सीचा जा रहा है ?

उत्तर: नेताओं के स्वगात में सड़कों को सींचा जाता हैं ताकि वे घूल से परेशान न हों।

52. कड़बक के कवि की सोच क्या है ?

उत्तर: कवि ने इस पाढ के विभिन्न प्रसंगों को एक सूत्र में बाँधा है। इस काव्य को जिसने भी सुना है उसी को प्रेम की पीड़ा का अनुभव हुआ है। मैंने इस कथा को रक्त रूपी लेई के द्वारा जोड़ा है और इसकी गाढ़ी प्रीति को आँसुओं से भिंगोया है। यही सोचकर मैंने इस ग्रन्थ का निर्माण किया है कि जगत् में कदाचित् मेरी यही निशानी शेष बची रह जाएगी।

53. मुक्तिवोध किस परीक्षा में असफल हुए थे ?

उत्तर: मुक्तिवोध अत्याचार और शोषन के खिलाफ गीत लिखते रहे पर इसे दूर न कर सके उसी परीक्षा में वे असफल हो गयें।

54. कहाँ-कहाँ की धूप एक जैसी होती है ?

उत्तर: सुर्योदय और सूर्यास्त के समय एहसास करने पर यह प्रतीत होता है कि दोनों समय धूप एक जैसी होती है।

55. लहना सिंह के प्रेम के बारे में लिखिए।

उत्तर: लहना सिह बचपन में जिस लड़की से प्रेम करता था, उसकी शादी उसके सूबेदार से हो जाती है और उसका प्रेम न मिलता है लेकिन फिर भी उसने सच्चाई से उसे अपने हृदय में बसाए रखा ।

56. तुलसी की भूख किस वस्तु की है ?

उत्तर: तुलसीदास को श्री राम की भक्ति की भूख थी। भक्ति रूपी अमृत का पान करके वे अपनी क्षुद्या को तृप्ति करना चाहते थे।

57. जहाँ भय है वहाँ मेद्या नहीं हो सकती क्यों ?

उत्तर: जे०कृष्ण मूति का कहना है कि जहाँ भय का वातावरण है, वहाँ मेद्या नही हो सकती भय के कारण स्वतंत्रता वाद्यक वनी रहती है इसी कारण हम स्वतंत्र मन मस्तिष्क से अपना काम नही कर पाते।

58. तिरिछ किसका प्रतीक है ?

उत्तर: 'तिरिछ' शहरी समाज की संवेदनहीनता और अमानवीयता का प्रतीक है और यह छिपकली प्रजाति का जहरीला लिजार्ड है जिसे विषकोपर भी कहते है।

59. पुंडलीक जी कौन थे ?

उत्तर: पुंडलीकजी एक कर्मठ, विचारवान तथा निडर रहनेवाले देशभक्त थे। वे गाँधीवादी विचारधारा के पोषक थे। गाँधीजी ने भितिहरवा आश्रम में रहकर बच्चों को पढ़ाने के लिए उन्हें 'शिक्षक' नियुक्त किया था ।

60. पुरुष जब नारी के गुण लेता है तब वह क्या वन जाता है ?

उत्तर: दिनकर जी कहते है कि जिस पुरुष में नारी के गुण का समावेश हो जाता है, उसमें प्रेम दया करूण एवं सहनशीलता के भाव जागृत हो जाते है।

61. विद्यार्थी को राजनीति में भाग क्यों लेना चाहिए ?

उत्तर: सरदार भगत सिंह के अनुसार विद्यार्थी देश के कर्णधार होते है। आने वाला समय में देश की बागडोर उन्हें अपने हाथ में लेनी है। मगर वे आज से ही राजनीति में भाग नहीं लेंगे तो आने वाला समय में देश को भली भाँति नहीं संभाल पाएँगे, जिससे देश का विकास न हो सकेगा।

62. गाँधीजी के शिक्षा संबंधी आदर्श क्या थे ?

उत्तर: गाँधीजी शिक्षा का मतलब सुसंस्कृत बनाने और निष्कलुष चरित्र निर्माण समझत थे। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आचार्य पद्धति के समर्थक थे अर्थात् बच्चे सुसंस्कृत और निष्कलुष चरित्र वाले व्यक्तियों के सान्निध्य से ज्ञान प्राप्त करें। अक्षर ज्ञान को वे इस उद्देश्य

की प्राप्ति में विधेय मात्र मानते थे।

वर्तमान शिक्षा पद्धति को वे खौफनाक और हेय मानते थे, क्योंकि शिक्षा का मतलब है- बौद्धिक और चारित्रिक विकास, लेकिन यह पद्धति उसे कुंठित करती है। इस पद्धति में बच्चों को पुस्तक रटाया जाता है ताकि आगे चलकर वे क्लर्क का काम कर सकें, उनका सर्वांगीण विकास से कोई सरोकार नहीं है।

गाँधीजी जीतिका के लिए नये साधन सीखने के इच्छुक बच्चों के लिए औद्योगिक शिक्षा के पक्षधर थे। तात्पर्य यह नहीं था कि हमारी परंपरागत व्यवसाय में खोट है वरन् यह कि हम ज्ञान प्राप्त कर उसका उपयोग अपने पेशे और जीवन को प्रतिकुल करने में करें।

63. पुत्र को छौना कहने में क्य भाव छिपा है ? उद्घाटित करे।

उत्तर: छौना का अर्थ होता है- पशुओं का बच्चा जो देखने में बड़ा ही आकर्षक और प्यारा होता है। जिसे देखकर माँ का हृदय खुशियों से भर जाता है। और उसका निस्पृह सौन्दर्य सवकों अपनी ओर आकृष्ट करता है। और माँ का हृदय उल्लासित हो उठता है।

64. 'जन-जन का चेहरा एक' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर: 'जन-जन का चेहरा एक' से कवि का तात्पर्य दुनिया के अनेक देशों में रहने वाले पीड़ित तथा अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत लोगों से है जो एक-सी समस्याओं से घिरे हैं। वे अपने श्रम और कर्म से छुटकारा पाने की दिशा में प्रयासरत हैं। उन सबकी स्थिति भी एक-सी है। इन सभी के लिए अंतवती एकता और समानता परिलक्षित होती है।

65. अगर हममे वाक्शक्ति न होती, तो क्या होता ?

उत्तर: वाक्शति भगवान द्वारा दिया गया उपहार है। वाक्शक्ति के अभाव में समस्त सृष्टि गूँगी प्रतीत होती सभी लोग चुपचाप वैठे रहते और हम विल्कुल जानवर के समान हो जाते।

66. धाँगड़ शब्द का क्या आशय है ?

उत्तर: धाँगड़ शब्द का अर्थ ओराँव भाषा में है- भाड़े का मजदूर। धाँगड़ एक आदिवासी जाति है, जिसे 18वीं शताब्दी के अंत में नील की खेती के सिलसिले में दक्षिण बिहार के छोटानागपुर पठार के चम्पारण के इलाके में लाया गया था। धाँगड़ जाति आदिवासी नहीं मानते हैं। धाँगड़ मिश्रित ओराँव भाषा में बात करते हैं और दूसरों के साथ भोजपुरिया मधेसी भाषा में।

67. पंच परमेश्वर के खो जाने को लेकर कवि क्यों चिन्तित है ?

उत्तर: पंच परमेश्वर हो जाना और 'न्याय' में पक्षपात का बाजार गर्म हो जाएगा और ग्रामीण की आर्थिक और मानसिक दशा दयनीय हो जाएगी।

68. उसने कहा था कहानी पहली वार कब प्रकाशित हुई थी ?

उत्तर: 'उसने कहा था' कहानी पहली बार 1915 में प्रकाशित हुई थी।

69. नागरिक क्यों व्यस्त है ?

उत्तर: नागरिक विज्योत्सव मनाने में व्यस्त है। किन्तु सही मायने में वे इसके प्रयोजन का अर्थ नहीं जानते।

70. शिक्षा का अर्थ क्या है एव इसके क्या कार्य है ?

उत्तर: शिक्षा का अर्थ जीवन के सत्य से परिचित होना और सम्पूर्ण जीवन की प्रक्रिया को समझने में हजारी मदद करनी और हमे जीवन के योग्य बताती है। शिक्षा समाज के ढाँचे के अनुकूल बनने में हमारी सहायता करती है या हमे पूर्ण स्वतंत्रता देती है यह सामाजिक समस्याओं का निवारण करें, यहा कार्य शिक्षा का हैं।

71. राम रमौवल का क्या अर्थ है।

उत्तर: चार से अधिक व्यक्तियों की बातचीत को राम रमौवल कहते हैं।

72. गैंग्रीन क्या होता है ?

उत्तर: ग्रैंगीन एक खतरनाक रोग है। पहाड़ियों पर रहने वाले व्यक्तियों पैरों में काँटा चुभना आम बात है। परन्तु काँटा चुभने के बाद बहुत दिनों तक छोड़ देने के बाद व्यक्ति का पाँव जख्म का शक्ल अख्तियार कर लेता है जिसका इलाज मात्र पाँव का काटना ही है। कभी-कभी तो इस रोग से पीड़ित व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है।

73. अधिनामक कौन है। अर्थ क्या होता है ? उसकी क्या पहचान है?

उत्तर: अधिनामक का अर्थ है जनता का नामक या नेता इनकी पहचान खादी के कपड़े, भड़कीले भाषण से होती है। आजादी हासिल होने के बाद भी आम आदमी के हालत में कोई बदलाव नही आया आजादी के बाद के सताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण कटाक्ष किया गया है।

74. अर्धनारीश्वर का स्वरूप क्या है ?

उत्तर: अर्धनारीश्वर का अर्थ है कि शरीर का आधा भाग नारी का आधा पुरुष का भगवान शिव को अर्धनारीश्वर के रूप में दिखाया गया है।

75. भ्रष्टाचार की जड़ क्या है? इसे दूर करने के सुझाव दे।

उत्तर: भ्रष्टाचार की जड़ सरकार की गलत नीतियाँ हैं। इन गलत नीतियों के कारण भूख है, महँगाई है, भ्रष्टाचार हैं, बगैर रिश्वत दिए जनता का कोई काम नहीं निकलता है। सरकारी दफ्तरों में, बैंकों में, हर जगह, टिकट लेना है उसमें, जहाँ भी हो, रिश्वत के बगैर जनता का काम नहीं होता। हर प्रकार के अन्याय के नीचे जनता दब रही है। शिक्षा-संस्थाएँ भ्रष्ट हो रही हैं। हमारे नौजवानों का भविष्य अंधेरे में पड़ा हुआ है। उनका जीवन नष्ट हो रहा है इस प्रकार चारों ओर भ्रष्टचार व्याप्त है। इसे दूर करने के लिए समाजवादी तरीके से सरकार ऐसी नीतियाँ बनाएँ जो लोककल्याणकारी हों।

76. ओ सदानीरा किस नदी के लिए कहा गया है ?

उत्तर: 'ओ सदानीरा' परमपावती गंडक नदी को कहा गया है।

77. महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र वोस का नाम किस पाठ में आया है ?

उत्तर: महात्मागाँधी जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस का नाम एक लेख और एक पत्र शीर्षक पाठ में आया है।

निम्नांकित प्रश्न में से किन्हीं तीन के उत्तर दें :

01. लहना सिंह का चरित्र चित्रण करें ?

उत्तर: लहना सिंह एक वीर सिपाही है। वह 'उसने कहा था' कहानी का प्रमुख पात्र है। लहना सिंह कहानी का नामक सच्चा देश प्रेमी के साथ-साथ बहादुर तथा निडर सिपाही है

(i) सच्चा प्रेमी - लहनासिंह एक सच्चा प्रेमी है। बचपन में उसके हृदय में एक अनजान भावना ने जन्म लिया जो प्रेम था। यद्यपि उसे अपना प्रेम न मिल सका लेकिन फिर भी उसने सच्चाई से उसे अपने हृदय में बसाए रखा।

(ii) बहादुर तथा निडर - लहनासिंह बहादुर तथा निडर व्यक्तित्व का स्वामी है। तभी तो वह बैठे रहने से बेहतर युद्ध को समझता है। साथ ही वह अद्‌भुत वीर है इसीलिए तो कहता है- 'मुझे तो संगीत चढाकर मार्च का हुक्म मिल जाए फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो।' वहीं उसने अपनी निडरता के कारण ही नकली लपटन साहब को भी ढेर कर दिया था।

(iii) चतुर - लहनासिंह बहादुर होने के साथ-साथ काफी चतुर भी है। इसलिए उसे लपटन साहब के नकली होने का शक हो गया और उसने चतुराई से उसका भांडा फोड़ दिया।

(iv) सहानुभूति तथा दयालुपन - लहनासिंह के चरित्र में सहानुभूति तथा दया भाव भी विद्यमान हैं। इसीलिए वह भीषण सर्दी में भी अपने कंबल और जर्सी बीमार बोधासिंह को दे देता है।

(v) वचन पालक - सूबेदारनी ने लहनासिंह से अपने पति और बेटे के प्राणों की रक्षा करने की बात कही थी। लेकिन लहनासिंह ने उसे एक वचन की तरह निभाया और इसके लिए अपने प्राण भी न्योछावर कर दिए।

02. अर्धनारीश्वर में व्यक्त विचारों का सारांश लिखें ?

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' के निबंध 'अर्धनारीश्वर' से ली गयी हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में निबन्धकार यह कहना चाहता है कि जिस तरह वृक्ष के अधीन उसकी लताएँ फलती-फुलती हैं उसी तरह पत्नी भी पुरुषों के अधीन है। वह पुरुष के पराधीन है। इस कारण नारी का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया। उसके सुख और दुख, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा, यहाँ तक कि जीवन और मरण भी पुरुष की मर्जी पर हो गये। उसका सारा मूल्य इस बात पर जा ठहरा कि पुरुषों की इच्छा पर वह है। वृक्ष की लताएँ वृक्ष के चहाने पर ही अपना पर फैलाती हैं। उसी प्रकार स्त्री ने भी अपने को आर्थिक पंगु मानकर पुरुष की अधीनता स्वीकार कर ली और यह कहने को विवश हो गयी कि पुरुष के अस्तित्व के कारण ही मेरा अस्तित्व है। इस परवशता के कारण उसकी सहज दृष्टि भी छिन गयी जिससे यह समझती कि वह नारी है। उसका अस्तित्व है। एक सोची-समझी साजिश के तहत पुरुषों द्वारा वह पंगु बना दी गई। इसीलिए वह सोचती है कि मेरा पति मेरा कर्णधार है, मेरी नैया वही पार करा सकता है, मेरा अस्तित्व उसके होने के कारण को लेकर है। वृक्ष लता को अपनी जड़ों से सींचकर उसे बढ़ने का मौका देता है और कभी दमन भी करता है। इसी तरह एक पत्नी भी इसी दृष्टि से अपने पति को देखती है।

03. 'सिपाही की माँ' की संवाद योजना की विशेषताएँ बताएँ ?

उत्तर: सिपाही की माँ एक वहुचर्चित एकांकीकार मोहन राकेश के द्वारा लिखी गयी है।

सिपाही की माँ एक भोली-भाली देहाती औरत है, जो देश दुनिया की खबरों से अपरिचित रहती है। वह यह नहीं जान पाती कि उसका बेटा, जो सिपाही बनकर बर्मा में मोर्चे पर दुश्मानों से लड़ने गया है, युद्ध समाप्त करके ही वापस घर लौट सकता है अथवा युद्ध में दुश्मनों के हाथों मारा भी जा सकता है। घर में अविवाहित बेटी अब विवाह के योग्य हो चली है, माँ सोचती है कि बेटा बर्मा से कमाकर लौटेगा, तो बेटी के हाथ पीले करने में मदद करेगा। एक रात उसकी माँ सपने में देखती है कि उसका बेटा मानक आया है, वह घायल है तथा उसके पीछे दुश्मन के सैनिक मार डालने के लिए पड़े हुए हैं। एकांकी में सपनें का यह दृश्य बड़े ही करुणापूर्ण ढंग से दिखलाया गया है। माँ इस खतरनाक दृश्य को देखकर डर जाती है। चौंककर उठती है तब 'मानक! मानक!!' चिल्लाने लगती है। बेटी मुन्नी, जो माँ के समीप चारपाई पर सोई रहती है, उठकर माँ को सांत्वना देती है। कहती है कि भैया एक दिन जरूर वापस आएगा, लेकिन इस तरह महीनों बीत जाते हैं, फिर भी मानक नहीं आता।

04. सुभद्रा कुमारी चौहान की रचना पुत्र-वियोग का सारांश लिखे।

उत्तर: पुत्र वियोग शीर्षक कविता सुभद्रा कुमारी चौहान के प्रतिनिधि काव्य संकलन मुकुल से ली गई है।

'पुत्र वियोग' कविता की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। प्रस्तुत कविता एक शोक-गीत है जिसमें पुत्र की मृत्यु के बाद माँ की तड़प का मार्मिक चित्रण किया गया है। इसमें न तो घटना की विविधता है और न चरित्र-चित्रण की प्रधानता। यह एक भाव प्रधान कविता है। सचमुच वह घड़ी कैसी होगी। जब काल के हाथों में माँ निःसहाय-सी होगी और वह (मृत्यु) उसके प्यारे, दुलारे, जीवन स्तंभ को अपने साथ लेकर चला गया। माँ अपनी संतान के लिए क्या कुछ नहीं करती और सहती है। पुत्र को कष्ट हो तो वह जमीन आसमान एक कर देती है। पुत्र के लिए अपने अभिमान, स्वाभिमान को हाशिये पर रख पत्थर को भी देव समझ उसकी दिन-रात पूजा-अर्चना करती है। बदले में अपने उस देवता से वह पुत्र के दीर्घायु होने की ही कामना करती है। किन्तु वही पुत्र जब असमय मृत्यु को प्राप्त होता है तो माँ असहाय और विवश हो जाती है। कवयित्री के लिए उल्लास का कोई अर्थ नहीं बनता। लाख व्यस्तताओं के वाबजूद वह अपने बिछड़े पुत्र को विस्मृत नहीं कर सकती। कवयित्री को ऐसी सादगी भरी अभिव्यक्ति अन्यत्र दुर्लभ है। यह पीड़ा किसी एक माँ-बेटे की नहीं है। रिश्तों के बीच माँ-बेटे के संबंध की एक विलक्षण प्रस्तुति है। इसकी भाषा-शैली प्रांजल एवं प्रवाहमयी है। इसमें प्रसाद गुण और करुण रस की सर्वत्र प्रधानता है।

05. जन-जन का चेहरा एक कविता का केन्द्रीय विषय क्या है ? या

कवि गजानन माद्यव मुक्तिवोध रचित जन-जन का चेहरा एक शीर्षक कविता का सारांश लिखे ?

उत्तर: प्रस्तुत कविता प्रयोगवादी 'कवि' गजानन माद्यव मुक्तिवोध द्वारा रचित उनकी कविता 'जन-जन का चेहरा एक से उद्धत है।

'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता में साधारण जनता के प्रति मुक्तिबोध की यह कल्पनाशील और बोधयुक्त सहानुभूति उनके लिए ''हृदय दान की बेला'' बनकर आती है। इन प्रश्नों के उत्तर के लिए वे जीवन के प्रखर समर्थक की तरह उत्पीड़न की तह में जाते हैं। कवि की दृष्टि में विश्व के विभिन्न देश, प्रांत, गाँव में रहने वाली सामान्य जनता की दशा एक ही तरह की है अर्थात् वह शोषक वर्गों द्वारा शोषित एवं उत्पीड़ित है। सामान्य जनता सभी स्थानों पर शोषण की चक्की में पिसी जा रही है। जनता की आशाओं-आकांक्षाओं पर पानी फिर गया है। उनके कष्ट में उन्हें असमय ही बुढ़ापे में तब्दील कर दिया। पूँजीवादी व्यवस्था ने जनता की हरियाली को काली धुंध में बदल डाला, वह इस घुटन-भरी व्यवस्था में जीने के लिए अभिशप्त है। इस व्यवस्था में स्वच्छ, निर्मल, कोमल कलरव करती हुई प्रवाहित नदी जो मस्ती की गान गाती हुई बहती थी, वेदना का गाण गाने लगी। उसमें वह उमंग और तरंग नहीं है। मनुष्य की दानव दुरात्मा की प्रवृत्ति भिन्न-भिन्न भौगोलिक, ऐतिहासिक बंधनों से मुक्त है। वह किसी मानवीय भावनाओं से बँधी नहीं है, उसी प्रकार मनुष्य के मानवोचित गुण इन सब सीमाओं से परें है। विश्व की जनता वर्तमान पूँजीवादी, भौतिकवादी व्यवस्था से आतंकित है और इस व्यवस्था में आमूलचूक परिवर्तन बिना क्रांति के संभव नहीं है। सभी एक ही सिक्के के पहलू हैं।

06. सूरदास की कृष्ण भक्तिभावना पर प्रकाश डालें

उत्तर: सूरदास अपने प्रभु कृष्ण के वैसे रूप पर अधिक मोहित होते हैं जिनमें बालपन हो अर्थात् सूर को कृष्ण का बालरूप अत्यधिक मोहित करता है और ईश्वर को बालक के रूप में चित्रित कर मोक्ष की आकांक्षा या भक्ति करना वात्सल्य भक्ति कहलाता है। सूरदास ने अपने प्रभु कृष्ण का बाल-वर्णन ही अधिक किया है। चूँकि बालक परिवार के केन्द्र में होता है। उसके क्रियाकलाप करने में रमा है उतना अन्य में नहीं। सूर कृष्ण की शोभा कैसे देखते हैं एक बानगी देखिए-

07. 'प्यारे नन्हे बेटे को' कविता का सारांश लिखिए ?

उत्तर: प्रस्तुत कविता विनोद कुमार शुक्ल के कविता संग्रह 'वह आदमी नया गरम कोट पहनकर चला गया विचार की तरह' से ली गई है। प्रस्तुत कविता जीवनानुराग, संबंध बोध और सामायिक यथार्थ की कविता है। कविता का नायक जो भिलाई, छत्तीसगढ़ का रहनेवाला है, अपने नन्हें बेटे को कंधे पर बैठाए अपनी नन्हीं बिटिया से कौतुकपूर्ण बातचीत करते हुए पूछता है कि 'बतलाओ, आसपास कहाँ-कहाँ लोहा है' लोहा तो हर कदम पर है। आज की दुनिया बिना लोहा के चल नहीं सकती गृहस्थी तो एकदम नहीं। सारी गृहस्थी, सारी दुनिया लोहा पर ही टिकी है।

लोहा, दुनिया के चलने और चलाने का, गृहस्थी को चलाने और सँवारने का एक अनिवार्य साधन है, कविता के अन्त में आकर 'लोहा' प्रतीकार्थता ग्रहण कर लेता है। लोहा ठोस होकर भी हमारी जिन्दगी में अच्छी तरह घुला-मिला है, वह हमारी जिन्दगी के साथ

प्रवाहित है, वह हमारे संबंधों के बीच है, वह भी हमारी संबंधी है, अर्थात् लोहा हमारे जीवन का आधार हैं। कवि 'लोहा' को भार ढोने का प्रतीक बना देता है। लोहा भार ढोता है, अतः कायदे से जो भार ढोता है, वह लोहा ही है। "हर वो आदमी/जो मेहनतकश/लोहा है/ हर वो औरत/दबी सताई/बोझ उठानेवाली, लोहा !" जहाँ बोझ उठाने का प्रसंग आता है, वहाँ लोहा उपस्थित हो जाता है। चाहे जो भी बोझ उठाए, वह लोहा होता है। कंधे पर बेटे को उठाए बाप लोहा है। किसान, मजदूर, मेहनतकश-सबके सब लोहा हैं, क्योंकि ये सभी भार ढोते हैं। भार ढोनेवाले सब लोहा हैं, क्योंकि लोहा सबका भार ढोता है।

08. लोहा क्या है? इसकी खोज क्यों की जा रही है?

उत्तर: लोहा आधुनिक सभ्यता की अनिवार्य वस्तु है। इसी पर आधुनिक सभ्यता अवलम्बित है। इसी धातु पर सारा कुछ निर्भर है। लोहा बोझ उठाता है। लोहा कदम-कदम पर और एक गृहस्थी में सर्वव्याप्त है। जो बोझ उठाता है, उसकी प्रकृति लोहे की होती है। लोहे की खोज में एक कौतुक है तो इस कौतुक का निहितार्थ है कि यह देखा जाए कि संसार और सांसारिक संबंध किस पर अवलम्बित है।

09. शिक्षा शीर्षक संभाषण का सारांश लिखें ?

उत्तर: जे० कृष्णमूर्ति द्वारा लिखित 'शिक्षा' शीर्षक उनका दिया गया शिक्षा-संबंधी भाषण है। इस भाषण में वे 'शिक्षा' 'शिक्षक','विद्यार्थी' का अलग-अलग विश्लेषण करते है। वे कहते हैं, 'हम शिक्षा किसलिए प्राप्त करते हैं? शिक्षा से हमें केवल नौकरी, रोजगार, जीने-खाने का ढंग आ जाता है। तो क्या यही शिक्षा का उद्देश्य है? वे इसी बहाने शिक्षक, विद्यार्थी, माता-पिता, पड़ोसी-सबों के कर्त्तव्य-बोध से परिचय करते हैं। 'जीवन' के संबंध में चर्चा करते हुए वे जीवन को व्यापक अर्थों में ग्रहण करते है। विभिन्न समुदाय, जातियाँ, देश, समाज, विभिन्न पक्षी, फूल, वृक्ष, आकाश, सितारे, सरिताएँ आदि से हमारा बना है। ध र्म-कर्म, पूजा-पाठ, परंपरा और लोक-विश्वास सबों से मिलकर बननेवाला यह जीवन विराट है। शिक्षा का मतलब उस जीवन को समझना है, जो बहुत विशाल है।

निबंध में जे० कृष्णमूर्ति यह बतलातें है कि शिक्षा प्रदान करने के लिए ऐसा वातावरण बनाया जाए, जो स्वतंत्र हो, भय न हो, जहाँ मानवीय गुणों का विकास हो तथा छात्र मानव-जीवन की पूरी प्रक्रिया से रू-ब-रू हो सकें।

वे कहते हैं हम जीवन में निरंतर सीखते रहते हैं। सीखने की यह प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। हम प्रकृति द्वारा निर्मित प्रत्येक वस्तु से सीखते हैं। सूखी पत्ती, उड़ती हुई चिड़ियों, मुस्कराहट, आँसू, सुख-दुःख, धनी-गरीब, बीमारी, भय, अहंकार, क्रोध, मोह एवं लोभ-सब सिखलाने वाले हैं। सृष्टि में दिखनेवाली सभी चीजें हमें कुछ-न-कुछ सिखलाती हैं। अतः गुरू और कोई नहीं है, बल्कि यह जीवन ही गुरू है, यह जीवन स्वयं आपका या हमारा बेहतर गुरू है।

इस निबंध के माध्यम से लेखक एक नए विश्व के निर्माण की बात सोचता है। जहाँ के माहौल में सुख, शांति, प्रेम और सौहार्द्र का पारावार हो। जहाँ व्यक्ति को मानसिक एवं शारीरिक सुख-शांति की प्रप्ति हो सके।

10. संपूर्ण क्रांति शिर्षक पाठ का सारांश लिखे ?

उत्तर: 'संपूर्ण क्रांति' जयप्रकाश नारायण द्वारा दिया गया भाषण है, यह भाषण उन्होनें 5 जून 1974 को पटना के गाँधी मैदान में दिया था।

इस भाषण में एक आह्वान है, जिसे जागरण का मान कह सकते हैं। आजादी के बाद भारत काँग्रेस के अधीन रहा था। जबकि लोकतंत्र में ऐसा नियम है कि जनता खुद ही अपना नेता या विधायक चुनती है। इस भाषण में उन्होंने यह बतलाने का प्रयास किया कि आजाद होने के बाद भी भारत अभी भी अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। ये समस्याएँ सर्वत्र भ्रष्टाचार की हैं। गरीबी, महंगाई तथा बेरोजगारी की हैं। उन्होने छात्रों को संबोधित कर बतलाया कि आपको स्वतंत्र भारत में खुद ही राजनीति का हिस्सा बनना चाहिए तथा समस्याओं के निवारणार्थ आगे आना चाहिए।

उन भाषण को सुनकर तत्कालीन युवा वर्ग में असाधारण बदलाव आया था तथा काँग्रेस की हार हुई थी। उन्होनें यह बतलाया था कि कार्यालय में बाबू लोग रिश्वत लिए बगैर काम नहीं करते तथा सर्वत्र अराजकता की स्थिति बन गई है। उनके द्वारा दिए गए इस भाषण ने पूरे बिहार ही नहीं, देश के स्तर पर बदलाव का श्री गणेश किया। वे कहते हैं- 'मैं तो थक गया हूँ लेकिन आज बड़ी भारी जिम्मेदारी हमारे कंधों पर आई है और यह जिम्मेदारी मैंने अपनी तरफ से माँग कर नहीं लिया हैं।....... अब यह दायित्व युवाओं, छात्रों एवं नवयुवकों पर है कि वे आगे आएँ तथा देश का प्रतिनिधित्व करें।' यह भाषण सरल तथा सुबोध शब्दों में हैं तथा सहज ही समझ में आने लायक है। यह युवा वर्ग को आज भी प्रेरित करने में अपनी अहम भूमि निभाता है।

11. तिरिछ शीर्षक कहानी का सारांश लिखें ।

उत्तर: प्रस्तुत पाठ तिरिछ नामक कहानी उदय प्रकाश जी की त्रासदी पर आधारित है। 'तिरिछ' कहानी जादुई यथार्थ की कहानीकार का उद्देश्य समाज में प्रचालित विश्वासो का चित्रण करना नहीं है, बल्कि उसके माध्यम से शहरी जीवन की संवेदनशीलता को उजागर करना है। 'तिरिछ' कहानी में नैरेटर (कहानी सुनाने वाला) के स्वप्न में तिरिछ बार-बार आता है और उसे आक्रांत करता है। तिरिछ को लेकर लोकमानस मे कई तरह के विश्वास प्रचलित हैं। मसलन एक तो आदमी को यह जैसे ही काटता है, वैसे ही वहाँ से भागकर किसी जगह पेशाब करता है और उस पेशाब में लोट जाता है। अगर तिरिछ ने ऐसा कर लिया तो आदमी बच नहीं सकता। अगर उसे बचना है तो तिरिछ के पेशाब में लोटने के पहले ही खुद किसी नदी, कुएँ या तालाब में डुबकी लगा लेना चाहिए या फिर तिरिछ के ऐसा करने के पहले ही उसे मार देना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि तिरिछ काटने के लिए तभी दौड़ता है जब उससे नजर टकरा जाए। अगर तिरिछ को देखो तो उससे कभी आँख मत मिलाओं। आँख मिलते ही वह आदमी की गंध पहचान लेता है और फिर पीछे लग जाता है। फिर तो आदमी चाहे पूरी पृथ्वी का चक्कर लगा ले, तिरिछ पीछे-पीछे जाता है।

तिरिछ के संबंध में प्रचलित यह धारणा हमारे सामाजिक यथार्थ का अहम पहलू है। ध्यान देने की बात है कि अब हम विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में इतना बढ़ चुके हैं फिर भी कुछ ऐसी चीजें हैं जो हमारा पीछा नहीं छोड़ती और वे समय से हमें बहुत पीछे खींच ले जाती हैं। यह समय से एक तरह का टकराव है। एक ही समय में दो भिन्न प्रकार के सत्य अपने अस्तित्व का आभास कराते हैं। एक वैज्ञानिक प्रगति और तार्किक जीवन-दृष्टि का बोध कराता है तो दूसरा जड़ीभूत मान्यताओं और अंध-विश्वासों का। इन मान्यताओं का कोई तार्किक आधार नहीं होता परन्तु वे जीवन में जबरदस्त प्रभावी भूमिका निभाती है। 'तिरिछ' के विषय में एक और विश्वास का जिक्र कहानी में आता है, बहुत से कीड़े-मकोड़े और जीव-जंतु रात में चन्द्रमा की रोशनी में दुबारा जी उठते है। चाँदनी में जो ओस और शीत होती है उसमें अमृत होता है और कई बार ऐसा देखा गया है कि जिस साँप को मरा हुआ समझकर रात में यों ही फेंक दिया जाता है उसका शरीर चाँद की शीत में भीगकर दुबारा जी उठता है और वह भाग जाता है और फिर हमेशा बदला लेने की ताक में रहता है।

12. कवि जयशंकर प्रसाद की जीवनी एवं उनके द्वारा संकलित तुमुल कोलाहल कलह में का साराश लिखे।

उत्तर: प्रस्तुत कविता नारी के महिमा गान के भावों से युक्त है जो महान छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य कामायनी के निवेद सर्ग से उद्धत है। यह प्रसंग श्रद्धा तथा आदि पुरुष मनु से संवंधित है।

श्रद्धा और मनु का मिलन होता है। श्रद्धा की कोमल भावनाएँ चतुद्धिक शांति का प्रसार करना चाहती है। यहाँ श्रद्धा हृदय का प्रतीक है। मनु मन का प्रतीक है। ऐसे में मन के स्तर पर कोलाहल का पारावार कविमन को आंदोलित करता है।

व्याकुल आराम खोजता है। आराम तो उसे नारी के स्नेहिल संस्पर्श में ही मिल सकता है। ऐसे क्षणों में श्रद्धा मनु को विश्राम और चैन देती है। वह वस्तुतः मलय पर्वत से निकलनेवाली 'मनयानिल' हवा जैसी प्रतीत होती है। प्रसाद जी के अनुसार, 'मन बड़ा चंचल है, वह कभी थकना नहीं जानता, किंतु शरीर पर उसका प्रभाव जब पड़ता है, तो 'शरीर' जरूर थक जाता है। अतः 'श्रद्धा' जीवन की घाटियों में जल युक्त बरसात है, जहाँ एक-एक बूँद पानी के लिए सभी पिपासित बने रहते है। दुनिया जेठ की वह तपती दुपहरी है लेकिन ऐसे समय में श्रद्धा ही, 'ठंढक' पहुँचाती है। इस कविता का मूल भाव है।

13. गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी एवं उनके द्वारा संकलित पद का भावार्थ लिखे।

उत्तर: तुलसीदास को हिन्दी साहित्य का ज्वलयमान सूर्य माना जाता है। इनका काव्य हिन्दी साहित्य का गौरव है। गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। वैसे तो वे समूचे भक्ति काव्य के ही प्रमुख आधार-स्तम्भ हैं। उन्होंने समस्त वेदों, शास्त्रों, साधनात्मक मत-वादों और देवी-देवताओं का समन्वय कर जो महान कार्य किया, वह बेजोड़ है।

तुलसी के पदों में राभक्ति की पवित्र सुरसरि प्रवाहित हुई है। हमारी पाठ्य पुस्तक में तुलसी के दो पद संकलित है। प्रथम पद में माता सीता की वंदना है। यह वंदना ऐसी है कि भक्त

अपनी दीनता, परवशता तथा किंकर्तव्यमूढ़ता के साथ माता के समक्ष उपस्थित होता है। वह प्रभु के आसरे पर ही जीवित है तथा उनका ही नाम ले लेकर अपना पेट भरता है। वह सीता माता से राम जी तक अपना निवेदन पहुँचाता है। यह पद हृदयग्राह्य तथा मन में भक्ति के पवित्र भाव को जगाता है। तुलसी का द्वितीय पद कविकाल वर्णन से प्रेरित है। सूखा और अकाल इस कदर व्याप्त है कि कहीं अन्न नहीं मिल रहा है। घोर कलयुग के इस भीषण समय में जीवन दुख-दर्द से पूर्ण है। यह पीड़ा सहन के योग्य नहीं है। अतः तुलसी अपनी पीड़ा अपने 'आराध्य राम' को सुनाते हैं। रामजी दया के सागर है, करुणा के अवतार है तथा शरणागत रक्षक हैं। वे अवश्य तुलसी के निवेदन को सुनेंगे तथा उनकी पीड़ा का हरण करेंगे। तुलसीदास के अनुसार भूखे पेट भजन तो कत्तई संभव नहीं हो पाएगा। अतः वे तद्युगीन सामाजिक विषमताओं में मुक्ति के लिए रामजी से हाथ जोड़ याचना करते है। इन पंक्तियों में भाषा-शैली का लालित्य देखते ही बनता है।

14. हृदय की बात का क्या अर्थ है ?

उत्तर: 'हृदय की बात का मतलव' मस्तिष्क को शांति पहूँचाना उसे आराम देना श्रद्धा जब अपने को 'हृदय की बात' के रूप में प्रस्तुत करता है तब इसका सीधा सा अर्थ है कि वह अपने को प्रेम, करुणा, सहानुभूति, दया, ममता आदि सात्त्विक वृत्तियों की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रस्तुत कर रहीं है। व्यंग्यार्थ है कि वह घायल मनु से यह कह रही है कि आपने तो मुझसे प्रेम किया और मुझे छोड़कर यहाँ आ गए, पर मैं आपकों कभी छोड़ नहीं सकती। मैं अपने प्रेम और अपनी सेवा से आपकों हमेशा सँभालती रहूँगी।

15. कवि की स्मृति में घर की चौखट इतना जीवित क्यों है ?

उत्तर: कवि की स्मृति में ''घर का चौखट'' जीवन की ताजगी से भरा है। चौखट इतना जीवित मालुम होता है कि चौखट की सीमा पर हमेशा आनेवाला जानेवाला का ताँता लगा रहता है। क्योकि उस चौखट पर बुजुर्गों को घर के अन्दर आने की सूचना के लिए खाँसना या खट-खट की अवाज लगानी पड़ती है।

अतः लेखक के अनुसार घर की चौखट हमेशा जाग्रत होनी चाहिए जो जीवन्तता का अहसास दिलाती है।

16. भूषण रीति काल के किस धारा के कवि है, वे अन्य रीतिकालीन कवियों से कैसे विशिष्ट है ?

उत्तर: भूषण श्रृंगार रस के नायक-नायिकाओं के भेदोपभेदों के निरूपक रीति काव्य परंपरा के कवि रीतिकाल में श्रृंगार रस की प्रधानता थी। अधिकाँश कवि श्रृंगार परक कविता लिखते थे। परन्तु कवि भूषण ने इस प्रद्यान प्रवृति से हटकर वीर रस को प्रधानता दी और उसी के अनुरूप अपना स्वतंत्र पक्ष निर्मित किया।

17. जूठन शीर्षक पाठ का सारॉश लिखिए ?

उत्तर: प्रस्तुत पाठ 'जूठन ओम प्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा जूठन का एक अंश है। ओमप्रकाश को उनके प्रधानाध्यापक ने चूहड़ की संतान जानकर शीशम के पेड़ पर चढ़ने

और उसकी पत्तोंवाली टहनियों से झाड़ू बनाने और उससे स्कूल को साफ करने का आदेश दिया। यह सिलसिला प्रतिदिन का बन गया। भाइयों का लाडला ओमप्रकाश कहीं से भी इसके लिए तैयार नहीं था किन्तु हेडमास्टर के सामने उसकी एक न चलती और वह पढ़ने की इच्छा को दमित कर रोते-रोते इन सब कार्यो को करता रहता।

एक दिन स्कूल के पास से गुजरते पिताजी को देखकर ओमप्रकाश फफक पड़ा पिता के पूछने पर कि क्यों रोते हो ? क्या हुआ है ? बताओं तो! ओमप्रकाश ने फफक-फफक कर सारी बात पिताजी को बता दी। सुनकर पिताजी आग बबूला हो गए। उन्होनें प्रध ानाध्यापक से इसका विरोध जताया। फलस्वरूप उनहें मास्टर की गालि और धमकी सुननी पड़ी। आप के पिताजी पर धमकी का कोई असर नहीं पड़ा। पिताजी के इस विरोध का ओमप्रकाश पर अद्भूत प्रभाव पड़ा।

इस तरह हम देखते हैं कि किस प्रकार माँ-पिताजी मेहनत मजदूरी के बदले जूठन से अपना काम चलाते हैं। खासकर शादी-ब्याह के अवसर पर तो ये चूहड़ जूठी पतलों में पूड़ी के टुकड़ों और बची खुची मिठाई को पाकर ही अपने नसीब को सराहते थे। जूठन से ही परिवार का भरण-पोषण होता था। आज जब लेखक इस घटना को याद करता है तो जूठन से ही उसका जी मितलाने लगता है। सच कहा जाए तो लेखक ने जो यातना भोगा था उसे याद कर वह आज भी सिहर जाता है। अतीत के वे सारे चित्र कहीं-न-कहीं लेखक को उद्भ्य साहस से इसके विरोध में लड़ने की क्षमता भी प्रदान करते हैं। यही कारण है कि लेखक आज इस मुकाम पर अवस्थित है।

18. भूषण की कविता 'कवित' का सारांश लिखें ?

उत्तर: प्रस्तुत दोनों कवित्त रीतिकाल के सुप्रसिद्ध कवि भूषण द्वारा रचित हैं। इन कवित्तों में कवि ने अपने प्रिय नायकों-छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल के आत्म गौरव, शौर्य एवं पराक्रम का ओजस्वी वर्णन किया है।

प्रस्तुत 'कवित्त' में शिवाजी का चरित्र एक राष्ट्रनायक का चरित्र है। एक देशभक्त का चरित्र है। जुझारू संकल्प शक्ति से पूर्ण महामानव का चरित्र है। भूषण की दृष्टि में छत्रपति शिवाजी महाराजा एक जननायक हैं, लोकनायक हैं। धीरता, वीरता, गंभीरता के प्रतीक पुरुष हैं। वे सच्चे अर्थ में एक राष्ट्रवीर हैं।

द्वितीय कवित्त में राजा छत्रसाल की वीरता का सांगोपांग वर्णन है। रणक्षेत्र में छत्रसाल की तलवार प्रलयंकारी सूर्य की किरणों के समान प्रखर और प्रचण्ड रूप धारण कर म्यान से निकलती है। वह विशाल हाथियों के समूह जैसे गहन अंधकार को छिन्न-भिन्न कर डालती है। कहने का भाव यह है कि गाजर-मूली की भाँति हाथियों को काट गिराती है। शत्रुओं के गर्दन से यह नागिन की तरह लपक कर जा लिपटती है। इस प्रकार देखते-देखते मुंड़ों की ढेर लगा देती है। कवि कहता है कि हे बलिष्ठ और विशाल भुजावाले महाराजा छत्रराजा ! मैं आपकी तलवार का गुणगान कहाँ तक करूँ। आपकी तलवार शत्रु योद्धाओं के कटक-जाल को काट-काट कर रणचण्डी की भाँति किलकारी भरती हुई काल (मृत्यु, विनाश) को ग्रास (भोजन) बनाती है।

19. हार-जीत कविता का क्रेन्दीय भाव स्पष्ट करें ?

उत्तर: 'हार-जीत' शीर्षक कविता प्रसिद्ध लेखक और कवि अशोक वाजपेयी द्वारा रचित कविता है। मूलत: यह जीवन से जुड़ी हुई कविता की पहली पंक्ति हैं- 'वे उत्सव मना रहे हैं। सारे शहर में रोशनी की जा रही है। यहाँ 'वे' का अर्थ है 'राजा' जो एक उत्सव आयोजित कर रहा है। उत्सव मनाने के लिए सारे शहर को रोशनी से परिपूर्ण किया जा रहा है। कवि के कहने का अर्थ है कि इस उत्सव में बहुत सारे नागरिक शामिल होंगे। लोगों में कौतुहल है। किसी को इस बात का पता नहीं कि किसकी जीत हुई है, जिसको लेकर यह शहर जगमग हुआ है।

कवि कहता है कि इस विजय पर्व यानि इस उत्सव को मनाये जाने के पीछे एक गहरी साजिश है, जो साधारण जनता को बेवकूफ बनाये जाने के लिए रची गई है।

कविता में बूढ़ा मशकवाला है, जो सड़कों को खींच रहा है। वह सही बात जानता है। वह जानता है कि राजा युद्ध में हार गया है, लेकिन राजा अपनी हार छिपाने के लिए यह संदेश अपनी प्रजा में प्रचारित करवाता है कि राजा जीत गया है तथा इसीलिए यह उत्सव मनाया जा रहा है। चूँकि मशकवाले को यह जिम्मेवारी नहीं मिली है कि वह सच जनता को बतावे। यदि सच्ची बात जनता के बीच फैलेती तो देश में दंगा-फसाद हो जाएँगें इससे देश की भीतरी शक्तियाँ कमजोर पड़ जाएँगी। इसलिए जनता तथा सेना का मनोबल बनाए रखने के लिए 'हार' को भी 'जी' मानते हुए 'उत्सव' सा माहौल पूरे देश मे किया गया है। राजा का यह भी कर्त्तव्य है कि वे हार-जीत से बेफिक्र हो युद्ध करते रहें।

20. चम्पारन में गाँधीजी ने शिक्षा व्यवस्था के लिए क्या किया ?

उत्तर: चंपारन का विस्तृत भूभाग जो बिहार के उत्तर पश्चिम कोण पर स्थित है। यह कभी गौतम वुद्ध की कर्मस्थली और भगवान महावीर की जन्मस्थली रहीं है। चम्पारन से गाँधी जी को काफी लगाव था उन्होनें वहाॅ आश्रम, विद्यालय स्थापित किये। उनका विचार था कि ग्रामिण बच्चों की उचित शिक्षा की व्यवस्था है। इसके लिए उन्होने कुछ त्रिष्ठावान कार्यकर्ताओं को तैनात किये जैसे श्री बवनजी गोखले उन्की पत्नी विदुषी अवनितकावाई गोखले नरहरिदास पारिख और उनकी पत्नी कस्तूरबा तथा अपने सेक्रेटरी महादेव देसाई जैसे लोग नियुक्त किये है।

21. पहले कड़बक में कलंक, काँच और कंचन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर: कवि जायसी को भगवान ने इस संसार में चन्द्रमा की तरह जन्म दिया है। जिस प्रकार चन्द्रमा इस संसार में प्रकाश फैलाता है लेकित उसमें काला धब्बा होता है जो उस प्रकाश में ओझल हो जाता है, ठीक उसी प्रकार कवि अर्थात जायसी भी एक आँख खराब होने पर भी श्रेष्ठ कवियों में उनकी चर्चा होती है।

काँच और कंगन-जवतक स्वर्ण को आग में नहीं तपाया जाता है तब तक कच्चा होता है ठीक उसी तरह कविने पक्का सोना बनने के लिए अपने आपकों खूब तपाया है।

22. रोज कहानी का सारांश लिखें

उत्तर: 'रोज' कथा साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रणेता महान कथाकार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में 'संबंधों' की वास्तविकता को एकान्त वैयक्तिक अनुभूतियों से अलग ले जाकर सामाजिक संदर्भ में देखा गया है। मध्यवर्ग की पारिवारिक एकरसता को जितनी मार्मिकता से कहानी व्यक्त कर सकी है वह उस युग की कहानियों में विरल है।

कहानी के पहले भाग में मालती द्वारा अपने भाई के औपचारिक स्वागत का उल्लेख है जिसमें कोई उत्साह नहीं है, बल्कि कर्त्तव्यपालन की औपचारिकता अधिक है। वह अतिथि का कुशल-क्षेम तक नहीं पूछती, पर पंखा अवश्य झलती है। उसके प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर देती है। बचपन की बातूनी, चंचल लड़की शादी के दो वर्षों बाद इतनी बदल जाती है कि वह चुप रहने लगती है। उसका व्यक्तित्व बुझ-सा गया है। अतिथि का आना उस घर के ऊपर कोई काली छाया मँडराती हुई लगती है। मालती और अतिथि के बीच के मौन को मालती का बच्चा सोते-सोते रोने से तोड़ता है। वह बच्चे को सँभालने के कर्त्तव्य का पालन करने के लिए दूसरे कमरे में चली जाती है। अतिथि एक तीखा प्रश्न पूछता है तो उसका उत्तर वह एक प्रश्नवाचक 'हू' से देती है। मानों उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं है। यह आचरण उसकी उदासी, ऊबाहट और यांत्रिक जीवन की यंत्रणा को प्रकट करता है। दो वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद नारी कितनी बदल जाती है, यह कहानी के इस भाग में प्रकट हो जाती है।

रोज कहानी के दूसरे भाग में मालती का अंतर्द्वन्द्वग्रस्त मानसिक स्थिति, बीते बचपन की स्मृतियों में खोने से एक यांत्रिक जीवन, पानी, सब्जी, नौकर आदि के अभावों का भी उल्लेख हुआ है। मालती पति के खाने के बाद दोपहर को तीन बजे और रात को दस बजे ही भोजन करेगी और यह रोज का क्रम है। बच्चे का रोना, मालती का देर से भोजन करना, पानी का नियमित रूप से वक्त पर न आना, पति का सबेरे डिस्पेन्सरी जाकर दोपहर को लौटना और शाम को फिर डिस्पेन्सरी में रोगियों को देखना, यह सबकुछ मालती के जीवन में रोज एक जैसा ही है। घंटा खड़कने पर समय की गिनती करना मालती के नीरस जीवन की सूचना देता है अथवा यह बताता है कि समय काटना उसके लिए कठिन हो रहा है।

23. ओ सदानीरा पाठ का सारांश लिखे।

उत्तर: जगदीशचन्द्र माथूर जो सदानीरा शीर्षक निबन्ध के माध्यम से गंडक नदी को निमित बनाकर उसके किनारे की संस्कृति और जीवन प्रवाह की अंतरंग झाँकी पेश करते है जो स्वयं गंडक नदी की तरह प्रवाहित दिखलाई पड़ता है।

माथुर तर्क देते है कि वसुधराभागी मानव और धर्मांधमानव एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। क्योंकि वसुन्धरा भोगी मानव अपने भोग-विलास के लिए जंगलों की कटाई कर रहीं है तो धर्मांध मानव पूजा-पाठ के सड़ी-गली सामग्री को गंगा नदी में प्रवाहित कर उसे दूषित कर रहा है। माथूर मध्युगीन समाज की सच्चाई भी बताते हैं कि आक्रमण के कारण अपनी महत्त्वाकांक्षी की तृप्ति के लिए मुसलमान शासकों ने अंधाधुध जंगलों की कटाई की । इसी

तरह यहाँ अनेक संस्कृति आये और यहीं रच-बस गये। सभी ने उसका दोहन ही किया। इस मिली-जुली संस्कृति का परिणाम कीमियों प्रक्रिया है। चम्पारण के प्रत्येक स्थल पर प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग में गाँधी के चम्पारण आने तक के पूरा इतिहास को अपने लेखनी के माध्यम से अच्छे-बुरे प्रभाव को खंगालते हैं। इस परिचय के संदर्भ में कहीं भी कला संस्कृति उसकी भाषा उनकी आँखों से ओझल नहीं हो पाती।

अंत में गंडक की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि ओ सदानीरा। ओ चक्रा! ओ नारायणी! ओ महागंडक! युगों से दीन-हीन जनता इन विविध नामों में तुझे संबोधित करती रही है। और तेरे पूजन के लिए जिस मन्दिर की प्रतिष्ठा हो रही है, उसकी नींव बहुत गहरी और मजबूत हैं। इसे तू ठुकरा न पाएगी।

24. अंग्रेज नीलहे किसानों पर क्या अत्याचार करते थे ?

उत्तर: अंग्रेज नीलहे किसानों पर बहुत से अत्याचार करते थे। किसानों से जबरदस्ती नील की खेती करवाई जाती थी। उन्हें कुल भूमि के एक निश्चित भाग पर नील की खेती करने के लिए बाध्य किया गया तथा बाद में इससे मुक्त करने के लिए मोटी रकमें ली गई। इन गोरे ठेकेदारों ने बहुत कम अदायगी में हजारों एकड़ जमीन ले ली। इसके अतिरिक्त किसानों को कई तरह के कर तथा नजराने भी देने पड़ते थे।

25. चौर भौर मन किसे कहते है ? वे कैसे बने और उनमें क्या अंतर है ?

उत्तर– चंपारण में गंडक घाटी के दोनों ओर विभिन्न आकृतियों के ताल दिख पड़ते है । ये कही उथले तो कही गहरे है, किन्तु निर्मल जल से पूर्ण है इन तालो को चौर भौर मन कहते है । चौर उथले ताल होते है जिसमें पानी जाड़ो और गर्मियों में कम हो जाता है, जब बाढ़ आती है तो तटो का उल्लंघन कर नदी दूसरा पथ पकड़ लेती है । पूराने पथ पर रह जाते है ये चौर और मन जिनकी गहराई तल को स्पर्श कर धरती के हृदय से स्रोत को फोड़ लाई ।

26. बाजा बजाने का क्या अर्थ है ?

उत्तर– 'आधिनायक' शीर्षक कविता में अंतिम पंक्तियाँ इस प्रकार है, डरा हुआ मन बेमन जिसका बाजा रोज बजाता है । यहाँ बाजा बजाने का अर्थ है प्रतिदिन महाबली अधिनायक का स्तुतिगान करना ।

27. सर्कस का प्रकाश-बुलौआ किन कारणों से मरा होगा ?

उत्तर– सर्कस का प्रकाश-बुलौआ फिल्म बी०सी०पी म्युजिक सिस्टम वी०सी० आर आदि मनोरंजन आधुनिक साधनों के कारण से मरा होगा ।

28. जाड़ा क्या है ? मौत है, और निमोनिया से मरने वालो को मुरखे नहीं मिला करते'' बजीरा सिंह के इस कथन का क्या आशय है ?

उत्तर– युद्ध के मैदान में अत्यधिक ठंड पड़ रही है जिस कारण ऐसा लगता है कि मानो उनकी जान ही निकल जाएगी वैसे भी इस स्थिति में इतने लोग को निमोनिया हो रहा है कि उन्हें मरने के लिए स्थान भी नहीं मिल रहा है ।

29. जय प्रकाश नारायण कम्युनिष्ट में क्यों नहीं शामिल हुये ।

उत्तर– जयप्रकाश नारायण कम्युनिष्ट पार्टी में इसलिए शामिल नहीं हुए क्योंकि उनका मानना था कि जो देश गुलाम है वहाँ के कम्युनिष्टों को अपने को आजादी की लड़ाई से अलग नहीं रखना चाहिए चाहे उस लड़ाई से अलग नहीं रखना चाहिए चाहे उस लड़ाई का नेतृत्व किसी भी वर्ग के हाथ में हो । यह विचार उन्होंने लेनिन से ग्रहण किया था ?

30. किन बाते को सोचकर लेखक के भीतर काँटे जैसे उगने लगते है ?

उत्तर– लेखक जब छोटा था तो उसके परिवार के सभी लोग दूसरे लोगों के घरों में काम करते थे । वे बड़े ही मेहनत से अपना काम करते थे लेकिन उसके बदले उन्हें थोड़ा बहुत अनाज या जूठन मिला करती थी ।

शादी-व्याह के मौकों पर भी उन्हें मेहमानों के खाना खा लेने के बाद जूठी पतलो में बची जूठन ही मिलती थी । इन्ही सब बातों के बारे में सोचकर लेखक की भीतर काँटे जैसे उगने लगते है ।

31. गाँव के घर की रीढ झुर-झुराती हैं 'झुर-झुराती' के लिए आप कोई अन्य शब्द देना चाहेंगे या यह सबसे सटीक क्रिया है, यदि हाँ तो क्यों ?

उत्तर– 'गाँव के घर की रीढ़ झुरझुराती है'। पंक्ति में प्रयुक्त 'झुरझुराती' सबसे सटीक क्रिया है, क्योंकि यह क्रिया उपयुक्त भावों की अभिव्यक्ति में सक्षम तथा भाषा के अनुकूल है । इसके स्थान पर अन्य क्रिया के प्रयोग से उतनी व्यंजकता नहीं आएगी जितनी उसके प्रयोग से आ रही है ।

32. 'डरा हुआ मन बेमन जिसका, बाजा रोज बजाता है'–यहाँ 'बेमन' का क्या अर्थ है ?

उत्तर– आम जनता का विश्वास राजनेताओं में नहीं होता । वही अच्छी तरह जानती है कि राजनेताओं के द्वारा उसका उद्धार नहीं होनेवाला है । पर वह राजनेताओं का स्तुतिगान करती है । उसके स्तुतिगान के पीछे राजनेताओं का डर होता है । राजनेता बाहुबली होते हैं, वे जब चाहे आम जनता की दुर्दशा कर सकते हैं । आम जनता राजनेताओं का गुणगान मन से नहीं करती, डर से करती है ।

33. थानू कौन था ? लेखक के साथ उसका क्या संबंध था ?

उत्तर–थानू लेखक का गाँव का लड़का था और वह लेखक (उदय प्रकाश) का दोस्त था ।

34. 'कला कला के लिए' सिद्धांत क्या हैं ?

उत्तर– कला कला के लिए सिद्धांत से तात्पर्य हैं प्रगीत मुक्तको का चलन अधिक होना और लबी कविताओं को नकार देना ।

35. किस तारीख की डायरी आपको सबसे प्रभावशाली लगी और क्यों ?

उत्तर– 25 जुलाई 80 की डायरी हमें सबसे प्रभावी लगी क्योंकि इस अंश में लेखक ने अपनी कुछ कमियों को सहर्ष स्वीकार किया है । वह बड़े ही स्पष्ट शब्दों में लिखता है कि मैं भीतर से बेतरह डरा हुआ व्यक्ति हूँ ।............ इस डर की वजह से कितने-कितने घंटे मैंने तनाव में गुजारे हैं–एक पत्ते की तरह काँपते हुए, होठों में प्रार्थनाएँ बुदबुदाते हुए कि किसी तरह संकट का यह क्षण कटे ।

36. कुंती का परिचय आप किस तरह देंगे ?

उत्तर– कुंती एक अधेड़ उम्र की ग्रमीण महिला है । वह दूसरों के प्रति सहानुभूति तो रखती है लेकिन चुटकी लेना भी नहीं भूलती है । इसीलिए वह एक तरफ मानक के जल्दी घर वापस आने की बात करती है तो वहीं मुन्नी के लिए जल्दी-से-जल्दी लड़का देखने की बात भी कहती है । साथ ही वह दुनिया का खबर भी रखती है । इसीलिए बर्मा से आई लड़कियों को देखते ही पहचान जाती है कि वे ईसाई हैं ।

37. मानक और सिपाही एक दूसरे को क्यों मारना चाहते हैं ?

उत्तर– यह युद्ध की विभीषिका का परिणाम है कि मानक और सिपाही एक-दूसरे को मारना चाहते हैं । वे दोनों एक-दूसरे को दुश्मन समझते हैं और उनका मानना है कि यदि मैं दूसरे को छोड़ दूँगा तो वह मुझे मार देगा । वैसे भी वे दोनों विरोधी सेना के सिपाही हैं, इसलिए एक-दूसरे को मारना चाहते हैं ।

38. नारी की पराधीनता कब से आरंभ हुई है ?

उत्तर– नारी की पराधीनता तब आरंभ हुई जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया, जिसके चलते नारी घर में और पुरुष बाहर रहने लगा । यहाँ से जिंदगी दो टुकड़ों में बँट गई । घर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन विस्तृत होता गया, जिससे छोटी जिंदगी बड़ी जिंदगी के आधिकाधिक अधीन हो गई । नारी की पराधीनता का यह संक्षिप्त इतिहास है ।

39. बिटिया से क्या सवाल किया गया है ?

उत्तर– बिटिया से उसके पिता ने सवाल किया है कि उसके आस-पास कहाँ-कहाँ लोहा है । दूसरे शब्दों में उससे (बिटिया से) सवाल किया है कि वह बताए कि उसके आसपास कहाँ-कहाँ लोहा है । उसके देखने में कौन-सी वस्तुएँ हैं उन्हें से बनी हैं ।

40. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है ?

उत्तर– मनुष्य की बातचीत का सबसे उत्तम तरीका उसका आत्म-वार्तालाप है । वह अपने अंदर ऐसी शक्ति विकसित करे, जिस कारण वह अपने आप से बात कर लिया करे आत्म-वार्तालाप से तात्पर्य क्रोध पर नियंत्रण है, जिसके कारण अन्य किसी व्यक्ति को कष्ट न पहुँचे ।

41. दूसरे पद में तुलसी ने अपना परिचय किस तरह दिया है, लिखिए ।

उत्तर–दूसरे पद में तुलसी ने अपना परिचय गिड़गिड़ाकर भीख माँगते भिखारी के रूप में दिया है । वे राम से कह रहे हैं कि हे श्रीराम ! मैं सुबह से आपके द्वार पर बैठा भीख माँग रहा हूँ । मैं भीख में बहुत कुछ पाने की हठ नहीं कर रहा हूँ, अपितु आपकी अनुकम्पा का एक टुकड़ा ही पाना चाहता हूँ ।

42. 'कबीर कानि राखी नहीं' से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर– कबीर ने चार वर्ण, चार आश्रम, छह दर्शन में से किसी की आनि कानि नहीं रखी अर्थात् इनमें से किसी को भी महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने केवल भगवद्‌भक्ति को ही संसाररूपी भवसागर पार करने का साधन समझा है। वहीं बाकी सबको व्यर्थ बताया है।

43. जीवन में विद्रोह का क्या स्थान है ?

उत्तर– जीवन में विद्रोह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जीवन के ऐश्वर्य, इसकी अनंत गहराई और इसके अद्‌भुत सौंदर्य की धन्यता को हम तभी महसूस कर सकेंगे जब हम प्रत्येक वस्तु के खिलाफ विद्रोह करेंगे। जब हम संगठित धर्म, प्राचीन परंपराओं तथा इस सड़े हुए समाज के खिलाफ विद्रोह करेंगे तभी एक मानव की भाँति सत्य की खोज कर पाएँगे।

44. कवयित्री स्वयं को असहाय और विवश क्यों कहती हैं ?

उत्तर– कवयित्री स्वयं को असहाय एवं विवश इसलिए कहती है क्योंकि

(i) उसने अपने पुत्र को हर कष्ट से बचाने का प्रयास किया, किन्तु वह फिर भी मृत्यु को प्राप्त हो गया।

(ii) उसने अपने पुत्र की रक्षा हेतु देवालयों में नारियल, दूध तथा बताशे चढ़ाए। अनेक जगह सिर झुकाया लेकिन फिर भी उसका पुत्र जीवित न बचा।

(iii) उसने पुत्र को बचाने के लिए वह जिन पर भरोसा करती थी, वे कुछ काम न आए। उसकी आँखों के समाने ही उसका प्यारा पुत्र छिन गया और वह कुछ न कर सकी।

45. ज्वाला कहाँ से उठती है ? कवि ने इसे 'अतिक्रुद्ध' क्यों कहा है ?

उत्तर– ज्वाला शोषित तथ पीड़ित व्यक्तियों के हृदय से उठती है। कवि ने इसे अतिक्रुद्ध इसलिए कहा है क्योंकि लम्बे समय से असन्तुष्ट लोगों के धैर्य की सीमा अब समाप्त हो चुकी है। अपना हक प्राप्त करने के लिए वे क्रांति करने के लिए तत्पर हो चुके हैं अब वे अपना अधिकार प्राप्त करके ही रहेंगे।

46. लहनासिंह का दायित्व बोध और उसकी बुद्धि दोनों ही स्पृहणीय हैं।' इस कथन की पुष्टि करें।

उत्तर– लहनासिंह एक बहुगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व का स्वामी है। उसके चरित्र में विद्यमान गुण समस्त कहानी में दिखाई पड़ते हैं। लेकिन उसकी दायित्व बोध और बुद्धि दोनों ही स्पृहणीय हैं। वह बचपन में एक लड़की से मिला और उससे हृदयगत त्रेम कर बैठा। यद्यपि वह न तो अपना प्रेम प्रकट कर सका और न ही उस लड़की को पा सका। फिर भी जब कई वर्षों बाद वह उसी लड़की से सूबेदारनी के रूप में मिला तो उसकी एक प्रार्थना के बदले में अपने प्राण तक दे दिए। यह उसका दायित्व-बोध ही था जिसे उसने मरकर भी पूरा किया।

47. अर्धनारीश्वर की कल्पना क्यों की गई होगी ? आज इसकी क्या सार्थकता है ?

उत्तर– अर्धनारीश्वर की कल्पना शिव और शक्ति के बीच पूर्ण समन्वय दिखाने के लिए की गई होगी। वहीं अर्धनारीश्वर की कल्पना में कुछ इस बात की भी संकेत है कि नर-नारी पूर्ण रूप से समान हैं एवं उनमें से एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते।

48. कहानी के आधार पर मालती के चरित्र के बारे में अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– मालती इस कहानी की प्रमुख पात्र है। वह कथ्य में प्रारंभ से लेकर अंत तक विद्यमान है। कहानी के आधार पर उसके चरित्र के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं–

(i) एकांकी जीवन से त्रस्त नारी–मालती एकाकी जीवन से त्रस्त एक नारी है उसका पति काम में इतना अधिक व्यस्त रहाता है कि उसका पूरा ख्याल नहीं रख पाता है।

(ii) अपने में खोई रहने वाली नारी–मालती एकाकी जीवन बिताने के कारण अपने में खोई रहती है। इसी कारण जब लेखक उसके घर आता है तो वह कुछ अनमने ढंग से बातचीत करती है।

(iii)यत्रवत् जीवन–मालती का जीवन एक यंत्र की भांति निश्चित ढर्रे पर चल रहा है। उसमें किसी प्रकार का उल्लास तथा रोचकता नहीं है।

(iv) कुशल गृहिणी–मालती एक कुशल गृहिणी है। वह घर के समस्त कामों को बड़े ही कुशल ढंग से करती है।

(v) संवेदनशीलता की कमी–नीरस, ऊबाऊ तथा एकाकी जीवन जीने के कारण मालती की संवेदनशीलता जैसे समाप्त हो गई है। तभी तो वह अपने एकमात्र बच्चे के गिरने पर बड़े ही सहज शब्दों में कहती है, 'इसके चोटें लगती ही रहती हैं, रोज ही गिर पड़ता है।'

49. अधिनायक कविता का भावार्थ लिखें।

उत्तर–कविता का संक्षिप्त भावार्थ–प्रस्तुत कविता रघुवीर सहाय के काव्यसंग्रह 'आत्महत्या के विरुद्ध' से ली गई है। यह एक व्यंग्य कविता है। ऐसी व्यंग्य कविता जिसमें हास्य नहीं, आजादी के बाद के सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण तीक्ष्ण कटाक्ष है। राष्ट्रीय गान में निहित 'अधिनायक' शब्द को लेकर यह व्यंग्यात्मक कटाक्ष है। स्वाधीनता प्राप्त होने के इतने वर्षों बाद भी आम आदमी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया। कविता में 'हरचरना' इसी आम आम-आदमी का प्रतिनिधि है। वह एक स्कूल जानेवाला बदहाल गरीब लड़का है जो अपनी आर्थिक, सामाजिक हालत के विपरीत औपचारिकतावश सरकारी स्कूल में पढ़ता है। राष्ट्रीय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में वह 'फटा सुथन्ना' पहले वही राष्ट्रगान दुहराता है जिसमें इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी न जाने किस 'अधिनायक' का गुणगान किया गया है। सत्ताधारी वर्ग बदले हुए जनतांत्रिक संविधान से चलती इस व्यवस्था में भी राजसी ठाठ-बाट वाले भड़कीले रोब-दाब के साथ इस जलसे में शिरकत कर अपना गुणगान अधिनायक के रूप में करवाए जा रहा है। कविता में निहितार्थ ध्वनि यह है मानी इस सत्ताधारी वर्ग की प्रच्छन्न लालसा हो सचमुच अधिनायक अर्थात् तानाशाह बनने की।

❍❍❍

संक्षेपण

उपर्युक्त शीर्षक देकर निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण करें :

01. ईश्वर को न तो मानव के प्रयासों की अपेक्षा है और न मानव से अपने अनुग्रहों को प्रतिदान ही चाहता है। वह स्वयं राजाधिराज है। उसके संकेत मात्र से उसके असंख्य गण पृथ्वी, आकाश और सागर छात्र डालने है। उनके समझ क्षुद्र मानव के प्रयासों का कोई मूल्य नहीं। जो मनुष्य उसके निर्धारित पथ पर प्रसन्नतापूर्वक चलता है, वही ईश्वर का सच्चा सेवक है। जिसे ईश्वर में अविचल श्रद्धा है, सांसारिक दृष्टि से कोई काम न करने पर भी उसकी गणना ईश्वर के सेवकों में होती है, उसका जीवन निरर्थक नहीं होता।

शीर्षक

उत्तर: सच्चा ईश्वर सेवक

सर्वशक्तिमान ईश्वर को क्षूद्र मानव प्रयासों से नहीं अपितु अविचन श्रद्धा से ही पाया जा सकता है। ईश्वर साधक का जीवन ही सफल होता है।

02. किसी राष्ट्र या जाति में संजीवनी शक्ति भरने वाला साहित्य ही है। इसलिए यह सर्वताभावेन संरक्षणीय है। सब कुछ खोकर यदि हम उसे बचाये रहेंगे तो फिर इसी के द्वारा हम सब कुछ पा भी सकते हैं। इसे खोकर यदि कुछ पा भी लेंगे तो फिर से इसे कमी न पा सकेंगे। कारण, हमारे पूर्वजों का चिरसंचित ज्ञानवैभव ही साहित्य है। अन्य लौकिक वैभव नश्वर हैं। यह अविनाशी है। इसलिए इसका पल्ला जो पकड़े रहेगा वह अमर रहेगा।

उत्तर: शीर्षक :- साहित्य : संजीवनी शक्ति

किसी राष्ट्र या जाति में संजीवनी शक्ति भरने वाला साहित्य ही है। इसलिए यह सर्वतोभावेन संरक्षणीय है। इसके अभाव में हम कुछ भी नहीं पा सकेंगे। अन्यान्य लौकिक वैभव नश्वर है। इसलिए इसकी पकड़े रहने वाला व्यक्ति अमर रहेगा।

03. भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। भारतीय त्योहार मुख्य रूप से फसलों के त्योहार है। इसका कारण है, भारत का कृषि-प्रधान देश होना। लगभग सभी त्योहार धर्मो से संबंधि त हैं। भारत अनेक धर्मों का देश है। यहाँ हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख, पारसी, ईसाई और इस्लाम धर्म को मानने वाले लोग रहते हे। सभी धर्मो को मानने वालो को अपने-अपने धर्म पालन और त्योहार मनाने की स्वतंत्रता है। इसलिए धार्मिक त्योहार भी विविधता लिए हुए है। इनसे एक-दूसरे के धर्मों को जानकर अच्छे मनुष्य बनने का भाव जागृत होता है। दशहरा, दीपावली, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, ईद, मुहर्रम, गुरु-पर्व, क्रिसमस, महावीर-जयंती आदि धार्मिक त्योहार है।

उत्तर: शीर्षक : त्योहारों का देश : भारत

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। मुख्यत: यहाँ त्योहार फसलों से संबंधित है, क्योंकि यह कृषि-प्रधान देश है। साथ ही विभिन्न धर्मो-समुदाय के लोग यहा बसते हैं। अत: यहाँ के धार्मिक त्योहार विविधता लिए है। प्रत्येक धर्म अंच्छे मनुष्य बनने का भाव जागृत करतें हैं और सभी भारतवासी मिलजुलकर सभी त्योहार मनाते है।

04. ज्ञानी लोग प्राय: मौन साधना इसलिए किया करते हैं कि उनकी जिह्वा से कभी आवेश में या उत्तेजना में अचानक कोई ऐसा कुवाक्य न निकल जाए, जिससे संसार को मुँह दिखाने में शर्म मालूम पड़े और उस समय ज्ञान एवं विद्वत्ता के होते हुए भी हम अपने को सुखी न कर सकें। जितनी मौन साधना की जाएगी, उतनी ही अधिक वाणी को सद्गति प्राप्त होगी तथा आत्मा को विश्व-तोषिणी शांति मिलेगी। प्राचीन भारत के ऋषि-मुनि निर्जन विपिन में वर्षो तक मौन-साधना करके आत्मा के लिए दृढ़ चरित्र और जिह्वा के लिए शीतल अमृत वाणी उपलब्ध करते थे।

उत्तर: शीर्षक : ज्ञानियों की मौन साधना

ज्ञानी मौन साधक होते हैं। वे मौन रहकर आत्मा के लिए दृढ़ चरित्र और जिह्वा के लिए अमृत वाणी उपलब्ध कराने वाले होते हैं। ज्ञानी कुवाक्य निकालने से डरते हैं।

05. जीवन का वास्तविक आनन्द मनुष्य को अपने श्रम से प्राप्त होता है। जो सुबह से शाम तक अपना खून-पसीना एक करते हुए कर्म के क्षेत्र में डटा रहता हैं, चिंतायें उससे दूर भागती हैं। ऐसे व्यक्ति को व्यर्थ की बातें सोचने का अवसर ही नहीं मिलता। परिश्रमी व्यक्ति की किसी बात की कमी नहीं। उसे अपनी आशाओं पर विश्वास होता हैं। फिर वह किसी के सामने हाथ फैलाये क्यों ? वह जानता है कि उसके पास दो हाथ हैं जिनसे अपने भाग्य का निर्माण किया जा सकता है।

उत्तर: शीर्षक-जीवन का आनंद ।

जीवन में कर्म को प्रधान रखने से कोई कमी नहीं होती है। कर्म से ही भाग्य का निर्माण होता है और कर्म ही जीवन का सुख है।?

❍❍❍

निबंध

हमारी राष्ट्रीय भाषा : हिन्दी

मनुष्य ने अपने भावों को व्यक्त करने के लिए भाषा का अविष्कार किया। प्रत्येक मनुष्य अपने भावों को, अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। विश्व में हर देश की अपनी एक अलग भाषा है।

किसी-भी देश में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा को उस देश की 'राष्ट्र भाषा' कहते हैं। किसी भी राष्ट्र में अनेक जातियों के लोग रहते हैं तथा सबकी भाषायें भी अलग होती हैं। परन्तु देश की एकता को बनाए रखने के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है, जिसका प्रयोग नागरिक कर सके तथा राष्ट्र के सभी सरकारी कार्य उसी भाषा में किए जाते हैं।

प्रत्येक मनुष्य के मानसिक तथा बौद्धिक स्तर के विकास के लिए राष्ट्र भाषा आवश्यक है। मनुष्य चाहे कितनी ही भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर ले परन्तु अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उसे अपनी भाषा की शरण लेनी ही पड़ती है।

हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में भारतीय संविधान में स्वीकार किया गया था। भारत में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य कई भाषाओं बोली जाती हैं। परन्तु राष्ट्र भाषा का गौरव हिन्दी को ही प्राप्त है। हमारे देश में समय-समय पर अनेक भाषाओं का विकास हुआ। प्राचीन काल में हमारे राष्ट्र में बोली जाने वाली भाषा संस्कृत थी, उसके पश्चात् मुगलों के समय में उर्दू को प्राथमिकता दी जाने लगी तथा अंग्रेजों के समय में अंग्रेजी भाषा ने सारे राष्ट्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया, परन्तु अंग्रेजों के जाने के पश्चात् भी अंग्रेजी भाषा का अन्त नहीं हुआ, इसी समस्या को देखते हुए भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा का सम्मान दिया गया।

हिन्दी भाषा भारत के सबसे ज्यादा क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा है। जिसे देश के लगभग 37 करोड़ लोग बोलते हैं, तथा यह आसानी से समझ में भी आ जाती है।

देश के संस्थान जैसे-हिन्दी निदेशालय, नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि संस्थानों ने हिन्दी के विकास तथा प्रचार के लिए कई प्रयत्न किए हैं। इनके साथ हमारा भी कर्त्तव्य है कि हिन्दी के प्रति हम उदार दृष्टिकोण अपनायें।

प्राकृतिक आपदा

संकेत-बिंदु : 1. प्राकृतिक आपदाएँ 2. दोषी कौन 3. सरकार की जिम्मेदारी 4. नागरिकों के कर्तव्य 5. उपाय ।

'कहर हुआ सुनामी का चक्रवात'
भूस्खलन या फिर भूचाल का डर हुआ,
कभी बाढ़ का, कभी सूखे का कौन है उत्तरदायी इनका

प्रकृति या दोष है यह इंसान का।'

जब हम हजारों-लाखों को बेघर होते देखते हैं, घायल होते और मरते देखते हैं, तो यह प्रश्न हमारे सामने आ खड़ा होता है कि इनके लिए आखिर कौन जिम्मेदार है ? प्राकृतिक कारणों के साथ-साथ मनुष्य भी पर्यावरणीय असंतुलन के लिए उत्तरदायी है। वास्तव में प्राकृतिक आपदा प्राकृति का मानव के प्रति रोष है जिसकी अभिव्यक्ति धरती से क्षणभर में जीवन का अस्तित्व मिटाने की क्षमता रखती है। प्रकृति का यह रोष, यह तांडव देख मानव सिहर उठता है, किंतु जन-जीवन के सामान्य होते ही सब कुछ भूल जाता है। वह अपनी भूल से तनिक भी सीख नहीं लेता तथा लगातार वृक्षों की कटाई कर अपने क्षणिक भोग की वस्तुओं का निर्माण करता जाता है और फिर सुनामी जैसी महाआपदा को निमंत्रण देता है।

आज ऐसे उपायों की आवश्यकता बहुत अधिक है जिनकी योजना पहले गई हो, सबको उनकी जानकारी हो तथा यथाबसर उनका उपयोग किया जा सके।

मौसम की चेतावनी देकर, बचाव कार्य तथा प्राथमिक उपचार के बारे में विशेष प्रशिक्षण देकर लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है। अच्छे निर्माण कार्यों की समझ हमारे लिए बहुत आवश्यक है ताकि घरों, विद्यालयों तथा संस्थानों को सुरक्षित रखा जा सके। आपदारोधी इमारतों का निर्माण करना तथा विद्यमान इमारतों की मरम्मत तथा उनका नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक है।

केंद्रीय स्तर पर जहाँ वस्तुओं और वित्तीय संसाधनों की पूर्ति की जाती है, वहाँ आपदाओं से निबटने का मुख्य दायित्व राज्य सरकार का है। जिला प्रशासन सभी गतिविधियों का केंद्र-बिंदु होता है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटे-बड़े संगठन भी निरंतर सहायता एवं बचाव कार्यों में लगे रहते हैं।

हम सुसंस्कृत, सुसभ्य कहलाते वाले प्राणी आए दिन होने वाली आपदाओ के लिए कभी सरकार को कोसते हैं तो कभी ईश्वर से शिकायत करते हैं, लेकिन स्वयं हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। जरा सोचिए, किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा का शिकार सबसे अधिक कौन होता है? आम आदमी ही जब इसकी चपेट में आता है, तो क्यों न हम सब मिलकर कुछ ऐसे उपाय करें, जिससे इन आपदाओं का सामना किया जा सके। अपने मोहल्ले के लोगों के साथ मिलकर पहले से ही सुरक्षा योजनाएँ बना ली जानी चाहिए और समय-समय पर उनका अभ्यास करना चाहिए। लोगों को जागरूक करने के लिए अनेक अभियान चलाए जाने चाहिए।

समाज में इन आपदाओं से संबंधित सावधानी बरतने तथा उचित जानकारी पहुँचाने के लिए सबसे अच्छा उपाय है- विद्यालयों में बच्चों को जागरूक करना।

हम प्राकृतिक आपदाओं को रोक तो नहीं सकते किंतु उचित जानकारी, सामुचित व्यवस्था और संगठित उपायों से इनके हानिकारक प्रभाव को कम अवश्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त संकट के समय हमें साहस व धैर्य से इनका सामना करना चाहिए।

चुनाव प्रक्रिया

जनतंत्र में, जनता की, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा चुनी गई सरकार होती है। समस्त राजनैतिक शक्ति जनता के हाथों में रहती है, जो भारत में लोकसभा के नए सदस्यों के चुनाव के लिए पांच वर्ष में एक बार मिलते हैं। जो केन्द्रीय मंत्रिमण्डल का गठन करते हैं तथा सरकार चलाते हैं। सबसे बड़ी पार्टी प्रधानमंत्री का चुनाव करती है जो संघीय मंत्रिमण्डल का गठन करता है।

लोकसभा के सदस्यों के चुनाव के लिए लोग मतदान केन्द्रों पर जाते हैं, जहां वे अपना वोट डालते हैं। केवल स्वस्थ मस्तिष्क वाले स्त्री-पुरूष तथा 18 वर्ष या उससे ऊपर की आयु के लोग अपना वोट डालने के योग्य होते हैं। विभिन्न राजनैतिक पार्टियों अपने उम्मीदवार खड़े करती हैं। इनके अतिरिक्त स्वतंत्र उम्मीदवार भी मैदान में होते हैं। लोगों को उम्मीदवारों में से अपनी पंसद का चुनाव करना होता है। जो उम्मीदवार सबसे अधिक वोट पाता है, वह विजयी होता है।

इसी प्रकार, राज्य विधानसभाओं, नगर समितियों तथा यहां तक कि ग्राम पंचायतों के लिए भी चुनाव होते हैं। सभी दशाओं में चुनाव की प्रक्रिया समान होती है।

मतदान केन्द्र बनाए जाते हैं जहां लोग जाते हैं तथा अपना वोट डालते हैं। लोग केवल उन्हीं क्षेत्रों में वोट डाल सकते हैं, जहां से वे सम्बन्धित होते हैं तथा जहां उनके नाम मतदाता के रूप में पंजीकृत होते हैं। जो लोग वोट डालने योग्य होते हैं, वे पंक्तियों में खड़े होते हैं तथा मतदान अधिकारी रजिस्टर में उनके नामों की जांच करता है। तब प्रत्येक मतदाता को एक पर्ची दी जाती है। पर्ची पर वह उस उम्मीदवार के नाम पर मोहर लगाता है। जिसे वह चुनना चाहता है। उसकी अंगुली पर अमिट स्याही से चिन्ह लगा दिया जाता है, जिससे कि वह पुनः मतदान के लिए न आ सके।

अपने हाथ में मतदान पर्ची लिए वह तम्बू में जाता है जहां वह बिल्कुल अकेला होता है तथा पर्ची को सील बन्द किए एक बक्से में डाल देता है ताकि कोई उससे छेड़छाड़ न कर सके। अपनी कागज की पर्ची को बक्से में डालने के पश्चात वह बाहर आ जाता हैं ? तथा उसका कार्य पूरा हो जाता है।

अगले पाँच वर्ष तक वह कुछ नहीं कर सकता है, अपितु साधारणतः अपने हाथ बांध कर अपने द्वारा चुने गए प्रतिनिधि द्वारा राजनीति की सर्कस में किए जाने वाले प्रदर्शन को देखता है।

पर्यावरन संरक्षन

भूमिका : मनुष्य और प्रकृति का संबंध सनातन है। प्रकृति मनुष्य की सहचारी है। दोनों एक दूसरे के पूरक तथा पोषक हैं। मनुष्य ने प्रकृति गोद में जन्म लिया है तथा उसके संरक्षण में पला-बढ़ा है, इसी प्रकार पेड़-पौधे भी मनुष्य के संरक्षण में पलते-बढ़ते हैं। प्रकृति ने मनुष्य की प्रकार की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति की है। मनुष्य आजीवन वृक्षों पर आश्रित रहता है।

वृक्षों से लाभ : पेड़-पौधे मनुष्य के लिए लाभदायक ही नहीं अनिवार्य हैं। पेड़-पौधों की लकड़ी से बने खिलौने बच्चों का मन बहला, पेड़-पौधे ही यौवन को झूले पर झुलाते हैं, तो पेड़-पौधे ही बुढ़ापे की लाठी बनकर सहारा प्रदान करते हैं। अनाज, फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ, इमारती लकड़ियाँ, जैसी वस्तुएँ, हमें पेड़-पौधों से ही मिलती हैं। पेड़-पौधे हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। वे कार्बन-डाई ऑक्साइड को ग्रहन कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। वृक्ष न केवल प्रदूषण की रोकथाम करते हैं अपितु मिट्टी के कटाव को नियंत्रित करते हैं, वर्षा में सहायक होते है। मिट्री को उर्वरा बनाए रखते हैं, वन्य प्राणियों को संरक्षण प्रदान करते हैं तथा भूस्खलन, सूखा, भूकंप जैसे प्राकृतिक विपदाओं को रोकने में भी सहायक हैं।

वृक्षों की अंधाधुंध कटाई तथा उसके दुष्परिणाम : आज बढ़ती हुई जनसंख्या की आवास संबंधी कठिनाई के कारण तथा उद्योग लिए भूमि की कमी को पूरा करने के लिए वनों की अंधाधुध कटाई करने के लिए मनुष्य के पास कोई विकल्प नहीं बचा है। वृक्षों को काट सड़कें बनाई जा रही हैं, औद्योगिक इकाईयाँ स्थापित की जा रही हैं तथा आवासीय कॉलोनी का निर्माण किया जा रहा है। परिणामतः प्रदूषण की जा रहा है तथा अनेक प्रकार की प्राकृतिक विपदाओं का खतरा बढ़ गया है। पर्यावरण प्रदूषित हो गया है तथा प्राकृतिक असंतुलन बढ़ता जा अनेक दुर्लभ प्रजाजियाँ लुप्त हो गई हैं तथा भूक्षरण जैसी भयंकर समस्याओं का विस्तार होता जा रहा है।

वृक्षारोपण अभियान : आज वृक्षारोपण के महत्व को स्वीकार किया जा रहा है। वृक्षों की कटाई के विरुद्ध कानून बनाया गया है। उपयोगिता को दृष्टिगेत रखते हुए वन महोत्सव की शुरुआत की गई है जो जुलाई माह में मनाया जाता है। वृक्षों की कटाई के विरोध में आज राजनैतिक पार्टियों ने भी कमर कस ली है। इस संदर्भ में 'चिपको आंदोलन' की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है। फिर भी स्वार्थी-लोभी लोग जरूरतों को पूरा करने के लिए वृक्षों की कटाई करने में नहीं हिचकतें। इसलिए वृक्षों की कटाई रोकने के लिए कड़ाई से काम करना होगा।

उपसंहार : आज मनुष्य को यह जान लेना चाहिए कि पेड़ों पर गिरती उसकी कुल्हाड़ी पेड़ों पर नहीं वरन् उसी के पैरों पर गिरती है। आदमी को यह भली-भाँति जान लेना चाहिए कि वृक्षारोपण करने तथा पहले से उगे वृक्षों के संरक्षण में ही उसका हित निहित है। वृक्षों की उपयोग हमारे ऋषि-मुनियों ने पहचानी। इसीलिए हमारी संस्कृति में वृक्ष काटना एक भयंकर पाप माना जाता था तथा वृक्षारोपण करना एक पुण्य,

यह कहा जाता था - 'एक वृक्ष लगाने से उतना ही पुण्य मिलता है जितना दस गुणवान पुत्रों का यश'। वृक्षों की उपयोगिता को देखकर 1952 में वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया गया जिसे वन महोत्सव के नाम से भी जाना जाता है। अतः मनुष्य का कर्तव्य है कि वृक्षों का सम्मान करें।

आज न वैसा वातावरण है, न आज के उन नेताओं के पास जो छात्रों को राजनीति में भाग लेने के लिए उकसाते हैं-गांधीजी जैसा व्यक्तित्व एवं उच्च आदर्श हैं। अतः छात्रों को ऐसे नेताओं के चक्कर में न पड़ अपने अध्ययन के प्रति ईमानदार रहना चाहिए।

विज्ञान के चमत्कार/विज्ञान : अभिशाप या वरदान

आज का युग विज्ञान के चमत्कारों का युग है। मानव आज सारी भौतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर चुका है। मानव ने भौतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर ही रेल, तार, मोटर, हवाई जहाज, रेडियों, दूरदर्शन, एटम बम, हाइड्रोजन बम तक बना लिये हैं। इसी विजय की करिश्मा है मानव का चन्द्रमा पर जाना।

प्राचीन काल में मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए पैदल, बैलगाड़ी, घोड़ा-गाड़ी आदि का इस्तेमाल करता था। इन साधनों से उसे अपनी यात्रा को पूरा करने में महीनों लग जाते थे। परन्तु अब मानव मोटर, रेल, हवाई जहाज द्वारा वर्षो की यात्रा को घंटों या दिनों में तय कर लेता है। समुद्र की बाधा के कारण एक देश दूसरे देश के निकट नहीं आ पाता था, परन्तु युग के वैज्ञानिकों ने समुद्र से भी अपना रास्ता ले लिया और समुद्री जहाज का निर्माण किया। इस प्रकार दुनिया के देशों में पारस्परिक मैत्री और सद्भावना कायम करने में विज्ञान ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। इन दूरगामी वाहनों से मनुष्य के बहुमूल्य समय का बचत ही नहीं होती अपितु अकाल, बाढ़, भूकम्प आदि आपत्तियों के साथ-साथ व्यापारकि संबंधों में भी ये साधन बड़े सहायक सिद्ध हुए हैं। पुरातन युग में संदेश भेजना भी कष्टकर था। वाहकों के द्वारा ही संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जाते थे जिनके उत्तर के लिए महीनों इन्तजार करना होता था। परन्तु अब टेलीग्राम के द्वारा संदेश कुछ ही घंटों में पहुँचाए जा सकते हैं। यहाँ तक कि टेलीफोन द्वारा तो इच्छित व्यक्ति से सीधी बातचीत भी की जा सकती है।

मनोरंजन के साधनों के विकास में भी विज्ञान ने अपनी अहम भूमिका निभायी है। सिनेमा, रेडियों, दूरदर्शन, वीडियों, टेपरिकार्डर इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में इन उपकरणों से बड़ी सहायता मिलती है। किताबों की छपाई भी अब बेहतरी ढंग से होती है, इसमें विज्ञान का चमत्कार ही प्रमुख है।

कृषि उत्पादन के क्षेत्र में भी विज्ञान ने ट्रैक्टर के निर्माण से समय को बचाने का कार्य किया है। कीटनाशक दवाओं और उर्वरकों के इस्तेमाल से ही आज के उत्पादन को कई गुना बढ़ाया जा चुका है।

अंतरिक्ष के क्षेत्र में विज्ञान ने महत्त्वपूर्ण जानकारियों से मानव जाति को नवाजा है। विज्ञान के बल पर ही मनुष्य चाँद तथा कई अन्य ग्रहों के बारे में दुर्लभ जानकारियाँ प्राप्त की है। उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थिर कर कई विपदाओं की जानकारी पहले प्राप्त की जा सकती है।

सच्चाई यह है कि विज्ञान को अभिशाप बनाने में बेचारे विज्ञान का कोई दोष नहीं। इसे अभिशाप बनाने वाले वे लोग हैं जो अपने स्वार्थ के कारण इसकी शक्तियों का दुरुपयोग करते हैं। वास्तव में विज्ञान तो एक आज्ञाकारी सेवक है जो मानव के सुख, समृद्धि और कल्याण के लिए कुछ भी कर सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि राजनीति तथा नैतिक मूल्यों में तथा धर्म और विज्ञान में समन्वय होना चाहिए जिससे कि इस अभूतपूर्व शक्ति को केवल वरदान के रूप में प्रयुक्त किया जा सके।

''जिसने नई सभ्यता दी है, मानव की संतान को,
श्रद्धायुत प्रणाम है मेरा, इस विज्ञान महान को। ''

वस्तुतः वर्षा ऋतु से सारी प्रकृति धन्य हो जाती है। पेड़ों में हरे-हरे पत्ते आ जाते हैं, फूल खिलने लगते हैं तथा सूखी-मुरझाई पत्तियाँ मुस्कराने लगती हैं। लेकिन कभी-कभी वर्षा की अधिकता धरती के जनजीवन को दुःखी भी कर जाती है। अधिक जल-जमाव से फसलें नष्ट हो जाती हैं। नदियों का जल उफनाने से सुरक्षा में लगाए गए बाँध टूट जाते हैं तथा लोगों के घरों में बाढ़ का पानी घुसकर कहर बरपाने लगता है।

(घ) समय का महत्त्व - अंग्रेजी में कहा गया है- "Time is Money" , अर्थात् 'समय ही धन' है। वाकई यह सत्य कथन है तथा हमें इस पर गंभीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिए। सच तो यह है कि बीता हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता, चाहे हम इसके लिए लाखों रुपयें क्यों न खर्च कर दें। इसीलिए यह दोहा उपदेश के रूप में आज भी जन-जन में प्रसारित है कि-

'काल करे सो आज कर आज करे सो अब!
पल में परलै होइगा बहुरि करोगे कब!!

शहरी जीवन

शहरी के वातावरण में व्यतीत होनेवाला जीवन शहरी जीवन कहलाता है। एक अच्छा शहर आधुनिक जीवन की सारी सुविधाएँ प्रदान करता है। सुकरात ने ठीक ही कहा है- 'मैदान या वृक्ष हमें कुछ नहीं सिखातें लेकिन शहर के लोग ज्ञान देते हैं। अंग्रेजी कवि मिल्टन भी शहरी जीवन की प्रशंसा करते हैं- 'गुम्बद वाले शहर तथा व्यस्त मनुष्य के कोलाहल मुझें सुख पहुँचाते हैं।'

सुविधाओं के पूर्णरूपेण उपभोग के लिए शहरी जीवन आवश्यक है। अच्छी शिक्षा, आरामदायक परिवहन, अच्छी चिकित्सा की सुविधाओं के अतिरिक्त सभी प्रकार की कलाओं के विकास का अवसर शहर में विद्यमान है। अच्छी सड़कें एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करने की सुविधा प्रदान करती है। महामारी या प्राकृतिक प्रकोप के समय शहर में बचाव की शीघ्र ही व्यवस्था हो जाती है। विभिन्न धंधों, रूचि तथा कई राज्यों के लोग शहरों में निवास करते हैं। इन लोगों के साथ सम्पर्क हमारे पूर्वाग्रहों को समाप्त कर हमारे दृष्टिकोण को विस्तृत करता है। शहर के लोग सतत् अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं लेकिन शहरी जीवन मिश्रित वरदान है। शहर के दोष-अनेक हैं। शहर में कोलाहल अधिक रहता है। यहाँ का जीवन कष्टकर होता है। यहाँ मिल के धुएँ पूरे वातावरण को धुमिल बना देते हैं। गन्दी गलियों से बदबू आती रहती है। स्वच्छ और शुद्ध हवा तो कभी मिल ही नहीं सकती। यहाँ जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण आदि बढ़ते रहते हैं। फलतः शहर का जीवन आज अभिशाप बन गया है।

शहरी जीवन कितना भी बुरा क्यों न हो, कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि मानवता के नवीनतम विकास तथा अत्याधुनिक उपलब्धियाँ शहर में ही संभवतः देखी या आसानी से व्यवहार में लायी जा सकती हैं। शहर में ही अपनी चातुरी तथा योग्य विस्तार का वृहत् क्षेत्र प्राप्त होता है।

मेरे प्रिय कवि / लेखक

जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहितय के श्रेष्ठ साहित्यकारों में गिने जाते हैं। उन्होंने अपने काव्य को सौन्दर्य एवं प्रेम से विभूषित कर आकर्षक बना दिया। प्रसाद जी का जन्म सन् 1888 ई० में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम देवी प्रसाद था। वे सुंघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध थे। उनमें कविता-प्रेम और रसिकता भी थी। इस प्रकार सरस्वती एवं लक्ष्मी के संयुक्त मन्दिर में उनका शैशव व्यतीत हुआ।

प्रसाद जी की शिक्षा का प्रबंध घर पर ही किया गया। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू का विशद अध्ययन किया। वेदों और उपनिषदों में उनका विशेष चिन्तन और मनन रहा। इस प्रकार उन्होंने अध्ययन के बल पर साहित्य जगत् में खड़े होने के लिए एक दृढ़ आधार बना लिया। यही कारण है कि जब उन्होंने कलम उठाई तो सभी मंत्र-मुग्ध हो गए। सन् 1937 में साहित्य का यह देवता चिर निद्रा मे लीन हो गया।

रचनाएँ :-

प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की प्रत्येक विधा का सृजन किया। वे कहानीकार, उपन्यास-प्रणेता, नाटककार और श्रेष्ठ कवि थे।

'कामायनी' जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति और आधुनिक युग का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। इसमें आदि पुरुष मनु और आदि स्त्री श्रद्धा के माध्यम से मानव विकास की कथा पर प्रकाश डाला गया है। छायावादी काव्य सरोवर में 'कामायनी' सरोज के समान शोभायमान है, जिस पर रसिक भ्रमरी की गुँजार सुनाई देती रहती है।

सह-शिक्षा

सह-शिक्षा एक ऐसा ज्वलन्त विषय है, जो शिक्षा के गुरुओं के लिए एक चिन्ता का विषय रहा है। सह-शिक्षा से तात्पर्य है ऐसी शिक्षा प्रणाली जिसमें लड़के तथा लड़कियों एक साथ पढ़तें हैं।

सह-शिक्षा के विषय में हमारे देश में लोगों की धारणा सदैव गलत रही है। वह चाहते हैं कि लड़के-लड़कियाँ आरम्भिक शिक्षा अलग-अलग प्राप्त करें परन्तु वे ऐसा करके समाज में बुराइयों को बढ़ावा देते हैं। लड़के-लड़कियाँ यदि अलग-अलग पढ़ते हैं तो वे एक-दूसरे के विषय में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। जिससे उनके मन में या तो कुण्ठाऐं घर कर जाती हैं या वे गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं। जिस कारण वे पढ़ाई में ध्यान नहीं दे पाते तथा गलत संगत में पड़ कर कई बीमारियों का शिकार हो जाते है। एक-दूसरे के विषय में सही जानकारी न होने के कारण लड़कियों, लड़कों से बात भी नहीं करती तथा लड़के के विचार लड़कियों के प्रति गलत बन जाते हैं। समाज में लड़के-लड़कियों के बीच अन्तर होने की विचारधारा लगातार बढ़ रही है।

इसके विपरीत यदि हमारे देश में बचपन से ही लड़के-लड़कियों को साथ-साथ पढ़ाया जाए तो हमारे देश के लोगों की विचारधारा ही बदल जाएगी तथा सकारात्मक मानसिकता का विकास होगा।

लड़के-लड़कियों को एक दूसरे के विषय में बचपन से ही जानकारी प्राप्त होती है तथा उनमें पैदा होने वाला उत्सुकता का जबाव उन्हें स्वंय ही प्राप्त हो जाता है। वह अपने जीवन में सदैव सफल होते हैं क्योंकि उनमें किसी के भी सामने बात करने में कोई हिचक नहीं होती है।

उनमें एक-दूसरे के प्रति आदर भाव स्वंय ही पैदा हो जाता है।

हमें हमारे देश में उच्च शिक्षा में ही नहीं बचपन से ही सह-शिक्षा पर जोर देना चाहिए, जिससे हमारे देश के लोगों के साथ-साथ हमारा देश भी उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सके।

मेरी सबसे प्रिय पुस्तक

अब तक मैंने जिन थोड़ी-सी पुस्तकों का आद्यंत पारायण किया है, उनमें कालिदास की 'शकुंतला', महात्मा गाँधी की 'आत्मकथा', 'गीता',शेक्सपियर का 'हैमलेट' तथा तुलसीदास का 'रामचरितमानस' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये सभी मुझे अच्छी लगी, किन्तु 'रामचरितमानस' जिस प्रकार मेरे मन-प्राणों पर छा गया, अन्य कोई नहीं । महात्मा गाँधी ने अपने जीवन में सर्वाधि क प्रभाव डालनेवाली जिन पुस्तकों का उल्लेख किया है उनमें उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। पढ़ने के पश्चात् ऐसा लगा कि 'रामचरितमानस' जीवन-निर्माणक तत्वों से परिपूर्ण हैं।

'रामचरितमानस' की सर्वश्रेष्ठता का स्वीकरण संसार के बड़े-बड़े लेखकों ने किया है। जॉर्ज ग्रियर्सन का कहना है कि ईसाई जनता में 'बाइबिल' का जितना प्रचार है, उससे अधिक 'रामचरितमानस' का हिन्दू जनता में प्रचार और आदर है। यदि हिन्दी के विशाल सागर में केवल रामचरितमानस रह जाय, तो भी हिन्दी दरिद्र नहीं हो सकती।

'रामचरितमानस' का आदर दीन-दलितों के पर्णकुटीरों से लेकर महाराजाओं के राजप्रासादों तक समान रूप से है। यदि एक ओर निरक्षर-भट्टाचार्य भैंस चराते हुए इसकी चौपाइयाँ गुनगुनाते हैं, तो दूसरी ओर बड़े-बड़े पंडित इसकी चौपाइयाँ मंत्र की तरह जपते हैं।

'रामचरितमानस' यदि एक ओर वैदिक ऋचाओं की तरह ईश्वरीय काव्य है तो दूसरी ओर गीता की भाँति धर्मोपदेश। यदि एक ओर यह 'मनुस्मृति' है, तो दूसरी ओर उत्तमोत्तम काव्य का निदर्शन। संसार में 'बाइबिल', 'कुरान', 'ऐज यू लाइक इट', 'गीता' और 'मेघदूत' जैसे अनेक ध र्मग्रन्थ तथा काव्यग्रन्थ अलग-अलग मिल जा सकते हैं, किन्तु जहाँ -गीता' और -मेघदूत', 'बाइबिल' और 'ऐज यू लाइक इट' एक सूत्र में गूँथें हुए हों-इसका एक मात्र उदाहरण हैं- 'रामचरितमानस' ।

'रामचरितमानस' 'हरि अनंत हरिकथा अनंता' को भाँति अनंत गुणोवाला है। यह हमारे हिन्दू समाज की आधारशिला है और हमारी परमोज्ज्वल संस्कृति का तपः पूत आकाशदीप है।

राष्ट्रीय एकता

किसी-भी राष्ट्र के लिए एकता का होना अत्यन्त आवश्यक है। भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में राष्ट्रीय एकता न होती तो भारत कई भागों में बँट गया होता। भारत में धर्म, भाषा, प्रान्त, रंग, रूप, खान-पान, रहन-सहन आदि में इतनी विविधता है कि देश में एकता होना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है परन्तु हमारे देश में फिर भी लोग एक साथ रहते हैं, एक-दूसरे से प्रेम करते हैं तथा एक-दूसरे का दुख-सुख में साथ देते हैं।

भारत की एकता को खण्डित करने का अंग्रेजों तथा पाकिस्तान ने बहुत प्रयास किया परन्तु हमारी जनता ने उनके प्रयासों को कभी सफल नहीं होने दिया।

परन्तु जहाँ विदेशी ताकत का हमने मुकाबला किया वहीं हमारे देश के स्वार्थी नेता अपना कार्य सिद्ध करने के लिए हमारे देश में दंगे करवाते हैं तथा देश को तोड़ने की कोशिश करते हैं। हमारे देश के नागरिकों को उनके इरादों को कभी कामयाब नहीं होने देना चाहिए तथा समझदारी से काम लेना चाहिए तथा देश की एकता को बना कर रखना चाहिए।

जितनी जातियाँ तथा धर्म भारत में है, उतने धर्मों के लोग किसी अन्य देश में नहीं। रहते, फिर भी उन देशों में दंगे होते रहते हैं तथा देशों में सदैव अशांति बनी रहती है। इसके विपरीत भारत में रहने वाले विभिन्न धर्मों के लोग एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहते हैं। कभी-कभी वे लोग अपने मार्ग से हट जाते हैं तथा स्वार्थी नेताओं की बातों में आकर आपस में झगड़ा भी करते हैं परन्तु वह जल्दी ही सही रास्ते पर आ जाते हैं तथा आपस में भाई-भाई की तरह रहते हैं।

राष्ट्रीय एकता को और मजबूत करने के लिए सरकार को अनेक उपाय करने चाहिएं। उसे भेदभाव पैदा करने वाले नियमों तथा कानूनों को खत्म कर देना चाहिए। अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा देना चाहिए, राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाले लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा सबसे अधिक देश के नागरिकों को सरकार का साथ देना चाहिए।

बाल श्रमिक

बाल श्रम भारत में ही नहीं अन्य कई देशों में भी विवादित तथ्य है। यह देश की प्रगति तथा औद्योगीकरण के लिए नुकसानदायक है। बाल श्रम केवल इसीलिए करवाया जाता है क्योंकि बच्चे आसानी से तथा कम पैसों में काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। भारत में बेरोजगारी बाल श्रम का एक मुख्य कारण है।

कई कार्यो के लिए औरतें तथा बच्चे आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं तथा यह कम पैसों में काम करने को तैयार हो जाते हैं। कर्मचारियों का चयन करने के लिए तो विज्ञापन देने पड़ते हैं परन्तु बाल श्रमिक बिना किसी खर्च के उपलब्ध हो जाते हैं।

अधिकतर इन बच्चों को आसान कार्य दिए जाते हैं इसलिए इन्हें किसी प्रकार की ट्रेनिंग

नहीं दी जाती। न तो ट्रेनिंग में पैसा खर्च करना पड़ता है और न ही समय बर्बाद होता हैं।

बाल श्रम, समाज के लिए दुश्मन का कार्य करता है। सरकार, समाजवादी समाज सुधारक आदि हमेशा से बाल श्रम का विरोध करते आए हैं। ज्यादातर बाल श्रमिक, बंधुआ मजदूर की तरह कार्य करते हैं तथा उनका बचपन कार्य करने मे ही बीत जाता है तथा बड़े होने पर वे बेरोजगारी का सामना करते हैं। कम पढ़े-लिखे होने के कारण उन्हें कोई-भी काम नहीं देता।

बाल श्रम को खत्म करने के लिए सरकार ने कई कानून बनाए हैं। परन्तु इन कानूनों का कोई असर नहीं पड़ा। आज बच्चों को काम के बोझ के नीचे दबाया जा रहा है। क्योंकि इन कानूनों को लागू करने में कोई-न-कोई कमी रह गई है और इसी कारण बाल श्रमिक की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

समय का सदुपयोग / महत्व

मनुष्य सृष्टि का सबसे महत्त्वपूर्ण प्राणी है और मनुष्य के जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक समय है। समय की महत्ता धन से भी अधिक है। धन नष्ट होने पर पुनः अर्जित किया जा सकता है, लेकिन नष्ट हुआ या व्यर्थ बिताया हुआ समय वापस नहीं आता। यदि व्यक्ति समय को पहचान लेता है तो वह उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है और यदि वह समय का महत्व नहीं जान पाता तो कहीं का नहीं रह जाता। इसीलिए वेद, शास्त्र धर्म, पुराण में आदि में समय के सदुपयोग पर बल दिया गया है।

जीवन तो सभी व्यतीत करते हैं, लेकिन महत्व इस बात का है कि उसने किस ढंग से समय बिताया। कर्मठ और बुधिमान व्यक्ति जहाँ एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने देते वहीं आलसी व्यक्ति हाथ पर हाथ धरकर अपना बहुमूल्य समय गँवा देते हैं। वे कल के इंतजार में व्यर्थ बैठे रहकर पछताते हैं, तभी गोस्वामी जी ने कहा है-'का वर्षा तब कृषि सुखानी'। अर्थात समय पर कार्य न करने पर पछताना ही पड़ता है। यदि किसान समय पर खेत न जोते, बीज न बोए और पानी न दे तो खेती सूख ही जाएगी। ठीक यही बात मुनष्य के जीवन पर भी लागू होती है। इसे गांधी जी ने इस प्रकार कहा है-दिन मित्रों के वेश में हमारे आते हैं और प्रकृति की अमूल्य भेंट साथ लाते हैं। अगर हम उनका सदुपयोग नहीं करते तो वे चुपचाप चले जाते हैं।

समय बलवान होता है। समय की शक्ति के आगे, राजा और रंक, सबको नतमस्तक होना पड़ता है। इसीलिए समय का चक्र अबाधगति से चलता है, वह किसी के रोके नहीं रूकता।

समय का सदुपयोग करने में प्रकृति मनुष्य का आदर्श है। सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, ऋतुएँ, ये सब समय पर आते हैं और अपना उत्तरदायित्व पूरा करके चले जाते हैं। यदि इनमें से कोई भी अपना कार्य समय पर न करें तो सृष्टि के नष्ट होने में देर नहीं लगेगी।

मनपुष्य को जितना भी समय मिला है, उसका सार्थक ढंग से उपयोग करना चाहिए। इसके लिए उसे निरंतर कार्यरत रहना चाहिए, भले ही उसे सफलता देर से मिले, लेकिन मिलेगी अवश्य।

समय का सदुपयोग करने से व्यक्ति का चहुँमुखी विकास होता है, उसकी बुद्धि प्रखर होती

है। अतएव बुद्धिमत्ता इसी में है कि समय से एक पल को भी व्यर्थ न जाने दें। विद्यार्थी यदि समय पर अध्ययन करेगा, किसान यदि समय पर खेती करेगा और सभी व्यवसाय के लोग अपना-अपना कार्य समय पर करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा समाज और राष्ट्र विश्व में सवोत्तम स्थान पर होंगे।

यदि हमने समय नष्ट किया तो समझो खुद को नष्ट कर दिया। शेक्सपियर ने भी कहा है-मैंने समय को बरबाद किया, अब समय मुझे बरबाद कर रहा है। यदि हम समय के साथ नहीं चल सके तो हमने जीवन में कुछ नहीं पाया। समय को गवानेवाला व्यक्ति न केवल अपना नुकसान करता है बल्कि देश और समाज के लिए भी घातक होता है।

दहेज - एक समस्या / दहेज कुरीति

भारतीय सामाजिक जीवन में अनेक अच्छे गुण है। परंतु कतिपय बुरी रीतियाँ भी उसमें घुन की भाँति लगी हुई हैं। इनमें एक रीति दहेज प्रथा की भी है। विवाह के साथ ही पुत्री को दिए जाने वाले सामान को दहेज कहते हैं। आज दहेज एक सबसे बड़ी समस्या है। समय के चक्र में इस सामाजिक दहेज की प्रथा ने धीरे-धीरे अपना बुरा रूप धारण करना आरंभ कर दिया और लोगों ने अपनी कन्याओं का विवाह करने के लिए भरपूर धन देने की प्रथा चला दी। इस प्रकार दहेज प्रथा ने जघन्य रूप धारण कर लिया और समाज में यह कुरीति-सी बन गई है। अब इसका निवारण दुष्कर हो रहा है। अब तो बहुधा लड़के को बैंक का एक चेक मान लिया जाता है कि जब लड़के की शादी होगी तो लड़की वालों से दहेज के रूप में अधिक से अधिक मात्र में ध न वसूल करेंगे। और इधर लड़की का विवाह कर देने के साथ ही उसका पिता कर्ज से दब जाता है। दहेज के कारण ही कई दुर्घटनाएँ हो रही हैं, कितने ही घर बर्बाद हो जाते हैं। कितनी ही औरतें पीड़ित होकर आत्महत्या कर लेती हैं, दहेज के लिए बहुओं को जिंदा जला दिया जाता है आदि। इस प्रकार की दुर्घटनाओं से पूरा समाचार-पत्र भरा रहता है। दहेज प्रथा के दुष्परिणामों से भारत के मध्ययुगीन इतिहास में अनेक घटनाएँ भरी पड़ी हैं। धनी और निर्धन व्यक्तियों को दहेज देने और न देने, दोनों ही स्थितियों में कष्ट सहने पड़ते हैं। इस कुरीति को समाप्त करने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाना चाहिए। दहेज-प्रथा को भारतीय समाज के माथे पर कलंक के रूप में नहीं रहने देना चाहिए।

समाचार-पत्र के लाभ

समाचार-पत्र खबरों का ताजा अखबार होता है। सुबह सबेरे हमारे द्वार पर आने वाला मेहमान दैनिक समाचार-पत्र है। स्कूल जाने से खबरों की सुर्खियाँ पढ़ना मेरी आदत बन गई है। समाचार-पत्र सही समय पर न आए तो मन में कुछ-कुछ होने लगता है। हम बेचैन हो जाते है, उससे लगता है समाचार-पत्र हमारे लिए लाभकारी साथी है। उसके लाभों का वर्णन भी लाभप्रद होगा।

हमारे देश में अनेक समाचार-पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। अनेक भाषाओं में प्रकाशित ये समाचार-पत्र बहुत लोकप्रिय हैं। यहाँ दैनिक समाचार-पत्रों के लाभों पर विचार करे तो पाते है कि हिंदी और अंग्रेजी के कई राष्ट्रीय समाचार-पत्र, जैसे-नवभारत टाइम्स, दैनिक हिंदुस्तान, जनसत्ता, दैनिक जागरण और पंजाब केसरी प्रकाशित होते हैं। वे सभी लाखों की संख्या में पढ़े जाते हैं।

समाचार-पत्रों में खबरों की प्रधानता होती हैं। देश-विदेश के ताजा समाचार पाठकों को दुनिया की नई जानकारी हैं। इन समाचारों से हम विश्व से जुड़ जाते हैं। कोई भी भयानक त्रासदी को यह देश-विदेश से जोड़ देता है। पीड़ितों की सहायता के लिए सेवा-सामग्री जुटाने की होड़ सी लग जाती है। इस सेवा-सामग्री से कितने ही प्रभावित लोगों को आवास, भोजन और स्वास्थ्य सेवाओं संबंधी प्रबंध तुरंत शुरू हो जाता है। यदि लोगों को समाचार नहीं मिलता तो कितनी हानि होती।

समाचार-पत्रों में प्रत्येक वर्ग के पाठकों का ध्यान रखा जाता है। नौकरी के लिए रिक्त-सीान का विज्ञापन छपता है। बेरोजगार लोगों को इसका लाभ मिलता है। व्यापारी विज्ञापन छपवाकर अपने माल और मूल्य को घर-घर पहुँचा देते हैं अर्थात बाजार समाचार-पत्र के जरिए हम तक हम तक आसानी से पहुँच जाता है।

समाचार-पत्रों में ज्ञान-विज्ञान की नई जानकारी हमारे ज्ञान को विकसित करती है। इनमें मनोरंजन की सामग्री भी प्रकाशित होती है। बाल साहित्य, नारी-जगत, खेल-संसार, संस्कृति-समाचार और दिल्ली में होने वाले दैनिक कार्यक्रमों का प्रकाशन लाभ नहीं है तो क्या है ? ताजा राजनीतिक घटनाओं पर अच्छे लेख लिते हैं। पाठकों के पत्र भी लाभप्रद सामग्री प्रदान करते हैं।

समाचार-पत्र समाचारों की जानकारी देता है। दुनिया को एक मंच पर घर-घर खड़ा कर देता है। अनेक पाठकों को उसकी रूचि की सामग्री जुटाता है। विज्ञापनों को लाभ मिलता है। इस सामग्री में विवाद की सामग्री भी होती है। लेकिन इनसे अखबारों का खर्चा चलता है। कुल मिलाकर समाचार-पत्र लाभ ही लाभ देते हैं। एक बात और ये अधिक सामग्री कम कीमत में देते हैं।

नशा सेवन एक सामाजिक कलंक या शराब बंदी

हमारे समाज में नशा सेवन एक सामाजिक बुराई माना गया है जिसके सेवनसे अन्य बुराइयाँ भी स्वत: आ जाती है । जो हमारे आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को नष्ट करती है।

नशा एक ऐसा अभिशाप है जिससे अभी के मनुष्य जाति और हमारे आने वाली हमारी पीढ़ी को खत्म कर देगी । यह एक ऐसा अभिशाप है जिसे हमारा परिवार ही नहीं पूरा समाज खत्म होने के कगार पर आ गया है। आज वर्तमान भारत में ही 30 ऐसी घटनाएँ हैं जो सामाचार में सुनने को मिलता है जो अप्रिय है और उसे सुन कर मनुष्य की आत्मा और रूह दोनों काँप जाती है। आज की भावी पीढ़ी इस कदर दीवानी है कि पश्चिमी सभ्यता की जितनी भी गलत चीजे हैं उन्हें पाने में जरा भी देर नहीं लगती है। इसके सबसे अधिक खतरा हमारे अभी के बच्चे है जिसे

वह एक तरह की फैशन के लिए अपनाते हैं पर वे यह नहीं जानते कि जो वो अभी कर रहे हैं उससे उनके शरीर पर कितना अधिक बुरा प्रभाव पड़ेगा। यदि समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं खोजा गया तो हमारी आने वाली नस्ल पूरी तरह से नष्ट हो जाएगी ।

चरित्र-निर्माण में परिवार की प्रमुख भूमिका होती है। यदि व्यक्ति के माता-पिता चरित्रवान है तो व्यक्ति पर बहुत कुछ असर उसके चरित्र का होता है।

नशावंदी के विरोध मे यह तर्क दिया गया है कि इससे सरकारी आय मे वृद्धि होती है जो कि यह बहुत ही शर्मनाक है। हमारी वर्तमान सरकार इसके लिए बहुत ठोस कदम भी उठाये हैं। जो पैसा पहले नशा पर खर्च होता था आज उसी पैसा से गरीब परिवार के बच्चे अच्छी शिक्षा पाकर, अच्छी पोशाक पहनकर अपने आप पर गर्व महसूस कर रहे हैं जो की हमारे समाज देश सबके लिए गर्व की बात है।

नशा सेवन मनुष्य के चरित्र को खोखला बनाता है साथ ही आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह एक बहुत बड़ी बुराई है, इसका विनाश सरकार के साथ-साथ हमें मिलकर करना चाहिए ताकि हम स्वच्छ समाज के साथ साथ हम सब अपना चरित्र का निर्माण कर सके।

आतंकवाद/आतंकवाद विश्व के लिए खतरा

अपनी इच्छा के अनुसार राजनैतिक बदलाव लाने के लिए जनता, सेना तथा सरकार के विरोध में कुछ भ्रमित लोगों के द्वारा किया जाने वाला काम आतंकवाद कहलाता है। कुछ लोग बलपूर्वक निर्दोष जनता को आतंकित करके सरकार द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति करवाना चाहते हैं। इसके लिए वे जगह-जगह बम-विस्फोट, विमान अपहरण तथा अन्य हिंसापूर्ण कार्य करते हैं, जिससे विवश होकर उनकी माँगों को मान लिया जाए ।

'आतंक' यानी 'भय' और 'आतंकवादी' यानी 'भय फैलाने वाला'। आतंकवादी निर्दोष जनता में बम-विस्फोट, हत्या, अपहरण, धार्मिक मतभेद, तोड़-फोड़ आदि द्वारा भय उत्पन्न करते हैं। केवल हमारे देश में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व में आतंकवाद जहरीले धुएँ की तरह सबका दम घोंट रहा है। इस समय विश्व इस विकराल समस्या से जूझ रहा है।

संपूर्ण विश्व में आतंकवाद मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। अमेरिका, भारत, पाकिस्तान आदि देश आतंकवाद के फंदे से निकलने के लिए छटपटा रहे हैं परंतु यह निरंतर कसता ही जा रहा है। आए दिन समाचार-पत्रों में मुख्य पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में आतंकवादियों के घिनौने कारनामे छपते रहते हैं। दिन का आरंभ इन्हीं भयावह खबरों से होता है। न जाने कितने मासूमों को ये लोग अपने स्वार्थ पर बलि चढ़ा देते हैं। कितने घरों के चिरागों को अकाल मृत्यु की गोद में सुला देते हैं ।

स्वतंत्रता के पश्चात् ही कुछ लोगों ने विदेशी ताकतों के बहकावे में आकर भारत में आतंकवाद का बीज बो दिया था। उसकी जड़े अब संपूर्ण देश में इस तरह फैल चुकी है कि स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गई है। कश्मीर में आतंकवाद अपने भयावह रूप में विद्‌यमान है। वहाँ के

मूल निवासी अब शरणार्थियों की तरह रह रहे हैं। वहाँ हर दिन भय की छाया में निकलता है कि न जाने आज क्या होगा ? कश्मीर, जो धरती का स्वर्ग माना जाता था, वही आज नरक बन गया है। केवल कश्मीर ही नहीं, असम, बंगाल, नागालैंड आदि प्रदेशों को भी आतंकवादियों ने आतंकित कर रखा है। इन सभी प्रदेशों में कानून व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो चुकी है। सेना तथा पुलिस इस महामारी को देश से दूर करने के लिए जी-जान से जुटी है। आतंकवाद को दूर करने के लिए सरकार कई उपाय कर रही है, परंतु जनसाधारण के सहयोग की भी आवश्यकता है। यदि सभी अपने निजी, धार्मिक स्वार्थों और प्रांतीयता को त्यागकर भारतवासी बनकर रहें, तो यह समस्या सदा के लिए समाप्त हो सकती है। कोई भी सच्चा मनुष्य दुसरे मनुष्य को हानि नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि आतंकवाद पशुता है। सभी को एकमत एवं संगठित होकर इस समस्या को विश्व से समाप्त करने में सहयोग देना चाहिए तथा विश्व में शांति और सौहार्द की भावना को स्थापित करना चाहिए। तभी देश और समाज प्रगति की ओर पूर्ण रूप से अग्रसर हो सकेगा।

भ्रष्टाचार / भ्रष्टाचार की समस्या

हमारे समाज में हर स्तर पर फैल रहे भ्रष्टाचार की व्यापकता में निरंतर वृद्‌धि हो रही है। भ्रष्टाचार के विभिन्न रूप-रंग हैं और इसी प्रकार नाम भी अनेक हैं। उदाहरणस्वरूप रिश्वत लेना, मिलावट करना, वस्तुएँ ऊँचे दामों पर बेचना, अधिक लाभ के लिए जमाखोरी करना, स्मगलिंग करना आदि भ्रष्टाचार के अंतर्गत आते हैं। भ्रष्टाचार के बढ़ने की एक बहुत बड़ी वजह हमारी शासन-व्यवस्था की संकल्पविहीनता तो रही ही है, लेकिन हम इस समस्या का ध्यान से विश्लेषण करें तो इसका मूल कारण कुछ ओर ही प्रतीत होता है। वास्तव में मनुष्य के मन में भौतिक सुख-साधनों को पाने की लालसा निरंतर बढ़ती ही जा रही है। लालसा में विस्तार होने के कारण मनुष्य में लोक-लाज तथा परलोक का भय कम हुआ और वह स्वार्थी, अनैतिक और भौतिकवादी हो गया। आज वह विभिन्न प्रकार के भौतिक और उपभोक्ता पदार्थों को एकत्रित करने की अंधी दौड़ में शामिल हो चुका है। इसका फल यह हुआ कि उसका उदार मानवीय आचरण-व्यवहार एकदम पीछे छूट गया है। अब मनुष्य लालचपूर्ण विचारों से ग्रस्त है। वह रात-दिन भ्रष्टाचार के नित-नए तरीके खोज रहा है। खुद को पाक साफ मानने वाले हम सभी आमजन प्राय: भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में सहायक बन जाते हैं। ऐसे में यदि हम ही भ्रष्टाचार के विरूद्‌ध कुछ कहें अथवा उन्हें समाप्त करने की बातें करें तो यह किसी विडंबना से कम नहीं है। भ्रष्टाचार के निवारण के लिए सहज मानवीय चेतनाओं को जगाने, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की रक्षा करने, आत्मसंयम अपनाकर अपनी भौतिक और उपभोक्ता वस्तुओं के प्रति उपेक्षा का भाव विकसित करना आदि भ्रष्टाचार रोकने में सहायक सिद्‌ध हो सकता है। भ्रष्टाचार से व्यक्ति और समाज दोनों की आत्मा मर जाती है। इससे शासन और प्रशासन की नींव कमजोर पड़ जाती है। अत: यदि हम वास्तव में अपने देश, समाज और संपूर्ण मानवता की प्रगति और विकास चाहते हैं तो उसके लिए हमें हर संभव उपाय करके सर्वप्रथम भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना चाहिए, तब ही हम चहुँमुखी विकास और प्रगति के स्वप्न को साकार कर सकेंगे।

बेरोजगारी

इस समय हमारे देश में जितनी समस्याएं हैं, उनमें सबसे बड़ी है- बेरोजगारी की समस्या। इस देश में यह समस्या दिनों दिन विकराल रूप धाारण करती जा रही है। ये तो संसार के प्राय: प्रत्येक देश में यह समस्या न्यूनाधिक रूप में मौजूद है, किन्तु भारतवर्ष में लगभग छह करोड़ व्यक्ति बिल्कुल बेरोजगार है, जो सम्पूर्ण आबादी का लगभग 14-15 प्रतिशत है। देश के स्वतंत्र होने के बाद से हमारी राष्ट्रीय सरकार इस समस्या को सुलझाने का प्रयास कर रहीं है, किन्तु अब तक इस क्षेत्र में आंशिक रूप में ही सफलता मिली है।

बेरोजगारी के भेद : हमारे देश में मुख्यत: तीन प्रकार की बेरोजगारी है-

(क) खेतिहारी की बेरोजगारी, (ख) औद्योगिक बेरोजगारी और (ग) शिक्षितों की बेरोजगारी।

खेतिहारी की बेरोजगारी : जनसंख्या की वृद्धि के कारण खेती पर अत्याधिक दबाव पड़ रहा है। यहाँ की जनसंख्या का केवल 50 प्रतिशत ही खेती पर निर्भर हो सकता है, किन्तु दुर्भाग्य से यहाँ 80 प्रतिशत व्यक्ति खेती पर ही निर्भर है। फलत: अतिरिक्त 20 प्रतिशत बेकार अथवा अर्द्धबेकार है। जिनके पास खेत है अथवा जिनका निर्वाह खेती से हो सकता है, ऐसे लोग भी वर्ष में प्राय: चार महीने बेरोजगार ही रहा करते है।

औद्योगिक बेरोजगारी : बड़े-बड़े उद्योगों में उत्पादन-व्यय के बढ़ने तथा उत्पादित वस्तुओं की कीमतें गिर जाने के कारण मिल मालिकों को मिल मजदूरों की छँटनी करनी पड़ती है। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार 1901 ई॰ में वृहत उद्योगों में लगभग चार करोड़ मजदूर लगे थे जो 1921 ई॰ तक घटते-घटते सिर्फ 3.3 करोड़ रह गये। इस प्रकार 20 वर्षो के अन्दर ही 70 लाख मजदूरों का बेकार हो जाना साधाारण बात नहीं है। तात्पर्य यह है कि बृहत् उद्योगों में छंटनी के कारण भी बेरोजगारी की संख्या में काफी वृद्धि हुई है और औद्योगिक बेरोजगारी खेतिहारी बेकारी से कम भीषण नहीं है।

शिक्षितों की बेरोजगारी : प्रथम महायुद्ध (1914-18) के बाद से शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। द्वितीय महायुद्ध के समय कुछ शिक्षितों को नौकरी मिली, किन्तु युद्ध समाप्त होते ही पुन: वे बेरोजगार हो गये। देश में विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की संख्या तो दिनों-दिन बढ़ रहीं है, किन्तु देश के निर्माण कार्यो में उसी अनुपात में वृद्धि नहीं होने के कारण विश्वविद्यालय से निकले हुये स्नातक बेरोजगार ही बैठे है।

आपका प्रिय पर्व (होली)

होली हिन्दुओं का एक रंगीन पर्व है। इसे फाल्गुन महीने में मनाते है। यह महीना बसंत का अग्रदूत है। उत्सव फाल्गुन के अन्तिम दिन से प्रारम्भ होकर चैत के प्रथम दिन तक चलता है। शक संवत् का प्रारम्भ चैत माह से ही होता है, अत: पर्व को नये वर्ष का उत्सव भी कहा जा सकता है।

इस पर्व के प्रारम्भ के संबंध में अनेक दंत कथा प्रचलित है। उनमें से एक अत्यन्त लोकप्रिय यह है कि हिरण्यकश्यप नामक राक्षस का पुत्र प्रहलाद ईश्वरभक्त था। हिरण्यकश्यप ने उसे मारने की चेष्टा की, पर सफल न हुआ। अन्त में उसने अपनी बहन होलिका को अपनी गोद में प्रहलाद को बैठाकर अग्नि-चिता पर बैठने को कहा। होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि वह आग में नहीं जलेगी, पर जब वह चिता पर बैठी तब जल मरी और प्रहलाद का बाल बाँका न हुआ। होलिका के जलने और प्रहलाद के बच जाने की स्मृति में ही यह पर्व मनाया जाता है। इस तरह यह असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है।

होली के अवसर पर सबों में नया उत्साह आ जाता है। सभी बसंत की खुमारी में डूब जाते है और बूढ़ों में नयी जवानी आ जाती है। लोग एक-दूसरे पर रंग छिड़कते है। और एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाते है। फाल्गुन भर 'फगुआ' गाया जाता है। होली के दिन लोग नये वस्त्र पहनते है। और पकवान बनाकर स्वयं खाते है तथा दूसरों को खिलाते है। इस अवसर पर छोटे-बड़े और जाति-पाँति के बन्धन टूट जाते है। आपस में वैमनस्यता को भूलकर सभी एक-दूसरे के गले मिलते है।

ऐसे सुन्दर पर्व को हमने आज असुन्दर बना दिया है। कुछ मनचले इस दिन अश्लील गाना गाते है और फिर पीकर लड़कियों, औरत को छेड़ते है।

यह राष्ट्रीय एवं सामाजिक पर्व है। इसकी गरिमा को हमें कायम रखना चाहिए।

ईद (ईद-उल-फितर)

जिस तरह होली हिन्दुओं का और क्रिसमस ईसाईयों की हँसी-खुशी व प्रसन्नता का त्योहार है ठीक उसी तरह मुसलमानों की प्रसन्नता और उल्लास का त्योहार ईद है। यह त्योहार सम्पूर्ण इस्लामी जगत् का सर्वाधिाक महत्वपूर्ण त्योहार है। हर मुसलमान इस त्योहार को नियम के साथ मनाते है।

ईद त्योहार का दूसरा नाम ईद-उल-फितर है। ईद का अर्थ 'फिर से' और फितर का अर्थ 'खाना-पीना' होता है। इस तरह ईद का अर्थ 'फिर से खाना पीना' होता है। मुसलमानों का एक महीना रमजान का होता है। रमजान के महीने में इस्लाम धार्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब ने कठोर साधना की थी और इसी महीने में उन्हें कुरान लिखने की प्रेरणा मिली थी। अत: ईद कुरान की वर्षगांठ के रूप में भी मनायी जाती है। महीने भर 'जगात' दी जाती है। इस महीने में वे लोग केवल रात में खाते है। रमजान का महीना पूरा होने पर जिस दिन चाँद दिखता हैं। उसके अगले दिन ईद मनाई जाती है। इस दिन सभी मीठी ईद भी कहते है। इस दिन से सभी रोजा रखनेवाले दिन में भी खाना-पीना शुरू कर देते है। यही ईद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हैं।

ईद की प्रतीक्षा बड़ी ही उत्कंठा से की जाती है। सभी मुसलमान भाई इस अवसर पर नये कपड़े सिलवाते है। ईद के दिन सभी बहुत सुबह उठकर स्नान करके तैयार हो जाते है। और ईदगाह की ओर चल पड़ते हैं। ईदगाह में सामूहिक नमाज अदा की जाती है। सभी लोग बूढ़े-बच्चे मिलकर

खुदा की इबादत करते है। नमाज समाप्त होने पर सभी एक-दूसरे के गले मिलते है और ईद की मुबारकबाद देते है । सारे भेदभाव भुलाकर लोग गले मिलते है।

ईद हमें प्रेम और भाईचारे का संदेश देती है। यह हँसी-खुशी और प्रसन्नता का त्योहार है। इस अवसर पर हिन्दू भी अपने मुसलमान भाईयों को ईद मुबारक कहते है। और मुसलमान अपने हिन्दू भाइयों को मीठी सेवइयाँ खिलाते हैं। इस तरह यह त्योहार न केवल धार्मिक महत्त्व का है, वरन् यह सामाजिक महत्त्व का भी है। यह त्योहार सम्पूर्ण मुस्लिम सम्प्रदाय में नवजीवन का संचार करता है। यह त्योहार कंटकाकीर्ण जीवन में समता एवं समरसता का समावेश करता है। ईद हमें संकीर्ण भावना से ऊपर उठने की सीख देती है।

दुर्गापूजा

हिन्दू ईश्वर की भिन्न-भिन्न शक्तियों की पूजा करते है। दुर्गा पूजा ईश्वर की शक्ति की पूजा है। यह एक बड़ा त्योहार है। यह भारत के हर कोने में मनाया जाता है। स्कूल, कॉलेज तथा दफ्तर इस अवसर पर बन्द हो जाते है।

लोग कहते है कि जब राम लंका के राजा रावण से युद्ध करने के लिए जा रहे थे तब उन्होंने दुर्गा की पूजा रास्ते में की थी। उन्होंने रावण पर विजय पाने की शक्ति की प्राप्ति के लिए यह पूजा की थी। उन्होंने यह पूजा आश्विन महीने में की थी। इसी कारण यह पूजा आश्विन महीने में होती है।

यह पूजा प्रायः आश्विन में होती है। यह चैत में भी होती है। शक्ति की प्राप्ति के लिए और बुराई पर अच्छाई प्राप्त करने के लिए यह त्योहार मनाया जाता हैं।

यह पूजा 10 रोज तक होती है। पहला दिन कलश-स्थापना का दिन कहलाता है और अन्तिम दिन विजयादशमी का दिन कहलाता है। ब्राह्मण शुद्ध मंत्र का जाप करते है। एक मिट्टी का दीपक सर्वदा देवी के समीप जलता रहता है। लोग जाते है और देवी की पूजा खास-खास दिनों में करते है। कुछ साल पहले देवी को प्रसन्न करने के लिए बकरे की बलि दी जाती थी। परन्तु लोग अब अपनी भूल समझने लगे हैं और वे धर्म के नाम पर जीव को बलिदान देने में संकोच करते हैं। गायक भगवान अथवा देवी की प्रशंसा के गीत गाते हैं। अंतिम दिन लोग प्रतिमा को एक नदी के तट पर ले जाते है। जहाँ प्रतिमा का विसर्जन होता है।

बहुत-सी मूर्तियाँ मिट्टी की होती हैं। ये सुन्दर ढंग से सजी होती है। दुर्गा अपने हाथों में शस्त्र धारण किये बीच में बैठती है। उनका एक पैर सिंह पर रहता है और दूसरा पैर एक राक्षस पर। देवी लक्ष्मी और सरस्वती उनके साथ बैठती है। कार्तिक और गणेश भी वहाँ रहते है।

यह एक प्रसिद्ध त्योहार है। यह शक्ति की पूजा है। लोग इसे बड़ी पवित्रता से मनाते हैं। सब लोग एक-दूसरे से मिलते है। वे अपनी शत्रुता भूल जाते है। और मित्र बन जाते है। लड़के आनन्द से इधार-उधार घुमते है। सभी लोग नये कपड़े पहनते है। मिठाई बेचने वाले मिठाई बेचते है और रूपया कमाते है।

यह त्योहार पवित्रता के साथ मनाया जाना चाहिए। पशुवधा नहीं करना चाहिए।

विद्यार्थी और अनुशासन

सृष्टि के रचयिता ने जिस सृष्टि की रचना की है, वह इतनी नियमपूर्वक चलती है कि उसके एक-एक क्षण का परिवर्तन निश्चित समय पर होता है। सूर्य और चन्द्रमा का चमकना, दिन और रात का होना, पेड़-पौधाों पर फल-फूल लगना आदि। ये सब कार्य इतने नियमित और निश्चित समय पर होते हैं। जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है। सृष्टि का समस्त कार्य एक निश्चित नियंत्रण या 'अनुशासन' के अधीन चल रहा है। अनुशासन शब्द का अर्थ ही शासन (आदेश या नियंत्रण चलना है। अनुशासन एक व्यापक तत्त्व है, जो जीवन के सभी क्षेत्रें को अपने में समा लेता है। इसके अभाव में जीवन व्यवस्थित रीति से नहीं चल सकता।

अनुशासन के दो रूप हैं-वाह्य और आन्तरिक शास्त्र, सामाजिक तथा शासकीय नियमों का पालन करना, गुरूजनों के उपदेश और आदेश को मानना वाह्य अनुशासन है। मन की समस्त वृत्तियों पर और इन्द्रियों पर नियंत्रण आन्तरिक अनुशासन है। यह अनुशासन का श्रेष्ठ रूप है। ठीक इसी प्रकार जब मनुष्य नियंत्रित जीवन व्यतीत करता है तो दूसरों के लिए आदर्श व अनुकरणीय बन जाता है। यद्यपि जीवन में पग-पग पर अनुशासन का बड़ा भारी महत्त्व हैं, तथापि विद्यार्थी-जीवन में इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। विद्यार्थी को अपने भावी जीवन के निर्माण की तैयारी करनी होती है, जो बड़ी कठोर साधाना है। इसके लिए विद्यार्थी का अनुशासित जीवन व्यतीत करना अनिवार्य है। अनुशासन में रहनेवाला बालक ही देश का सभ्य नागरिक बन सकता है। और वही स्वयं को अपने परिवार को तथा स्वदेश को उन्नत बनाने में सहयोग दे सकता है।

भारत को प्राचीन ऋषियों और आचार्यो ने जीवन को चार भागों में बाँटा था और इनमें से प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम को जीवन का मूल आधाार माना था। इसमें विद्यार्थी भावी जीवन के निर्माण के लिए कठोर साधना करता था। गुरू का अपना चरित्र बड़ा ही प्रभावशाली और अनुकरणीय होता था। विद्यार्थी उसकी संरक्षण में रहकर पूर्ण अनुशासन से जीवन व्यतीत करना सीखता था। उसका अपने आहार-विहार, परिधान, निद्रा आदि सब पर पूर्ण नियंत्रण रहता था। बालक के मान रूपी हीरे को साधना-मंत्र द्वारा तराशा और चमकाया जाता था, ताकि बड़ा होकर वह समाज को प्रकाश दे सके, उसे उचित मार्ग पर ले जा सके। यही कारण था कि उस समय का विद्यार्थी सच्चरित्र, गुरू में अटूट श्रद्धा रखने वाला और बड़ों की आज्ञा का पालन करने वाला होता था और अपने भावी जीवन में राष्ट्र की उन्नति में महत्त्वपूर्ण योग देता था।

आज समाज का जब चारों ओर से घोर नैतिक पतन हो रहा हैं, उसमें भ्रष्टाचार का बोलबाला है। ऐसी दशा में आन्तरिक अनुशासन और व्यवस्था की कल्पना तभी साकार हो सकेगी, जब हमारे हृदय में परिवर्तन हो और हृदय परिवर्तन का श्रेष्ठ समय विद्यार्थी-जीवन है। विद्यार्थी का मान एक सुन्दर पुष्प है, जिसे साधना रूपी धूप और विचार रूपी जल देकर पूर्ण विकसित करना होता है, ताकि उसकी सुगन्ध से सारा समाज सुगंधित हो जाए। यदि यह पुष्प अनुशासनहीनता के दल में पड़ गया तो निश्चित ही इसकी दुर्गन्ध से सब परेशान हो उठेंगे।

आज छात्रें की अनुशासनहीनता देश के लिए एक ज्वलंत समस्या है। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में उदण्डता दिखाना, शिक्षकों का अपमान करना और परीक्षा में नकल करना और कराना, रोकने पर निरीक्षकों को पीटना या उनकी जान ले लेना, बसों, रेल में बिना टिकट यात्रा करना, छात्राओं के साथ छेड़खानी करना उनकी अनुशासनहीनता के नमूने हैं। अत: विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण के लिए नैतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। देश में वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था अत्यन्त त्रुटिपूर्ण है। छात्र को अपना भविष्य अंधकारमय दिखाई देता है।

बाढ़

इस साल जुलाई महीने में खूब वर्षा हुई। मैं दिल्ली में था। वर्षा का पानी किनारे से आगे बढ़ गया था। वहाँ दृश्य बड़ा भयानक था। सरकारी अधिकारी पानी के बहाव को ध्यान में रख रहे थे। खतरे के बिन्दु तक पानी अभी नहीं पहुँचा था। हमलोगों को मालूम हुआ कि शहर की दक्षिण ओर का बाँध कई स्थानों पर टूट गया था।

पानी बड़े वेग से शहर में प्रवेश कर गया और पानी के चादर की भांति दिखने लगा। नाले जलमग्न थे और नीचे की भूमि में स्थित सड़कें पानी में डूब गयी थी। बहुत-से लोग अपने बच्चों को लिए बाढ़ से अप्रभावित स्थानों पर जा रहे थे। बहुत-से बच्चे पानी के तेज धार में बह गए। ये बच्चे बाढ़-पीड़ितों के रक्षार्थ आए विद्यार्थियों द्वारा बचा लिए गए। बकरे और कुत्ते पानी की लहर का सामना करते हुए दिखाई देते थे। नावें इधर-उधर मनुष्यों को बचाने के लिए चल रही थी। कुछ मकान, जो मिट्टी के बने थे, गिर गये। हमलोगों ने देखा कि एक स्त्री सिर धुन कर रो रही थी और छाती पीट रही थी, क्योंकि उसका एकमात्र लड़का लापता था।

हमलोग एक नाव ले आये और पानी में डुबकी लगाये। भाग्य से मैंने उस लड़के को पकड़ लिया और उसे उसकी माँ की गोद में पहुँचा दिया। वह अपने खोये हुए बच्चें को पाकर खुश हो गई। एक दिन के बाद पानी कम हो गया और शहर साफ हो गया। इसके बाद महामारी का प्रकोप हुआ। सरकार ने सहायता का कार्य किया। लोगों को दवाएँ दी गई।

सरकार एवं जनता को बाढ़-पीड़ितों को सहायता देनी चाहिए।

पर्यावरण अथवा प्रदूषण की समस्या

पर्यावरण का अर्थ- 'पर्यावरण' का शब्दिक अर्थ है-चारों ओर का वातावरण, जिसमें हम लोग सांस लेते है। इसके अंतर्गत वायु, जल, धरती, ध्वनि आदि से युक्त पूरा प्राकृतिक वातावरण आ जाता है। प्रदूषण के कारण आज हमारा सबसे बड़ी समस्या यही है कि जिस पर्यावरण में हमारा जीवन पलता है, वही प्रदूषित होता जा रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण है- अंधाधुंध वैज्ञानिक प्रगति। अधिक उत्पादन की होड़ में हमने अत्यधिक कल कारखाने लगा दिए है। उनके द्वारा उत्पादित रासायनिक कचरा, गंदा जल, धुआँ और मशीनों से उत्पन्न शोर हमारे पर्यावरण के लिए

खतरा बन गये हैं। परमाणु-उर्जा के प्रयोग ने आकाश में व्याप्त ओजोन गैस की परत में छेद कर दिया है। प्रदूषण बढ़ने का दूसरा बड़ा कारण है-जनसंख्या विस्फोट। अत्यधिक जनसंख्या का अन्न-जल-स्थल देने के लिए वनों को काटना आवश्यक हो गया। इससे भी पर्यावरण का संतुलन बिगड़ा। प्रदूषण के कारण-प्रदूषण के अनेक प्रकार है। उनमें कुछ मुख्य प्रदूषण इस प्रकार है-

वायु प्रदूषण- आज महानगरों की वायु पूरी तरह दूषित हो चुके है। तेल से चलने वाले वाहनों और बड़े-बड़े उद्योगों के कारण वायु में विषैले तत्व घुल गये हैं। इनके कारण अनेक असाध्य रोग उत्पन्न होने लगे हैं।

जल प्रदूषण- फैक्टरियों से निकले दूषित कचरों के कारण न केवल नदी-नाले प्रदूषित हुए है, बल्कि भूमि-जल भी दूषित होने लगा है। जिन क्षेत्रों में फैक्टरियाँ अधिक है, वहाँ प्राय: धरती से लाल-काला जल बाहर निकलता है।

ध्वनि प्रदूषण- आज फैक्टरीयों, मशीनों, ध्वनि-विस्तारकों, वाहन और आनंद उत्सवों में इतना अधिक शोर होने लगा है कि लोग बहरे होने लगे है। शोर तनाव को भी बढ़ाता है।

प्रदूषण का निवारण- प्रदूषण की रोकथाम का उपाय लोगों के हाथों में है। इसे जनचेतना से रोका जा सकता है। यद्यपि सरकारें भी जनहित में अनेक उपाय कर रही है।

नारी शिक्षा

आज शिक्षा का महत्त्व संसार में बढ़ गया है। पुरूष शिक्षा ही नहीं अब नारी-शिक्षा भी आवश्यक हो गयी है। नारी और पुरूष इन दो पहिओं पर मनुष्य के परिवार क जिन्दगी चलती है।

शिक्षा नारी के जीवन में क्रमश: अन्तर लाती है। एक शिक्षित माँ बच्चों को शिक्षा भली प्रकार दे सकती है। एक अशिक्षित माँ को शिक्षा देने में कठिनाई होती है।

नारी शिक्षित होने पर परिवार की आमदनी दुगुनी बढ़ जाती है। शहरों का खर्च बढ़ गया है। एक पुरूष कितना कमाएगा। यदि एक नारी भी परिवार में कमाने लगती है, तो गाड़ी आसानी से चल निकलती है।

शिक्षित नारी की राय मानी जाती है। वह परिवार और राष्ट्र के विभिन्न मामलों में अपना मत दे सकती है। शिक्षित नारी दवा का नाम पढ़कर रोगी को दवा देगी।

अब वह जमाना नहीं रहा कि केवल पुरूष ही काम कर सकते हैं। अब नारी भी वे सभी कार्य कर सकती हैं, जो पुरूष करते थे। हवाई जहाज चलाना, सैनिक बनना, शिक्षक बनना इत्यादि दु:साध्य कार्य भी अब नारियाँ आत्मविश्वासपूर्वक कर रही हैं।

अब स्त्रियों के हँसने और पुरूषों के रोने का समय आ गया है। अब स्त्रियों के पढ़ने और पुरूषों के रसोई बनाने का समय आ गया है। शहरों में नारियाँ अब धड़ल्ले से शिक्षा ग्रहण कर रही है। सरोजिनी नायडू, इंदिरा गाँधी, एनी बेसेन्ट, लक्ष्मीबाई, मीराबाई, महादेवी वर्मा, सोनिया

गाँधी, जयललिता और ममता बनर्जी का नाम कौन नहीं जानता ? ये महिलाएँ बहुत मायने में पुरूषों से भी आगे हैं।

आज आवश्यकता है शहरों के साथ-साथ गाँवों की स्त्रियों को भी शिक्षित करने की। शिक्षा मनुष्य को सामंजस्य सिखलाती है। पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ परिवार, समाज और देश-विदेश में अच्छे समाज का उदाहरण पेश कर रही है। अब स्त्रियाँ पैरों की जूती नहीं रह गयी हैं। अब वे-देवी, माँ, सहचरी और प्राण बन गयी है।

टी. वी. : वरदान या अभिशाप

दूरदर्शन के लाभ–भारत जैसे विशाल देश में दूरदर्शन की महत्ता असंदिग्ध है। आज हमारे देश के सामने अनेकानेक समस्याएँ मुँह बाए खड़ी है। दूरदर्शन के माध्यम से उन समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट कर उनके समाधान करने का प्रयत्न किया जा सकता है। ज्ञान-विज्ञान, समाज-शिक्षा तथा खेती-बाड़ी संबंधी विषयों के संबंध में जानकारी देकर लोगों का ज्ञानवर्द्धन किया जा सकता है। देश में मद्यपान के कुप्रभावों, परिवार नियोजन की आवश्यकता, भारतीय जीवन में विविधता रहते हुए भी एकता इत्यादि विषयों पर विभिन्न कार्यक्रम दिखाकर लोगों को अधिक जागरूक बनाया जा सकता है। इस दिशा में हमारा दूरदर्शन अब रूचि लेने लगा है, यह प्रसन्नता का विषय है। दूरदर्शन के द्वारा जनसामान्य को शिक्षित बनाया जा सकता है तथा अपेक्षित कार्यक्रमों के द्वारा जहाँ लोगों का मनोरंजन किया जा सकता है, वहाँ उनके दृष्टिकोण को वैज्ञानिक तथा स्वस्थ बनाया जा सकता है।

हानियाँ–दूरदर्शन के कारण सामाजिक जीवन जड़ हो गया है। लोग दूरदर्शन के कार्यक्रमों के बारे में तो जानते हैं, परंतु अपने पड़ोसी के बारे में नहीं जानते। वहाँ आत्म-सीमितता और अकेलेपन का दोष बढ़ता जा रहा है। दूरदर्शन से एक हानि यह भी है कि यह देखने वाले व्यक्ति को पंगु सा बना देता है।

निष्कर्ष–दूरदर्शन से आत्मसीमितता, जड़ता, पंगुता, अकेलापन आदि दोष बढ़े हैं। कई देशों में दूरदर्शन के कारण अपराध बढ़े हैं। कई देशों में दूरदर्शन के कारण अपराध बढ़े हैं। परंतु इसमें दोष दूरदर्शन का नहीं, कार्यक्रम प्रसारण समिति का है। दूरदर्शन तो हमारे हाथ में एक सशक्त साधन है। जिसके समुचित उपयोग से हम जीवन को और अधिक सुखद, स्वास्थ्य और सुंदर बना सकते हैं।

महँगाई

वर्तमान की अनेक समस्याओं में से एक महत्वपूर्ण समस्या है–महँगाई। वस्तुओं की कीमत का बढ़ते जाना। दूसरे शब्दों में, खरीददार की क्रय-शक्ति का कम होना, उसका गरीब होना। जब से देश स्वतंत्र हुआ है, तब से वस्तुओं की कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं। रोजमर्रा की चीजों में 50 से 150 गुना तक की कीमत-वृद्धि हो चुकी हैं। जो देशी घी 1947 में एक रु. किलो मिलता था, अब 200 रु. किलो मिलता है। आज भी यह वृद्धि होती चली जा रही है।

महँगाई बढ़ने के कारण–बाजार में महँगाई तभी बढ़ती है जबकि माँग अधिक हो, किंतु वस्तुओं की कमी हो जाए। माँग अधिक होने तथा वस्तुओं की कमी होने के भी अनेक कारण हो सकते हैं। दैनिक उपयोग की वस्तुओं में माँग तभी बढ़ती है जबकि जनसंख्या में वृद्धि हो जाए अर्थात् उपभोग करने वाले लोगों की संख्या बढ़ जाए। भारत में स्वतंत्रता के बाद से लेकर आज तक जनसंख्या में तीन गुणा वृद्धि हो चुकी है। इसलिए स्वाभाविक रूप से तीन गुना मुँह और पेट भी बढ़ गए हैं। अत: जब माँग बढ़ी तो महँगाई भी बढ़ी। दूसरे, पहले भारत में गरीबी की रेखा के नीचे वाले लोग अधिक थे। वे दिन में एक बार रूखा-सूखा खाकर पेट भरते थे। परंतु अब ऐसे लोगों की संख्या कम है। अब अधिकतर भारतीय पेट भर अन्न-जल पा रहे हैं। इस कारण भी वस्तुओं की माँग बढ़ी है।

आजादी के बाद से लेकर अब तक वस्तुओं का उत्पादन भी बढ़ा है। पहले 33 करोड़ लोगों के लिए भी गेहूँ पर्याप्त नहीं था। अत: विदेशों से मँगाना पड़ता था। आज हम इतना अन्न उगाते हैं कि विदेशों में निर्यात कर सकते हैं। परंतु बहुत-सी चीजों पर हम विदेशों पर निर्भर हो गए हैं। हमारे देश की एक बड़ी धनराशि पेट्रोल पर व्यय होती है। इसके लिए भारत कुछ नहीं कर पाया। अत: रोज-रोज पेट्रोल का भाव बढ़ता जा रहा है। परिणामस्वरूप हर चीज महँगी होती जा रही है। आज जरूरत है-यातायात के ईंधन को अपने देश में ही विकसित करने की। यदि ऐसा हो गया, तो महँगाई पर काफी हद तक नियंत्रण किया जा सकता है।

कालाबाजारी–महँगाई बढ़ने के कुछ बनावटी कारण भी होते हैं। जैसे–कालाबाजारी बड़े-बड़े व्यापारी और पूँजीपति धन-बल आवश्यक वस्तुओं का भंडारण कर लेते हैं। इससे बाजार में अचानक वस्तुओं की आपूर्ति कम हो जाती है। वस्तुएँ देश में होती हैं, लेकिन बाजार में बिकने नहीं आती। यह बनावटी कमी है। इसके कारण भी वस्तुओं की कीमतें आसमान छूने लगती हैं। सब जानते हैं कि कुछ राजनीतिक व्यापारियों ने प्याज की कमी करके उसकी कीमतें बढ़ा दी थीं। परिणाम यह हुआ कि भारतीय जनता पार्टी दिल्ली सरकार गिर गई थी।

परिणाम–महँगाई बढ़ने का सबसे बड़ा दुष्परिणाम गरीबों और निम्न मध्यवर्ग को होता है। अमीरों के पास पर्याप्त धन होता है। इसलिए उनके जीवन पर विशेष असर नहीं होता। परंतु गरीब लोग वस्तुओं के दाम बढ़ने से विदक जाते हैं। इससे उनका आर्थिक संतुलन बिगड़ जाता है। या तो उन्हें पेट काटना पड़ता है, या बच्चों की पढ़ाई-लिखाई जैसी आवश्यक सुविधा छीन लेनी पड़ती है। परिणामस्वरूप देश का विकास मंद पड़ता है।

उपाय–दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि रोकने के ठीक उपाय किए जाने चाहिए। इसके लिए सरकार को लगातार मूल्य-नियंत्रण करते रहना चाहिए। कालाबाजारी को भी रोका जा सकता है। बाढ़, सूखा जैसी प्राकृतिक विपदा आने पर अगर उत्पादन कम हो गया हो तो उस वस्तु को समय रहते विदेशों से आयात कर लेना चाहिए। इस दिशा में जनता का भी कर्तव्य है कि वह संकट के समय संयम से काम ले। प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने गेहूँ संकट के दिनों में देशवासियों से प्रार्थना की थी कि वे सप्ताह में एक दिन अन्न का त्याग करें, उपवास रखें। आवश्यकता पड़ने पर अपनी जरूरतों को कम करके भी महँगाई को चुनौती दी जा सकती है।

राष्ट्र निर्माण में विद्यार्थियों की भूमिका

किसी भी राष्ट्र की सम्पत्ति उसके विद्यार्थी होते हैं। राष्ट्र युवाओं से ही तो बनता है। युवा ही विद्यार्थी होते हैं। विद्यार्थी को योग्य एवं कर्मनिष्ठ होना चाहिए। उसे राष्ट्र के निर्माण के लिए अपनी भूमिका का चयन करना चाहिए। राष्ट्र विद्यार्थी के सोच एवं उसकी योग्यता पर निर्भर करता है। विद्यार्थी अगर सचरित्रवान होगें तो वह राष्ट्र भी उन्नत एवं महान् होगा ।

आज की विद्यार्थियों पर बहुत बड़ा कर्त्तव्य बोधा होना चाहिए क्योंकि राष्ट्र उन्हीं की ओर निगाहें रखे है। आज का विद्यार्थी राष्ट्र को आगे ले जा सकता है। परन्तु अगर वह पथ भ्रष्ट हो जाये तो राष्ट्र का विनाश भी कर सकता है। क्योंकि राष्ट्र और विद्यार्थी एक-दूसरे के पूरक हैं राष्ट्र के बिना स्वतंत्र शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती है। और बिना विद्यार्थी के राट्र की उन्नती की कल्पना भी बेकार है। राष्ट्र निर्माण में विद्यार्थियों ने हमेशा अपनी भूमिका निभाई है। हमने यह देखा है कि राष्ट्र तभी उन्नत हुआ है जब विद्यार्थी ने आगे बढ़-चढ़कर भाग लिया है।

इंटरनेट और छात्र

इंटरनेट विज्ञान का वह अद्‌भूत अविष्कार है। जिसमें मानव जीवन को आनन्दपूर्वक जीने के लिए उसका मनोरंजन करता है। इंटरनेट का मनुष्य ज्ञान-विज्ञान एवं जीवन के मनोरंजन छवि का दर्शन पाता है। इंटरनेट के कारण ही हम दुनिया भर की जानकारी पल भर मे प्राप्त कर पाते हैं। इंटरनेट में हमें दुनिया के हर कोने से जोड़ दिया है। इंटरनेट न सिर्फ मनोरंजन ही कराता है। वरन् हमें जीवन के महत्व कोबनाता है। इंटरनेट पर कर्द तरह के प्रोग्राम हम देख सकते हैं।

परन्तु आज इंटरनेट अपने महत्व को खो रहा है। इंटरनेट पर अश्लिल फिल्में अफवाहें एवं अन्य बुरी चीजों का प्रदर्शन धरल्लें से किया जा रहा है। मार-धार हिंसा गन्दगी युवाओं को पथ भ्रष्ट कर रही है। आज का युवा दूरदर्शन से लाभान्वित होने की जगह बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि इंटरनेट राष्ट्र निर्माण संबंधी कार्यक्रमों का प्रसारण करें। युवाओं का स्वस्थ मनोरंजन एवं उनका ज्ञानवर्धन ही इंटरनेट का उद्धेश्य होना चाहिए।

इंटरनेट छात्र जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। इसके माध्यम से किसी प्रतियोगिता परीक्षा का फॉर्म भरना हो या उसका प्रवेश पत्त निकालना हो या रिजल्अ जानना हो ।

ऐसे समय में छात्रों का दायित्व बनता है कि इनका उपयोग आवश्यकता पड़ने पर ही कर तथा खेलने के लिए कदापि न करे ।

सांप्रदायिक एकता की आवश्यकता

संकेत-बिंदु–सांप्रदायिक एकता से तात्पर्य, सांप्रदायिक द्वेष का कारण, सांप्रदायिकता से उत्पन्न समस्याएँ, सांप्रदायिक एकता के लिए कठिन परिश्रम ।

आजकल हमारे देश के सामने ज्वलंत समस्या है–भारत की अखंडता । हर कोई इसी का राग आलापता रहता है । वास्तविकता यह है कि इस दिशा में कोई भी काम नहीं हुआ है, जो भारत की अखंडता का नारा लगाते हैं, भाषण देते हैं, वे उन्हें कार्यान्वित करके व्यवहार में लाने की कोशिश नहीं करते । भारत की अखंडता और एकता को हम बहुत तरीकों से बनाए रख सकते हैं। आजकल देश के हर भाग में सांप्रदायिक दंगे उभरते नजर आ रहे हैं। गैर-सामाजिक व्यक्ति, जिनमें बेरहम और बेदर्द राजनीतिज्ञ भी शामिल हैं, सामाजिक द्वेष और वैमनस्यता को उभारकर दंगे फसाद खड़े करेक अपना मुनाफा करते हैं । वे न दूसरों की जान-माल की परवाह करते हैं, न देश के गौरव और भलाई की । अगर किसी की चिंता करते हैं तो अपनी स्वयं की भलाई व उन्नति की । उदाहरण के लिए फैक्ट्रियों के मजदूरों को ही ले लीजिए । उनके परिश्रम के अनुसार उन्हें संतोषजनक न वेतन मिलता है, न बोनस और न ही सुविधाएँ । ये मजदूर व्यवस्थापकों का ध्यान अपनी असुविधाओं की ओर आकृष्ट करने के लिए हड़ताल करते हैं, लेकिन होता क्या है। कुछ खुदरारजी लोग इस हड़ताल के असली कारण को भुलाकर व्यवस्थापकों के इस तरह के व्यवहार के पीछे सामाजिक या सांप्रदायिक द्वेष होने का भ्रम पैदा करते हैं ।

आत्मनिर्भरता

आत्मनिर्भरता दो शब्दों के मेल से बना है । आत्म + निर्भरता; अर्थात अपने आप निर्भर रहने का गुण । दूसरों की सहायता पर अपना जीवन निर्भर रख सकते हैं किंतु यह आत्मनिर्भरता नहीं है । अपने जीवन को अपने पैरों पर खड़ा करना स्वावलंबन है । अपने साधन से जीवन जीना आत्मनिर्भरता है । कहते हैं भगवान की उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं ।

आत्मनिर्भरता के लिए व्यक्ति में आत्मविश्वास होना चाहिए । बड़े से बड़े काम को हम लगन और विश्वास से सफलतापूर्वक कर सकते हैं । यदि हमारे मन में विश्वास कमजोर है । हम सोचते है। कि यह काम हमारे वश का नहीं है । काम करने में मन नहीं रमता तो निश्चय समझिए हम अपने काम में कभी सफल नहीं हो सकते । आत्मविश्वास होने पर व्यक्ति तूफानी नदी में कूद पड़ता है और नदी पार जा पहुँचता है । ऐसे व्यक्ति आत्मनिर्भर होते हैं । वे कभी पराजय का मुँह नहीं देखते ।

व्यक्ति के सामने जब कोई कठिन काम आता है । उस काम को स्वयं करने का निर्णय लेना चाहिए । व्यक्ति दूसरों के भरोसे रहेगा तो विफल ही रहेगा । आलसी व्यक्ति अपने जीवन में क्यों असफल होता है क्योंकि वह भाग्य भरोसे बैठा रहता है । या अपनी किस्मत को कोसता है । सफल व्यक्ति वह होता है, जो किसी काम को छोटा या बड़ा नहीं मानता । यानी किसी काम को सफल अथवा कठिन नहीं समझता । वह काम को काम मानता है । वह समझता है कि स्वयं परिश्रम करके इस कार्य को कर सकूँगा । इसे इसमें न शंका होती है न बेचैनी । यही सच्ची लगन है जो जीवन में आत्मनिर्भरता ला देती है । प्रत्येक कार्य चुटकी बजाते नहीं हो जाता

उसमें रुकावटें आती है। काम बनते-बनते बिगड़ने लगता है। इससे व्यक्ति में निराशा आना स्वभाविक हो सकता है। लेकिन यह आत्मनिर्भरता का विरोधी लक्षण है। काम बिगड़ा है। फिर बना रखेंगे। आशावान होना आत्मनिर्भरता का गुण है।

कोरोना टीकाकरण अभियान

कोरोना एक जानलेवा बीमारी है जो पूरी दुनिया में फैली चुकी है। इस बीमारी से लोग मर रहे हैं। शायद यह कभी खत्म नहीं होनेवाली संक्रामक बीमारी है, इसलिए इससे मुक्ति के लिए टीकाकरण ही एकमात्र कामयाब रास्ता है।

अभी भी भारतवर्ष से कोरोना पूर्णतः खत्म नहीं हुआ है। 200-300 के बीच प्रतिदिन कोरोना ग्रस्त लोगों की मृत्यु हो रही है। बड़े-बड़े नगर-महानगर इससे आक्रांत हो रहे हैं। घनी आबादी वाले जगहों पर कुछ-कुछ लोग अभी भी प्रतिदिन मर रहे हैं। बाजार खुल गए हैं। बाजारों में भीड़ बड़ गई है। सामाजिक दूरी का निर्वाह नहीं हो रहा है। शादी विवाह और जन्मदिन मनाने के कारण भीड़ बढ़ गई है।

अब इस संक्रामक वायरल बीमारी को रोकने के लिए करोना टीकाकरण अभियान चलाने की आवश्यकता है। टीकाकरण दो बार करवाना होता है। एक बार एवं दूसरी बार 28-80 दिन के बाद सभी देश वासियों को इस टीकाकरण अभियान को सफल बनाना होगा। इससे हम सबका और देश का कल्याण हो सकेगा।

❍❍❍